चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 107, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 16 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

डीके शिवकुमार ने दिल्ली जाना कैंसिल किया; रिपोर्ट देने खड़गे के घर पहुंचे ऑब्जर्वर्स

कर्नाटक में सीएम का ऐलान आज संभव

बेंगलुरुः कर्नाटक का मुख्यमंत्री कौन होगा, इसका ऐलान मंगलवार को किया जा सकता है। इसके लिए पार्टी हाईकमान ने सीएम पद के बड़े उम्मीदवारों- सिद्धारमैया और डीके शिवकुमार को दिल्ली बुलाया। सिद्धारमैया दिल्ली पहुंच चुके हैं, वहीं डीके शिवकुमार ने कहा है कि वे पेट में इन्फेक्शन होने की वजह से आज दिल्ली नहीं जाएंगे। डीके ने कहा कि कांग्रेस के पास 135 विधायक हैं, लेकिन मेरे पास एक भी विधायक नहीं है। मैंने फैसला कांग्रेस हाईकमान पर छोड़ दिया है। इससे पहले शिवकुमार ने कहा था- मैं सिंगल मैन मेजॉरिटी हूं। मैं मानता हूं एक व्यक्ति साहस होने पर मेजॉरिटी बन जाता है। उधर, बेंगलुरु में विधायकों की राय जानकर आए ऑब्जर्वर सुशील कुमार शिंदे, भंवर जितेंद्र सिंह और

दीपक बावरिया अपनी रिपोर्ट देने के लिए अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के घर पहुंच गए हैं। इन्होंने रविवार देर रात तक बेंगलुरु में विधायकों से बातचीत कर उनकी राय जानी थी।

डीके बोले- पार्टी ने मेरी अध्यक्षता में 135 सीटें जीतीं: डीके शिवकुमार ने मीडिया से कहा कि पार्टी ने मेरी अध्यक्षता में 135 सीटें जीतीं। जब हमारे विधायकों के पार्टी छोड़ने के बाद सरकार गिर गई थी, तब भी मैंने हिम्मत नहीं हारी। पिछले 5 साल में क्या हुआ, यह मैं नहीं बताऊंगा। इससे पहले उन्होंने कहा था कि मुझे जो काम सौंपा गया था, वो मैंने पूरा कर दिया है। मुझे नहीं पता, जन्मदिन पर हाईकमान मुझे क्या तोहफा देगा। कर्नाटक के लोग पहले ही हमें नंबर्स दे चुके हैं। कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने सोमवार दोपहर को कहा कि ऑब्जर्वर्स रात तक अपनी रिपोर्ट पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को सौंपेंगे। कल कांग्रेस अध्यक्ष, कांग्रेस महासचिव (संगठन) के साथ मिलकर सीएम चुनने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। बेंगलुरु में ऑब्जर्वर्स ने विधायक दल की बैठक के दौरान एमएलए से 4-5 घंटे तक बातचीत की।

मानव उद्धार की कथा है श्रीमद्भागवत महापुराण : योगी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा पांच हजार वर्षों से मानव के उद्धार व मुक्ति की कथा बनकर सनातन संस्कृति को अनुप्राणित कर रही है। इस कथा का श्रवण जिस भाव से किया जाता है, सुनने वाले को उसी के अनुसार रस प्राप्त होता है। यह हमें गौरवशाली अतीत का एहसास कराने वाली कथा भी है। श्रीमद्भागवत की कथा के श्रवण का सौभाग्य प्राप्त होना दुर्लभ क्षण है। मुख्यमंत्री योगी सोमवार को गोरखनाथ मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में सप्त दिवसीय श्रीमद्भागवत महापुराण

कथा ज्ञानयज्ञ के शुभारंभ पर कथाव्यास व अन्य संतजनों का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

21 मई तक चलने वाली इस कथा का आयोजन मंदिर परिसर में बने नौ नवीन मंदिरों में देव विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। प्रथम दिन की कथा प्रारंभ के पूर्व मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने व्यासपीठ की पूजा करने के बाद कहा कि वेद, पुराण, उपनिषद हमारी हजारों वर्षों की धाती को समेटे हुए हैं। ये पवित्र ग्रंथ जीवन के यथार्थ का ज्ञान कराते हुए हमें सदमार्ग की ओर ले जाते हैं। श्रीमद्भागवत की कथा से आनंद प्राप्ति के साथ ज्ञानवर्धन भी होता है।

पीएम मोदी 71 हजार नियुक्ति-पत्र प्रदान करेंगे

मंगलवार को वाराणसी सहित देशभर में 45 स्थानों पर मेले का आयोजन

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 16 मई मंगलवार को पूर्वाह्न साढ़े दस बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये रोजगार मेले में सरकारी विभागों में नव-नियुक्त युवाओं के बीच 71 हजार नियुक्ति-पत्र वितरित करेंगे। प्रधानमंत्री इस अवसर पर इन युवाओं को सम्बोधित भी करेंगे। रोजगार मेले का आयोजन वाराणसी सहित देशभर में 45 स्थानों पर किया जायेगा। वाराणसी में डाक विभाग के तत्वावधान में बरेका स्थित सिनेमा क्लब में रोजगार मेले का आयोजन होगा। इसमें विभिन्न सरकारी विभागों के नव नियुक्त युवा अभ्यर्थी शामिल होंगे। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडेय, कैबिनेट मंत्री मौजूद रहेंगे। इस आयोजन के नोडल अधिकारी वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव होंगे। भारतीय डाक विभाग के अलावा भारतीय रेलवे, सीआरपीएफ सहित अन्य विभाग इसमें शामिल होंगे। उल्लेखनीय है कि रोजगार मेले में भर्तियाँ इस पहल को समर्थन देने वाले केंद्रीय सरकारी विभागों और राज्य सरकारों, केंद्र शासित क्षेत्रों में की जा रही हैं। देश भर से चयनित नव-नियुक्तों को ग्रामीण डाक सेवक, डाक सहायक, डाक निरीक्षक, वाणिज्यिक व टिकट लिपिक, कनिष्ठ लिपिक व टंकक, कनिष्ठ खाता लिपिक, ट्रैक मेनटेनर, सहायक सेक्शन अधिकारी, अवर श्रेणी लिपिक, उपमंडलाधिकारी, कर सहायक।

दिल्ली बोर्ड ने घोषित किए 10वीं-12वीं के नतीजे

नई दिल्ली: केजरीवाल सरकार के दिल्ली बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन ने सोमवार को 10वीं और 12वीं के अपने पहले साल के रिजल्ट की घोषणा की। शिक्षा मंत्री आतिशी ने प्रेस वार्ता के माध्यम से इसकी जानकारी दी। डीबीएसई की 10वीं और 12वीं की परीक्षा में छात्रों ने शानदार प्रदर्शन किया। 10वीं का रिजल्ट 99.49 प्रतिशत और 12वीं का रिजल्ट 99.25 प्रतिशत रहा। इस मौके पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि एक नए प्रयोग के साथ दिल्ली सरकार ने अपने स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस में डीबीएसई के तहत पढ़ाई शुरू कराई। दुनिया के नामी आईबी बोर्ड के साथ मिलकर उनका सिलेबस तैयार कराया। आज दिल्ली स्कूल शिक्षा बोर्ड के ये बेहतरीन नतीजे ये साबित करते हैं कि हम सही दिशा में काम कर रहे हैं। सभी बच्चों के साथ दिल्ली की टीम एजुकेशन को बहुत-बहुत बधाई। बच्चों को विश्व स्तरीय शिक्षा देने के साथ हमें उन्हें एक कामयाब इंसान बनाना है। प्रेस वार्ता में शिक्षा मंत्री ने कहा कि, आज भारत की शिक्षा व्यवस्था के लिए एक बड़ा दिन है। दिल्ली बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन अपना पहला 10वीं और 12वीं का रिजल्ट जारी कर रही है। ये देश की शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाने का दिन है। उन्होंने कहा कि आज जितने भी विकसित देश है उन्होंने पिछले 50-100 सालों से अपने देश के हर बच्चे को विश्वस्तरीय शिक्षा मुहैया करवाई है चाहे वो अमीर परिवार से आते हो या गरीब परिवार से आते हो। उन्होंने कहा कि, पिछले 5 साल

से दिल्ली सरकार के स्कूलों के सीबीएसई 12वीं बोर्ड के नतीजे प्राइवेट स्कूलों से बेहतर आए है। 2018 से अबतक हर साल दिल्ली सरकार के स्कूलों का रिजल्ट 90 प्रतिशत से ज्यादा आया है। इस साल भी जब सीबीएसई का 12 का रिजल्ट आया है तो दिल्ली सरकार के स्कूलों का रिजल्ट न सिर्फ नेशनल एवरेज से ज्यादा है बल्कि देशभर के प्राइवेट स्कूलों से भी बेहतर है। देशभर के प्राइवेट स्कूलों का रिजल्ट 87.95 आया वही दिल्ली सरकार के स्कूलों का रिजल्ट 91.59 प्रतिशत रहा है जो प्राइवेट स्कूलों से कही बेहतर है। शिक्षा मंत्री आतिशी कहा कि, इस साल डीबीएसई की 10वीं की परीक्षा में 1582 व 12वीं की परीक्षा में 667 विद्यार्थी शामिल हुए। 10वीं की परीक्षा में सभी छात्रों के पास 6 फाउंडेशनल विषय थे। इसमें हिंदी,अंग्रेजी, गणित,विज्ञान, सामाजिक विज्ञान व एंत्रप्रोन्योरियल माइंडसेट एंड डिजिटल डिजाईन शामिल है। साथ ही स्पेशलाइज्ड विषयों के रूप में 6 फाउंडेशनल विषय के अलावा डीबीएसई ने कई अन्य स्पेशलाइज्ड विषयों की परीक्षा भी ली। इन विषयों के तहत ह्यूमैनिटीज के विद्यार्थियों ने वर्ल्ड ऑफ वर्क, सिस्टम एंड सोसाइटीज, हाई-एंड 21२३ सेंचुरी के विद्यार्थियों ने एडवांस टेक्नोलॉजी, डिजाईन एंड कॉमर्स,स्टेम के विद्यार्थियों ने एडवांस्ड मैथ्स व एडवांस्ड साइंस व परफोर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स के विद्यार्थियों ने मीडिया,क्रिएटिव राइटिंग-क्रिएटिव एक्सप्रेशन की परीक्षा दी।

उत्तर प्रदेश में डेंगू से होने वाली मृत्यु दर में आयी भारी कमी

लखनऊ। योगी आदित्यनाथ सरकार और स्वास्थ्य विभाग के प्रयासों से उत्तर प्रदेश में जहां मच्छरजनित रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ी है, वहीं डेंगू जैसी बीमारी से होने वाली मृत्यु दर में भारी कमी आयी है। वेक्टरजनित रोग (वीबीडी) के निदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने हिन्दुस्थान समाचार को बताया कि प्रदेश में डेंगू से होने वाली मृत्यु दर एक फीसद से भी नीचे आ गई है। वर्ष 2011 में 3.2 फीसद थी। पांच साल बाद 2016 में मृत्यु दर घटकर 0.28 फीसद

और 2018 में 0.10 फीसद आ गई। हालांकि वर्ष में 2019 में इसमें कुछ बढ़त दिखी। लेकिन वर्ष 2022 में वापस घटकर यह 0.17 फीसद पर आ गई। डॉ.ए.के. सिंह ने बताया कि सामान्यतः यह बीमारी मानसून या उसके बाद के महीनों में फैलती है।

समर्थन के लिए धरने पर बैठे पहलवानों ने जारी किया फोन नंबर

नई दिल्ली। भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ पहलवानों के धरना प्रदर्शन का सोमवार को 23वां दिन है। आज पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक, भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर रावण और पूर्व केंद्रीय मंत्री भाजपा नेता चौधरी वीरेंद्र सिंह ने जंतर-मंतर पहुंचकर पहलवानों से मुलाकात की। वहीं पहलवानों ने प्रेस वार्ता कर लोगों से समर्थन मांगने के लिए एक नंबर जारी किया है। पहलवानों ने बताया कि सोमवार से एक नए अभियान की शुरूआत दिल्ली के कनाट प्लेस से करने वाले हैं।

केवट समाज की उन्नति में नहीं छोड़ी जाएगी कोई कसर : शिवराज

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि भगवान श्रीराम और मैया सीता को निषादराज केवट ने गंगा पार लगाया था। केवट की श्रीराम के प्रति असीम श्रद्धा और भक्ति थी। निषादराज भारतीय समाज के लिए भगवान से कम नहीं है। केवट समाज सरल, मेहनती और साहसी समाज है। केवट समाज ने आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों को धूल चटा दी थी। उन्होंने कहा कि केवट समाज की प्रगति विकास और उन्नति में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। मिलकर सब साथ चलेंगे। पूरी ताकत से आगे बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री चौहान सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर केवट जयंती कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, मछुआ कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष सीताराम बाथम, पिंटू केवट, राकेश बाथम, प्रेमलाल वर्मन, राजू बाथम, महेश केवट सहित अन्य पदाधिकारी और समाज के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शासकीय तालाब और जल-संरचनाओं पर पहला हक मछुआरों का है। दबंगों से तालाबों का कब्जा वापस लेकर मछुआरों को दिया जाएगा। प्रदेश में अभियान चला कर केवट समाज को कब्जा देने का कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि समिति बना कर शासकीय सेवा के लिए जाति प्रमाण-पत्र की विसंगति दूर करेंगे।

शासकीय सेवा में जो कर्मचारी हैं, उन्हें सेवा से बाहर नहीं किया जाएगा। जहाँ केवट समाज की बहुलता है वहाँ निषादराज स्मारक, भवन बनाएंगे एवं मूर्तियाँ लगाई जाएंगी।

अडानी-हिंडनबर्ग मामले पर सुप्रीम कोर्ट 16 मई को करेगा सुनवाई

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अडानी-हिंडनबर्ग मामले पर आज सुनवाई टाल दी है। चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने इस मामले पर कल यानी 16 मई को सुनवाई का आदेश दिया।

सुनवाई के पहले इस मामले पर सेबी ने सुप्रीम कोर्ट में जवाब दाखिल कर कहा कि ये आरोप निराधार है कि सेबी 2016 से अडानी ग्रुप के खिलाफ जांच कर रहा है। याचिकाकर्ता जिस जांच का हवाला दे रहे हैं, वो दरअसल 51 भारतीय कंपनियों को जारी ग्लोबल डिपॉजिट रसीदों (जीडीआर) के बारे में थी। इनमें

कोई भी अडानी ग्रुप की कंपनी शामिल नहीं है। सेबी का कहना है कि हिंडनबर्ग रिपोर्ट में जिन 12 संदेहास्पद लेन-देन का जिक्र हुआ है। वो काफी जटिल हैं और वो दुनिया के कई देशों से जुड़ी है। उन लेनदेन से जुड़े आंकड़ों की जांच करने में काफी समय लगेगा। ऐसे में जांच के लिए 6 महीने का समय मांगने के पीछे उद्देश्य निवेशकों और सिक्योरिटी मार्केट के साथ न्याय किया जा सके। सुनवाई के दौरान 12 मई को सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि सेबी को अडानी-हिंडनबर्ग मामले की जांच पूरी करने के लिए अनिश्चितकाल का समय नहीं दिया सकता है।

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा था कि वो सेबी को और छह महीने का समय नहीं दे सकती है। सुनवाई के दौरान सेबी की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि मामले में किसी भी परिणाम पर पहुंचने तक के लिए कम से कम छह महीने का समय चाहिए होगा।

हेट स्पीच: एफआईआर की मांग पर दिल्ली पुलिस को समय दिया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने हेट स्पीच को लेकर भाजपा नेता अनुराग ठाकुर, प्रवेश वर्मा और कपिल मिश्रा के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की सीपीएम नेता वृंदा करात की मांग वाली याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए दिल्ली पुलिस को समय दे दिया है। जस्टिस केएम जोसेफ की अध्यक्षता वाली बेंच ने मामले की अगली सुनवाई 14 अगस्त को करने का आदेश दिया। आज सुनवाई के दौरान दिल्ली पुलिस ने जवाब दाखिल करने के लिए समय देने की मांग की, जिसे कोर्ट ने मंजूर कर लिया। 17 अप्रैल को कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी किया था। 13 जून, 2022 को दिल्ली हाई कोर्ट ने वृंदा करात की याचिका खारिज कर दी थी।

हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ वृंदा करात से सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि याचिकाकर्ता ने कानून के दूसरे उपलब्ध उपाय का उपयोग नहीं किया। हाई कोर्ट ने कहा था कि ट्रायल कोर्ट ने मामले के गुण-दोष के आधार पर फैसला नहीं किया है बल्कि क्षेत्राधिकार पर विचार किया है।

अभी प्रदेश के 10 सरकारी स्कूलों में शुरू हुआ कार्यक्रम, भविष्य में 40 हजार स्कूलों में होगी व्यवस्था

उप्र में ऑनलाइन ग्रामीण शिक्षा 'पहल' की हुई शुरुआत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से योगी सरकार ने सोमवार को ऑनलाइन ग्रामीण शिक्षा 'पहल' कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। अभी यह व्यवस्था 10 सरकारी स्कूलों में शुरू हुई है, बाद में 40 हजार स्कूलों में यह व्यवस्था प्रारम्भ करने की योजना है। प्रदेश के मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने आज सरोजनीनगर स्थित राजकीय यूपी सैनिक इण्टर कॉलेज से ऑनलाइन ग्रामीण शिक्षा 'पहल' कार्यक्रम का शुभारंभ किया। यह कार्यक्रम माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा आईआईटी कानपुर के सहयोग से तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम के तहत

प्रदेश के 10 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा प्रदान की जायेगी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य सचिव ने कहा कि ऑनलाइन ग्रामीण शिक्षा 'पहल' एक नई और अच्छी शुरूआत है। इन कक्षाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी विज्ञान एवं गणित से सम्बन्धित नवीनतम जानकारियां प्राप्त कर सकेंगे। आने वाले समय में उत्तर प्रदेश देश का ग्रोथ इंजन बनने वाला है, इस ग्रोथ इंजन को ताकत प्रदेश के बच्चे देंगे। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि सरकारी स्कूली बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाए, जिससे छात्र एक स्तम्भ के रूप में देश की अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ाने में अपना योगदान दे सकें। मुख्य सचिव ने बताया कि टेक्नोलॉजी के माध्यम से आज उत्तर प्रदेश में 10 सरकारी स्कूलों में निःशुल्क ऑनलाइन शिक्षा शुरू की गई, आगामी दिनों में 40 हजार स्कूलों में यह व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बीजेपी का हरियाणा में कर्नाटक से भी होगा बुरा हालः भूपेंद्र हुड्डा

रोहतक। पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा का कहना है कि बीजेपी का हरियाणा में कर्नाटक से भी ज्यादा बुरा हाल होगा और हरियाणा में कांग्रेस कर्नाटक से भी बड़ी जीत दर्ज करके सरकार बनाएगी। वे सोमवार को हाथ से हाथ जोड़ो अभियान के तहत ब्राह्मणवास, बसंतपुर, धामड, जसिया, सांघी और कटवाड़ा गांव में पहुंचे थे। गावों में हुड्डा का जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने तमाम गावों में जाकर शहीदों की प्रतिमाओं पर फूल

चढ़ाकर नमन किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि बीजेपी-जेजेपी के खिलाफ आर-पार की लड़ाई शुरू हो चुकी है। इसीलिए वह अपने हलके की जनता से इजाजत और आशीर्वाद लेने आए हैं। उन्होंने बताया कि कांग्रेस बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और कानून व्यवस्था जैसे मुद्दों को लेकर जनता के बीच जा रही है। पार्टी के हाथ से हाथ जोड़ो अभियान से लेकर विपक्ष आपके समक्ष समेत प्रत्येक कार्यक्रम को जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। जनता के मन में यह टीस है कि 2014 से पहले जो हरियाणा प्रति व्यक्ति आय, प्रति व्यक्ति निवेश, रोजगार सृजन, बुजुर्गों, किसानों, खिलाड़ियों के मान-सम्मान, कल्याणकारी योजनाओं और विकास के हर पैमाने पर नंबर वन था।

खबर संक्षेप

मदर्स डे पर बेटियों ने देखी द केरला स्टोरी

प्रयागराज। रविवार को मदर्स डे के मौके पर बेटियों को सिनेमाघर में ह्रद केरला स्टोरीह्व फिल्म दिखाई गई। इखढ महिला मोर्चा की प्रदेश महामंत्री व वात्सल्य हॉस्पिटल की डायरेक्टर डॉ. कीर्तिका अग्रवाल की ओर से यह पहल की गई। उन्होंने एक साथ 150 बेटियों के लिए सिनेमा हॉल बुक करा दिया और उनके साथ बैठकर पूरी फिल्म देखी। कहा, इन बेटियों को यह मूवी दिखाने का उद्देश्य यही रहा कि हमारी बेटियों को कोई बहला फुसलाकर उन्हें ब्लैकमेल न कर सके और हमारी बेटियां अपने परिवार और राष्ट्र के लिए जिम्मेदार बनें। उन्होंने कहा, यूपी में सरकार ने इसे टैक्स फ्री कर दिया है ताकि ज्यादा से ज्यादा मां-बाप इसे देखें और अपनी बेटियों को बचपन से ही सही संस्कार दें।

बेटियों ने लिया संकल्प, मानेंगे मां-बाप की बात : फिल्म देखने के बाद डॉ. कीर्तिका अग्रवाल ने सभी बेटियों को प्रेरित किया। उन्होंने बेटियों को संकल्प दिलाया कि वह किसी के बहकावे में नहीं आएंगी, कोई कितना भी लालच दे, धर्म परिवर्तन के लिए दबाव बनाए, रुपये पैसे देने की बात कहे उससे डरेंगे नहीं और उससे दूर रहेंगी। साथ ही बेटियों ने संकल्प लिया कि यदि उसे कोई जबरन दबाव बनाता है तो वह डरने के बजाय अपने मां-बाप से बताएंगी। सभी ने डॉ. कीर्तिका अग्रवाल को धन्यवाद भी दिया। फिल्म देखकर निकली बेटियों ने जय श्री राम और भारत माता की जय के नारे लगाए भी लगाए।

पेंशन का पैसा पिता से न मिलने पर पुत्र ने की सिर गोदकर नृशंस हत्या

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा थाना क्षेत्र के सिंसई सिपाह गांव में रिटायर्ड शिक्षक की हुई नृशंस हत्या से स्वजनों में मचा कोहराम

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके में रिटायर्ड शिक्षक पिता से पेंशन का पैसा न मिलने पर बीती रात उस के सगे पुत्र ने नोकीले धारदार हथियार से हत्या करके फरार हो गया। सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंच कर खोजी कुत्ता की टीम बुला कर जांच की और शव को कब्जे में लेकर पीएम हेतु भेज। मृतक के स्वजनों में कोहराम मचा हुआ है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सिंसई सिपाह निवासी सूर्य भान सिंह 78 वर्ष पुत्र स्वर्गीय उदय प्रताप सिंह के चार पुत्र दो पुत्रियाँ हैं। सभी की शादी हो गई है। पुत्र अलग अलग रहते हैं। बताया गया है कि सूर्यभान सिंह की पत्नी तारा देवी का स्वर्गवास हो चुका है। सूर्यभान सिंह सोरांव के ग्राम लहटी में प्राथमिक विधालय में प्रधानाचार्य थे। सन 2008 में रिटायर्ड हो गए थे। उन्हें लगभग पैंतीस हजार पेंशन मिलती है। उनके चार पुत्रों में सबसे बडे सत्येंद्र प्रताप सिंह अधिवक्ता हैं गोविंदपुर में मकान बनवा कर सपरिवार रहते हैं। शेष जीतेंद्र प्रताप सिंह प्राइवेट शिक्षक हैं, दुर्गेश प्रताप सिंह सिंसई सिपाह चौराहे पर इलेक्ट्रॉनिक की दुकान है। सबसे छोटे पुत्र नारेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ सुनील के साथ रिटायर्ड शिक्षक पिता सूर्यभान सिंह रहते थे। बताया गया है कि नारेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ सुनील खेती किसानी करता है उनकी पत्नी नीषा सिंह गांव में शिक्षा मित्र हैं। रिटायर्ड शिक्षक सूर्य भान सिंह पेंशन की रकमें नारेन्द्र प्रताप सिंह को देते थे। उन्ही के साथ रह कर भोजन आदि करते थे। बताया गया है कि सूर्य भान सिंह के तीसरे नंबर के पुत्र दुर्गेश प्रताप सिंह उर्फ दिनेश अपनी पुत्रियों की शादी कर चुका है। बताया गया है कि वह अपने पिता से निरंतर पेंशन का पैसा मांगता था। न देने पर कहता था कि वह बेटी की शादी में कर्जदार हो गया है। आप पेंशन हमें दें। इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह ने बताया कि रविवार को पेंशन के पैसों को लेकर दुर्गेश प्रताप सिंह ने अपने वृद्ध पिता से झगड़ा किया था। सूचना पर समझा बुझा कर पुलिस चलीं आयी। बताते हैं कि सूर्यभान सिंह घर के चैनल गेट के पास बरामदे में सोए थे। बीती रात नोंकीले हथियार से सिर पर व चेहरे पर कई वार कर हत्या कर दी। सोमवार को सुबह देख कर परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक सूर्य भान सिंह के सबसे छोटे पुत्र नारेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ सुनील ने सोमवार को सुबह पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम भेज दिया तथा मृतक के सबसे छोटे पुत्र नारेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ सुनील की तहरीर पर पुलिस ने दुर्गेश प्रताप सिंह उर्फ दिनेश के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर फरार आरोपी की पत्नी मनीषा सिंह को महिला कांस्टेबल द्वारा हिरासत में लेकर पूछताछ की जारही है। इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह का कहना है कि जल्द ही आरोपी दुर्गेश प्रताप सिंह उर्फ दिनेश को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। दबिश दी जा रही है। इस संदर्भ में इंस्पेक्टर मऊआइमा सुरेश सिंह ने बताया कि मौके पर डीसीपी अभिषेक भारतीय, एसीपी मनोज सिंह के अलावा डॉग स्क्वायड एंव फोरेंसिक टीम के संदीप कुमार सिंह, योगेंद्र आदि पहुंचे मौके पर डॉग स्क्वायड की टीम का ई मृतक के शव के रक्त को सूंघ कर सीधे दुर्गेश प्रताप सिंह के कमरे के सामने रुक गया। जिससे यह साबित हो रहा है कि अपने सगे पिता की हत्या कर दुर्गेश प्रताप सिंह रात में ही फरार हो गया था।

न्यूज झरोखा

पत्रकारों की समस्याओं के निराकरण हेतु संगठन को मजबूत बनाना जरूरी

लेडियारी। संगठन में शक्ति हैपत्रकारों की समस्याओं के निराकरण के लिए संगठन को मजबूत करना बहुत आवश्यक हैउक्त बातें उदित नारायण पब्लिक स्कूल देई बांध में पत्रकार एसोसिएशन प्रयागराज उ. प्र. की कोरांव तहसील ईकाई द्वारा आयोजित पत्रकार गोष्ठी में संगठन के प्रान्तीय मंत्री धीरेन्द्र शुक्ल ने बतौर मुख्य अतिथि कहीउन्होंने कहा कि आज के परिवेश में पत्रकार को अपनी लेखनी बहुत सोच समझ कर चलानी चाहिऐविवादित खबरों से सदैव सावधान रहने की जरूरत है। उन्होंने गोष्ठी में मौजूद पत्रकारों से संगठन को मजबूत बनाने के लिए प्रत्येक महीने बैठक करने तथा आपस में संवाद स्थापित करने पर भी बल दियो गोष्ठी में संगठन के सभी पत्रकारों को 2023 वर्ष का परिचय पत्र प्रदान किया गयो गोष्ठी में जनेश्वर तिवारी, संजय द्विवेदी, भगवान दास केशरी, अरुण कुमार सिंह,संजय द्विवेदी, राजीव कान्त तिवारी, भुपेंद्र मिश्रा भुपेंद्र तिवारी आदि पत्रकार मौजूद रहे गोष्ठी की अध्यक्षता तहसील अध्यक्ष के के मिश्रा ने किया।

जमीनी विवाद में दबंगों ने महिलाओं को पीटा मुकदमा दर्ज

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के आरा कला गांव में जमीनी विवाद को लेकर ग्राम प्रधान समेत दबंगों ने महिलाओं की जमकर पिटाई कर दी। वहीं लहूलुहान महिलाएं थाने पर पहुंचकर प्रधान समेत अन्य के खिलाफ तहरीर दी। पुलिस ने मारपीट समेत अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर घायल महिलाओं को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया। आरा कला गांव में राजेश प्रजापति और पड़ोस से जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। जिसका न्यायालय में मुकदमा भी विचाराधीन है। सोमवार को विवादित जमीन पर निर्माण को लेकर दोनों पक्ष आपस में भिड़ गए। वहीं जमकर दोनों पक्षों में लाठी-डंडे चले। जिसमें एक पक्ष से आरती देवी पत्नी राजेश प्रजापति,सुरसती पत्नी विनोद, अजमेर पुत्र महावीर को मारपीट में गंभीर चोट आई।लहूलुहान महिला अस्थानीई थाने पर पहुंचकर प्रधान समेत अन्य के खिलाफ तहरीर दी। पुलिस इस मामले में प्रधान समेत तीन पर मारपीट समेत अन्य संगीन धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर मामले की जांच कर रही है।पुलिस ने घायल महिलाओं को इलाज के लिये सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भिजवाया।

मेजा से लापता छात्र चित्रकूट में मिला

मेजा। मेजा थाना क्षेत्र के बंधवा गांव का छात्र दो दिनों पूर्व अचानक लापता हो गया था। जिसे लेकर परिजन काफी परेशान थे। परिजनों ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। लापता छात्र की खोजबीन रिश्तेदारों सहित सम्भावित स्थानों पर किये जाने के बाद भी छात्र का सुराग न लगने से परिजनों का रो रो कर बुरा हाल था। वहीं अचानक छात्र के चित्रकूट में मिलने की सूचना पर परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। परिजनों द्वारा छात्र को घर लाया गया।बंधवा गांव का विवेक पटेल उर्फ विभव पटेल 2 दिनों पूर्व मेजा रोड स्थित बद्रीनाथ तिवारी इंटर कॉलेज के लिए घर से निकला था। लेकिन घर नहीं पहुंचा और वहीं से लापता हो गया। परिजनों के द्वारा हर संभावित स्थानों पर खोजबीन की गई । लेकिन लापता छात्र का कुछ पता नहीं चला। उधर थक हार कर परिजनों ने मेजारोड चौकी पर गुमशुदगी की तहरीर देते हुए छात्र की बरामदगी की गुहार लगाई थी। मेजा कोतवाली में छात्र के गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई गई।वहीं बीती रात लापता छात्र चित्रकूट में पाया रेलवे स्टेशन पर जीआरपी को मिला। जीआरपी ने मेजा पुलिस को सूचना दी। स्थानीय मेजा पुलिस की सूचना पर परिजन चित्रकूट जा पहुंचे और छात्र को देख खुश हो गए। वहीं लिखापढ़ी के बाद जीआरपी ने छात्र को परिजनों को सौंप दिया। छात्र के घर वापसी के बाद परिजनों में खुशी की लहर दौड़ पड़ी।

नए चेयरमैन से लोगों में काफी उम्मीदें....

नव निर्वाचित चेयरमैन के सामने कई चुनौतियां...

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा क्षेत्र शहर का सचिवालय कहे जाने वाला नगर पंचायत के चेरमैन का चुनाव संपन्न हो गया हैं। सिरसा नगर पंचायत से भाजपा के लखन कुमार केशरी उर्फ लखन केशरी को चेयरमैन बनाया गया हैं। नवनिर्वाचित चेयरमैन के सामने की चुनौतियां हैं। गंगा में गंदा पानी जाने से प्रणाली के तहत रोकना, बाजार में पानी की निकासी, टूटी और जर्जर नालियां, स्टील लाईट ,सोलर लाईट, सड़क, शुद्ध पेय जल,स्वच्छता सहित गंगा में पक्का घाट का निर्माण करने की चुनौती हैं। अब नगरपंचायत की सरकार का गठन होने के बाद लोगो को नए चेरमैन से काफी उम्मीदें है। नगरपंचायत सिरसा में 11 बार्ड हैं। करीब 20 हजार के लगभग आवादी नगरपंचायत सिरसा में बसती हैं। 4 मई को नगरपंचायत सिरसा के गठन के लिए चुनाव करवाया गया था। अब पिछले एक माह से चेयरमैन पद को लेकर जोड़तोड़ चल रहा है। 13 मई को नए चेरयमैन के निर्वाचित होने से सिरसा वासियों को विकास कार्य शुरू होने की उम्मीद जगी हैं। सिरसा नगरपंचायत की चुनौतियों के क्रम में पानी की निकासी और गंगा नदी में गंदा पानी जाने से रोकना बड़ी चुनौती हैं। बाजार में नाली सिस्टम पूरी तरह से जाम हैं। नाले गंदगी से पटे हुए है। मानसून सिर पर है। ऐसे में लोगो को बरसात होने पर काफी दिक्कत का सामना करना पड़ेगा। कई नालो का निर्माण कार्य अधर में पड़ा हुआ है। हलकी बरसात होने पर भी बाजार में जल भराव की स्थित पैदा हो जाती हैं। नए चैयरमैन के लिए बिगड़े नाली सिस्टम को पटरी पर लाना एक गम्भीर चुनौती हैं। उपचार का कार्य, बाजार की मुख्य सड़कों पर स्ट्रीट लाइट खराब है। स्ट्रीट लाइट खराब होने से रात के समय अंधेरा छा जाता है। इससे जहां दुर्घटनाएं बढ़ रही है, वहीं आपराधिक वारदातें भी बढ़ रही है। खराब स्ट्रीट लाइटों को ठीक करवाने की मांग कई माह से उठाई जा रही है। लेकिन कोई समाधान नहीं हो रहा है। इसी के साथ सोलर लाइट भी बहुत जरूरी है। बिजली कटौती से शाम को बाजार में अंधेरा छा जाता है, जिससे व्यापारियों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। बाजार में जगह-जगह गंदगी के ढेर लगे हैं। सफाई व्यवस्था एक तरह से चरमराई हुई है। मुख्य सड़कों के आसपास ही गंदगी जमा होने के कारण लोगों को बीमारियां फैलने का डर बना रहता है। बाजार के मुख्य चौक-चौराहों पर भी सफाई व्यवस्था बदहाल है। कई बार इस बारे में बाजारवासियों द्वारा विरोध किया जा चुका है, लेकिन कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अब सफाई कर्मी बाजारों में ही रहेंगे, जिससे सफाई व्यवस्था दुरुस्त रहे। नगर पंचायत के नवनिर्वाचित चेयरमैन विपिन केशरी ने कहा कि बाजार सहित पूरे नगर पंचायत के विकास के लिए कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने सिरसा गंगा घाट पर पक्का घाट बनाने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा कि इससे सिरसा बाजार का व्यापार बढ़ेगा।उन्होंने कहा कि नगर पंचायत गठन के बाद विकास कार्यों की लिस्ट बनाई जाएगी। प्लानिंग के तहत बाजार के सभी वार्डों में समान विकास कार्य करवाए जाएंगे। सभी सभासदों के साथ विकास, नगर को स्वच्छ और सुंदर बनाने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि हम भाजपा का अनुशासित सिपाही हूं और उसी के तर्ज पर सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के साथ कार्य करूंगा। बाजार में जो भी विकास कार्य अधूरे पड़े हुए हैं उन्हें पूरा करवाना पहली प्राथमिकता रहेगी।

करैली में खुले ब्लड बैंक के उद्घाटन के साथ 67 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

अखंड भारत संदेश

रक्तदाताओं व ब्लड डोनेशन करने वाली संस्थाओं को नाज संस्था की ओर से बुके भेंट करने के साथ शॉल व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया

प्रयागराज। नाज सामाजिक संस्था की ओर से करैली में ब्लड बैंक के उद्घाटन को मातृत्व दिवस के रुप में मनाया गया। नाज ब्लड बैंक का उद्घाटन बुजुर्ग महिला ने फीता काट कर किया। ओनर डॉ नाज फात्मा,मैनेजिंग डायरेक्टर अमित यादव डॉ विश्वदीप केसरवानी , डॉ नाज़िम , डॉ ईशान जैदी , डॉ जमशेद अली , डॉ पाण्डेय जी , डॉ हरदीप कौर के साथ ,35 सालों से रक्तदान शिविर संचालित करने वाले इंकेलाबी ब्लड डोनर एसोशिएशन के शाहिद अस्करी ,127 बार ब्लड देकर पुरे उत्तर प्रदेश में ख्याति प्राप्त करने वाले कैप्टन मोहम्मद मेंहदी नकवी ,रवित सचदेवा ,संजीव चावला , यूफोरियल संस्था के देवेश ,फरहान आलम ,अकबर खान ,समाजिक नेता व करैली व्यापार मण्डल के अध्यक्ष शाहिद कमाल खान बब्लू ,मोहम्मद परवेज ,क्रिकेटर अस्करी अब्बास ,शिवम यादव ,सैय्यादैन नकवी ,इब्ने हसन ,जामिन हसन ,शीराज रिजवी ,आसिफ रिजवी आदि रक्तदाताओं का हौसला बढ़ाने को उपस्थित रहे।संस्था के मैनेजर सैय्यद मोहम्मद अस्करी के अनुसार मातृदिवस और नाज ब्लड बैंक के उद्घाटन समारोह में केक भी काटा गया वहीं संस्था की ओर से डाक्टरों ,आशाओं और समाज में ब्लड डोनेट कर इतिहास रचने वालों को बुके भेंट करने के साथ शॉल ओढ़ा कर व मोमेन्टो देकर सम्मानित किया गया।ब्लड डोनेट करने वालों में डॉ नाज फात्मा ,अमित यादव , डॉ जमशेद अली ,डॉ अभिषेक कनौजिया ,इमरान इकबाल अजमली ,विनय कुमार श्रीवास्तव ,जामिन हसन ,दीपक कुमार मालवीय ,विनोद कुमार शुक्ला , मोहम्मद रईस ,कामिल हुसैन ,महशर अली , रजनीश पाण्डेय , दुर्गेश भार्गव , मोहम्मद सुहेल सिद्दीकी , मोहम्मद शाहनवाज ,कुलदीप केसरवानी ,हनीफ शेख , आशीष केसरवानी , विश्वदीप केसरवानी , मोहम्मद फैजान ,शिवम यादव ,अंजू पटेल समेत अन्य दो दर्जन लोगों ने स्वेच्छा से रक्तदान किया।

बसमहुआ, कादीपुर सम्पर्क मार्ग गड्ढे में तब्दील राहगीर परेशान

अखंड भारत संदेश

सहसों। सहसों फाफामऊ मार्ग पर स्थित बसमहुआ गांव से सोपराबारी, कादीपुर संपर्क मार्ग क्षतिग्रस्त हो जाने से राहगीरों को काफी परेशानी का सामना करना पढ़ रहा है। मार्ग पर जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे होने के कारण आए दिन दोपहिया सवार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। जिससे ग्रामीणों में खासा रोष व्याप्त है। जबकि यह संपर्क मार्ग लगभग 2 किलोमीटर तक लोक निर्माण विभाग प्रयागराज के अधीन निर्माण कार्य में आता है। इस संबंध में परेशान ग्रामीणों ने कई बार संबंधित अधिकारियों एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों से लिखित एवं मौखिक शिकायत की है। परंतु सब के सब कान में तेल डालकर बैठे हैं। संपर्क मार्ग विगत कई वर्षों से खस्ताहाल पड़ा हुआ है एक तरफ जहां प्रदेश सरकार का दावा है कि हर मार्ग गड्ढा मुक्त होना चाहिए वहीं लोक निर्माण विभाग प्रयागराज के संबंधित अधिकारी कर्मचारी सरकार के आदेश को ठेंगा दिखाते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठे हुए हैं। जबकि देखा जाए तो यह संपर्क मार्ग हंडिया कोखराज नेशनल हाईवे के सर्विस रोड से भी जुड़ी हुई है। इस संबंध में बसमहुआ गांव निवासी जितेन्द्र कुमार शुक्ला, चिंतामणि शुक्ला, बंटू पांडे, रमाकांत मौर्य, अनुज कुमार मौर्य, पूर्व प्रधान महेश कुमार आदि का कहना है कि कई बार शिकायती पत्र हम लोगों ने लोक निर्माण विभाग के उच्चाधिकारियों एवं क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों को दिया परंतु किसी का ध्यान इस मार्ग पर नहीं हो रहा है। जबकि क्षेत्रीय विधायक के निजी सचिव का भी इसी गांव में निवास है। राहगीर गिट्टी उधड़ी हुई मार्ग पर चलते हुए गिर जा रहे हैं, चोटें लग रही है, यहां तक की आए दिन चोटिल होकर अस्पताल में उपचार हेतु भर्ती हो रहे हैं। इस गड्ढा युक्त एवं खस्ताहाल मार्ग पर चार पहिया, दो पहिया, साइकिल से चलना तो दूर पैदल चलना भी दुश्वार हो रहा है। जिससे ग्रामीण जनता एवं राहगीरों में परेशानियों के साथ काफी रोष व्याप्त है।

कथा श्रवण से मिट जाते हैं जन्म-जन्मांतर के पाप : हृदयनारायण मिश्र

अखंड भारत संदेश

श्रीमद्भागवत कथा के चौथे दिन श्रीकृष्ण और राम के विभिन्न प्रसंग को सुन श्रद्धालु हुए भावविभोर

शंकरगढ़। कलयुग में श्रीमद्भागवत कथा सुनने से जीव को मोक्ष की प्राप्ति होती है, साथ ही जन्म जन्मांतर के पापों का अंत हो जाता है। शंकरगढ़ के ग्राम बड़गड़ी में भागवत कथा का मर्म समझाते हुए कथा वाचक हृदयनारायण मिश्र महराज ने श्रोताओं को श्रीकृष्ण के जन्म और जीवन से जुड़े विभिन्न प्रसंगों का खूब वर्णन किया। बड़गड़ी में आयोजित कथा के चौथे दिन मुख्य यमजान वंश बहादुर सिंह और श्रद्धालुओं को श्रीकृष्ण के जन्म का प्रसंग संजीदगी के साथ सुनाया। कथावाचक ने बताया कि द्वापर युग में भोजवंशी राजा उग्रसेन मथुरा में राज करता था। उग्रसेन की पुत्री देवकी व पुत्र का नाम कंस था। देवकी का विवाह वासुदेव नामक यदुवंशी सरदार से हुआ। एक समय कंस अपनी बहन देवकी को उसकी ससुराल पहुंचाने जा रहा था। उसी समय रास्ते में आकाशवाणी हुई- 'हे कंस, जिस देवकी को तू बड़े प्रेम से ले जा रहा है, उसी में तेरा काल बसता है। इसी के गर्भ से उत्पन्न आठवां बालक तेरा वध करेगा। भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि की घनघोर अंधेरी आधी रात को रोहिणी नक्षत्र में मथुरा के कारागार में वासुदेव की पत्नी देवकी के गर्भ से भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म लेते ही जेल के सभी बंधन टूट गए और भगवान श्रीकृष्ण गोकुल पहुंच गए। यह तिथि उसी शुभ घड़ी की याद दिलाती है और सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है। इस दौरान झांकी प्रस्तुत कर भगवान श्रीकृष्ण का आविर्भाव एवं जन्मोत्सव मनाया गया। कृष्ण जन्म की कथा के पूर्व भगवान राम के अवतार की लीला का वर्णन किया। इसमें कथावाचक हृदयनारायण मिश्र ने बताया कि राजा दशरथ महारानी कौशल्या के घर जन्म हुआ भगवान श्री राम ने मयार्दा स्थापित की और मयार्दा पुरुषोत्तम कहलाए। राम जन्म, ताड़का वध, राम विवाह, वनवास, रावण वध सहित राम राज्याभिषेक पर सुंदर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि द्वापर में जब कंस के अत्याचार बढ़े तो श्री कृष्ण ने अवतार लेकर मुक्ति दिलाई। महराज ने सभी श्रद्धलुओं से कहा, जीवन में सत्संग व शास्त्रों में बताए आदर्शों पर चलने से व्यक्ति का जीवन बदल जाता है। अंत में आरती कर मक्खन मिश्री के प्रसाद का भोग लगाया गया। श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ 12 मई से शुरू था और इसका समापन 19 मई को हवन-पूजन और महाप्रसाद वितरण के साथ किया जाएगा।

10 वर्ष से सड़क की हालत खस्ताहाल गड्ढे से आवागमन बाधित

सिपौवा गांव का मामला, शिकायत के बाद भी ध्यान नहीं दे रहे जनप्रतिनिधि व जिम्मेदार अफसर

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। विकास खंड कोरांव के सिपौवा गांव से सैम्हा व कुकुरहटा गांव को जोड़ने वाले मार्ग की हालत 10 वर्ष से खस्ताहाल है। सड़क पर गड्ढा बना हुआ है जिससे आवागमन बाधित रहता है। उपरोक्त मार्ग के गड्ढे में गर्मी के दिनों में भी पानी भरा हुआ है। हालांकि खेतों की कटाई हो जाने के कारण पानी के बगल से लोग आ जा रहे हैं। बारिश के दिनों में धान की रोपाई के बाद मार्ग पूरी तरीके से अवरुद्ध हो जाता है। गड्ढे में कूदकर लोगों को कपड़े उतार कर अपने-अपने घरों तक जाना पड़ता है। शिकायत के बाद भी स्थानीय जनप्रतिनिधि व जिम्मेदार अफसर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जिससे राहगीरों को आवागमन में काफी कठिनाई हो रही है। उक्त मार्ग का मरम्मतीकरण हो जाने के बाद लगभग आधा दर्जन गांवों का संपर्क जुड़ जाएगा। बारिश के दिनों में लोग अनाज इत्यादि भी अपने घर से दूसरे स्थान तक नहीं ले जा पाते हैं। सड़क का गड्ढा इतना गहरा है कि बारिश के दिनों में लोगों को गले तक पानी में उतरना पड़ता है। इस संदर्भ में खंड विकास अधिकारी मुकेश कुमार से बात करने का प्रयास किया गया लेकिन उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया। गांव के ही किसान अमरपाल सिंह ने बताया कि मार्ग के खस्ताहाल होने व गड्ढे से आवागमन बाधित होने की शिकायत मुख्यमंत्री पोर्टल, स्थानीय विधायक व बीडीओ समेत अन्य जनप्रतिनिधियों से की जा चुकी है। लेकिन अभी तक गड्ढे को पाटने व खस्ताहाल मार्ग के मरम्मतीकरण की किसी ने जहमत नहीं उठाई।सैम्हा गांव के रहने वाले सीजीएल परीक्षा पास कर पीडब्ल्यूडी विभाग में डिविजनल एकाउंटेंट पद पर चयनित हुए छात्र आशीष सिंह ने बताया कि इस मार्ग की हालत बीते 10 वर्ष से यही है। चुनाव के समय में कई जनप्रतिनिधि आए यहां तक कि क्षेत्रीय विधायक राजमणि कोल से मामले की शिकायत के बाद भी अभी तक न तो मार्ग का गड्ढा पाटा गया और न ही खस्ताहाल मार्ग की मरम्मत कराई गई। जिससे राहगीरों को बारिश के दिनों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

परिवारिक कलह से ऊब कर युवक ने लगाई फांसी बेहोशी की हालत में पहुचा अस्पताल

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के सराय अतन उर्फ नौगीरा गांव में परिवारिक कलह से ऊब कर एक युवक फांसी लगा कर झूल गया परिजनों ने जल्द उतार कर बेहोशी की हालत में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले गए जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने स्वरूप रानी रेफर कर दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मऊआइमा के ग्राम सराय अतन उर्फ नौगिरा निवासी मोहम्मद अली 35 वर्ष पुत्र मोहम्मद यासिन परिवारिक कलह से ऊब कर सोमवार को दोपहर में फांसी के फंदे पर झूल गया। परिजनों ने उसे उतार कर बेहोशी की हालत में पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मऊआइमा ले गए। जहां प्राथमिक उपचार के बाद स्वरूप रानी में भर्ती कराया गया है जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। बताते हैं कि मोहम्मद अली महाराष्ट्र के भिवंडी में पावरलूम पर काम करता है । बताते हैं कि जब से वह भिवंडी से घर आया है। तब से किसी न किसी बात को लेकर घरेलू कलह मचा हुआ है। बताया गया है कि इन्हीं सब कारणों से ऊब कर मोहम्मद अली उर्फ लाला ने फांसी लगाई। इस बाबत मऊआइमा पुलिस का कहना है कि उन्हें कोई सूचना नहीं है।

जमीन विवाद में मार पीट पांच के खिलाफ मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। मऊआइमा में जमीनी विवाद को लेकर दबंगो द्वारा घर में घुस कर मार पीट किया गया और जान से मारने की धमकी दी गई। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के कल्याणपुर गांव निवासी बृजेश कुमार पांडेय पुत्र शिवमूरत पांडेय का आरोप है कि उसकी जमीन पर एक राय होकर कतिपय लोग कब्जा करना चाहते थे । मना करने पर घर में घुस कर उसे और परिजनों को मारे पीटे और हत्या की धमकी दिए। बृजेश कुमार पांडेय ने मऊआइमा थाने में तहरीर दी कर सीमा मिश्रा निवासनीय कल्याण पुर तथा उसके रिश्तेदार विद्यया भासकर, कमल मिश्रा, मीरा मिश्रा सभी निवासीगण एल डी ए कालोनी नैनी जमुना नगर के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

खबर संक्षेप

किशोरी का अपहण करने वाले यूवक को पुलिस ने दबोचा, गर्भवती किशोरी बरामद

मऊआइमा। दो माह पूर्व एक किशोरी घर से पन्द्रह हजार और जेवरात को लेकर एक के साथ भाग गई थी। तथा गुजरात में अपने रिश्तेदार के , लेकर युवक रह रहा था जब किशोरी को लेकर प्रतापगढ़ जा रहा तो पुलिस ने दबोच कर युवक को जेल भेज दिया जबकि गर्भवती किशोरी को मेडिकल चेकअप के लिए भेज दिया गया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव गांव निवासिनी एक किशोरी को आते जाते एक युवक अपने मकड जाल में फंसा लिया। तथा किशोरी अपने घर से पन्द्रह हजार रुपये एंव जेवरात लेकर 28 फरवरी को भाग गयी थी। किशोरी की माता ने मऊआइमा थाने में प्रतापगढ़ के सदर कोतवाली गुप्ता टेंट हाउस के पीछे निवासी राहुल कुमार गुप्ता पुत्र कन्हैयालाल गुप्ता के खिलाफ अपहरण का मुकदमा दर्ज करायी थी। किशोरी को प्रतापगढ़ ले जाते समय मऊआइमा में ही दोनों को दबोच लिया। बताया गया है कि किशोरी दो माह की गर्भवती है। जिसे डाक्टरी चेकअप के लिए भेज कर आरोपी युवक राहुल कुमार गुप्ता को अपहरण और दुराचार में पुलिस ने जेल भेज दिया।

दिव्य काशी-प्रयाग दर्शन यात्रा का मंत्री ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर संगम नगरी पहुंचा अंतरराष्ट्रीय वैश्य महा सम्मेलन का 150 सदस्यीय दल

प्रयागराज। वाराणसी में बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर रविवार को संगम नगरी प्रयागराज पहुंचे अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के 150 सदस्यीय दल का उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने भव्य स्वागत किया। देश के करीब 15 राज्यों से आए आईवीएफ के सदस्यों ने मंत्री के साथ गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की पावन धारा में डुबकी लगाकर पुण्य की कामना की। वहीं संगम नगरी की दिव्य आभा देख सभी अभिभूत हुए। दिव्य काशी-प्रयाग दर्शन यात्रा के तहत बाबा विश्वनाथ का दर्शन कर आज संगम नगरी पहुंचे अंतरराष्ट्रीय वैश्य महा सम्मेलन 150 सदस्यीय दल का मंत्री व उनकी पत्नी पूर्व मेयर अभिलाषा गुप्ता द्वारा अभिनंदन किया गया।सभी सदस्यों ने संगम स्नान किया।

मंत्री ने महाकुंभ के लिए किया आमंत्रित

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने मां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती की आराधना की। बंधवा हनुमान जी का दर्शन पूजन किया। मंत्री नंदी ने कहा कि प्रयागराज की आभा ही कुछ ऐसी है जो हर किसी को यहां आने और संगम में डुबकी लगाने के लिए आकर्षित करती है। मंत्री नंदी ने कहा कि 2025 का महाकुंभ और अधिक भव्य, दिव्य और अलौकिक होगा। अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने कहा कि भारत विविधता में एकता का देश है, यही एकता हमारी ताकत है। उन्होंने बताया कि दिव्य काशी प्रयाग दर्शन यात्रा में दक्षिण भारत, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, बंगाल, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा आदि राज्यों के सदस्य एवं पदाधिकारी शामिल हैं। दर्शन यात्रा दल में दिलीप मित्तल, सुशील अग्रवाल, अशोक अग्रवाल, दिनेश मित्तल व अन्य रहे।

ट्रेन से कटकर मां-बेटे की मौत, झगड़ा करते समय दोनों आ गए थे रेल पटरी पर

प्रयागराज। शहर के शिवकुटी इलाके में ट्रेन की चपेट में आने से मां-बेटे की दर्दनाक मौत हो गई। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने आसपास के लोगों ने पूछताछ की। लोगो ने बताया कि मां-बेटे आए दिन मारपीट और झगड़ा करते थे। सोमवार को भी दोनो नशे में धुत होकर मारपीट करते हुए रेल पटरी पर आ गए। इसी समय तेज रफ्तार से गुजर रही ट्रेन की चपेट में आने से दोनो की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। शहर के ममफोर्डगंज लाला की सराय की रहने वाली मीना कुमारी (55) पत्नी पवन कुमार और उसके पुत्र राजेश कुमार की ट्रेन से कटकर मौत हो गई। घटना से परिवार में मातम छा गया। घटना को लेकर लोग स्तब्ध दिखे। बताया जाता है कि मां-बेटे नशे के आदी थे। आए दिन मारपीट और हंगामा करते थे। सोमवार को भी दोनों मारपीट करते हुए रेलवे पटरी पर आ गए। इसी समय गुजर रही ट्रेन की चपेट में आने से दोनों की मत हो गई। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंच गई। शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

बोलोरो गाड़ी से युवक को किया अगवा हत्या का आशंका जता रहे परिजन

मेजा। बोलोरो गाड़ी से युवक को किया अगवा ,हत्या का आशंका जता रहे परिजन। जानकारी अनुसार मेजा थाना अंतर्गत औता हनुमान सहाय का पूरा निवासी उदय बहादुर सिंह का पुत्र प्रदूम सिंह रविवार शाम 9:00 बजे घर पर खाना खा रहा था बाहर तभी बोलेरो सवार पहुंचे युवक को तमंचा सटाकर गाड़ी में भरकर जेरा गांव की तरफ भागने लगे तभी ग्रामीणों ने देखा तो शोर मचाया किसी युवक ने वीडियो भी बना कर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। परिजन हत्या की आशंका जता रहे हैं ।परिजनों द्वारा 112 पीआरबी पर फोन किया गया। सूचना पर 112 पीआरबी मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल कर चली गई। सुबह परिजन मेजा थाना प्रभारी को लिखित तहरीर देकर बच्चे की जान माल की सुरक्षा की गुहार लगाई।

युवक को धारदार हथियार से मारकर किया जख्मी, केस दर्ज

झूंसी। थाना क्षेत्र के चमनगंज बाजार के पास रविवार की रात दबंग युवकों ने दूसरे युवक को घेरकर धारदार हथियार से हमलाकर जमकर पिटाई कर दी। हमले में युवक राजू कुमार यादव निवासी कनिहार गांव के सिर में गंभीर चोट आई है। भुक्तभोगी राजू यादव शादी समारोह से घर लौट रहा था। तभी युवकों ने चमनगंज बाजार के पास उसे घेरकर हमला कर जख्मी कर दिया। आरोपी कलश कुशवाहा और उसके साथियों के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

समतामूलक समाज निर्माण ही शहीदों का सपना था...

सादगीपूर्ण ढंग से मनाई गयी शहीद सुखदेव की 116वीं जयंती

अखंड भारत संदेश

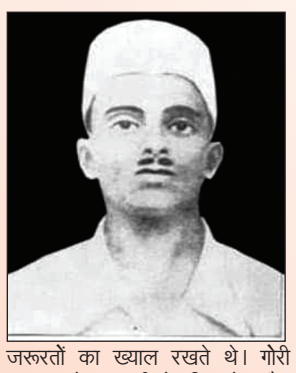

प्रायागराज। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुखदेव एक ऐसा नाम है जो न सिर्फ देशभक्ति बल्कि साहस और कुबार्नी का भी प्रतीक है. 23 मार्च 1931 के दिन सुखदेव अपने दो क्रान्तिकारी साथियों भगतसिंह और राजगुरू के साथ खुशी खुशी फाँसी के तख्ते पर लटककर शहीद होना स्वीकार किया था उक्त बातें प्रबुद्ध फाउंडेशन और डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा) के अध्यक्ष उच्च न्यायालय के अधिवक्ता आईपी रामबृज ने अलोपीबाग स्थित दावा के कार्यालय पर सादगीपूर्ण ढंग से अमर शहीद वीर सुखदेव की 116 वीं जयन्ती मनाते हुये कही। आईपी रामबृज ने आगे बताया कि शहादत के पच्चासी साल बाद भी भारत के ऐसे शहीद भारत की जनता के दिलों में अब भी जिन्दा हैं। भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को अंग्रेजी सरकार ने 23 मार्च 1931 को लाहौर षड़यंत्र केस में फाँसी दी थी। इन वीरों को फाँसी की सजा देकर अंग्रेज सरकार इस मुगालते में थी कि भारत की जनता इस कार्रवाई से डर जायेगी और स्वतंत्रता की भावना को भूलकर विद्रोह नहीं करेगी लेकिन उनके मंसूबों पर पानी फिर गया और इन शहीदों की कुबार्नी ने देश की जनता में आजादी के प्रति ऐसी भावना भर दी कि हजारों देशवासी सर पर कफन बाँधकर अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ जंग में कूद पड़े।उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता शुकदेव राम ने बताया कि सुखदेव का जन्म 15 मई 1907 को लुधियाना में हुआ था। इनके पिता का नाम रामलाल और माता का नाम लल्ली देवी था। तीन वर्ष की आयु में ही पिता का साया सुखदेव के सर से उठ गया। इनका पालन-पोषण इनके ताऊ जी ने किया था। बचपन से ही अंग्रेजी सरकार के जुल्मों को सुखदेव ने देखा था जिसके चलते गुलामी से कराहती जनता को मुक्ति दिलाने के लिए वे क्रांतिकारी बन गये।डा. एसपी सिद्धार्थ ने बताया कि सुखदेव बहुत ही हँसमुख, हाजिरजवाब, जिन्दादिल और यारों के यार थे। वे सदैव अपने कॉमरेडों की जरूरतों का ख्याल रखते थे। गोरी हुकूमत से आजादी के लिए वे सदैव चिन्तित रहते थे। सुखदेव हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचआरए) की दूसरी पीढ़ी तो हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) के पहली पीढ़ी के क्रांतिकारी नेता थे। सुखदेव पार्टी के प्रति सदैव समर्पित रहे और उसूलों के लिए जान की बाजी लगाने में भी नहीं हिचकिचाये रिटा. डिप्टी एसपी बहादुर राम ने बताया कि फाँसी से तीन दिन पहले पंजाब के गवर्नर को लिखे पत्र में सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरू ने यह ऐलान कर दिया था कि युद्ध छिड़ चुका है, यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है। चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति या सर्वथा भारतीय ही क्यों न हों, ये दोनों मिले हुए ङ्क. इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। रिटा. प्रधानाचार्य एलके अहेरवार ने बताया कि शहीद सुखदेव और उनके साथियों के सपनों का समतामूलक समाज बनना अभी बाकी है। इसके लिए मेहनतकश जनता व खासकर नौजवानों को आगे आना होगा। उनके जन्मदिवस पर यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जयन्ती समारोह में रिटा. डिप्टी एसपी बीआर दोहरे, बलवन्त गौतम, भारत सिंह, जीयुत प्रसाद, जीडी गौतम, इ. आरआर गौतम, इ. उमाशंकर मणि, इं. माता प्रसाद, निशा, हिमांशु, प्रियांशु, मनीषा, गायत्री आदि उपस्थित रहे।

मऊआइमा में 8 पुरूष 6 महिलाएं चुने गए सभासद

तबस्सुम शकील-वार्ड 10 आजमपुर पूर्वी (बिना आरक्षण के)

मऊआइमा। मऊआइमा नगर पंचायत में प्रथम पहली बार चौदह सदस्यों में से छह महिलाएं आठ पुरूष सदस्य जीत कर पहुंचे। एक स्थान पर बिना आरक्षण के महिला जीती है। मऊआइमा नगर पंचायत कार्यालय में पहली बार छह महिलाएं आठ पुरूष सदस्य पहुंचे। एक शाहगंज से असगरी बेगम, दो मुस्तफाबाद से सोना देवी, सात पूरे मियां जी उत्तरी से अफरोज जहां, नौ महतवाना से शकीला बानों, बिना आरक्षण के वार्ड दस आजमपुर पूर्वी से दूसरी बार तबस्सुम शकील, शेष आठ सदस्य पुरूष को जनता ने अपना मत दे कर चुन लिया ।

गैंगेस्टर एक्ट कावांछित अभियुक्त किया गया गिरफ्तार

नैनी। कोतवाली पुलिस द्वारा गैंगेस्टर एक्ट का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार किया गया है नैनी प्रभारी निरीक्षक बृजेश सिंह द्वारा गठित की टीम में शामिल रहे उप निरीक्षक जनमेजय कुमार हेड कांस्टेबल विजय लाल कांस्टेबल दीपक कुमार ने आज मुखबिर की सूचना पर घेराबन्दी कर अभियुक्त साहबजादे पुत्र स्व0 शमीम निवासी 60 फिट रोड भारत मार्बल दुकान के पीछे करेली थाना करैली प्रयागराज को सरपतहिया मवैया ढलान के समीप से गिरफ्तार कर कब्जे से 04 अदद अवैध देशी बम बरामद बरामद किया। उल्लेखनीय है कि उक्त अभियुक्त थाना करैली में पंजीकृत मु0अ0सं0 306/2022 धारा 2, 3(1) उ० प्र० गिरोहबन्द समाज विरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधि0 थाना करैली प्रयागराज का वांछित अभियुक्त है। उक्त गिरफ्तारी बरामदगी के सम्बन्ध में थाना नैनी में मु0अ0सं0 244/23 धारा 4/5 विस्फोटक पदार्थ अधि0 पंजीकृत दर्ज करने के बाद अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी।

जूनियर डॉक्टर का पोस्टमॉर्टम हाउस पर हंगामा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। एसआरएन हॉस्पिटल के पोस्टमॉर्टम हाउस में एक जूनियर डॉक्टर के हंगामे का वीडियो सामने आया है। फोरेंसिक मेडिसिन डिपार्टमेंट में तैनात जेआर-3 डॉ. आशीष सिंह ने रविवार को पूरी पोस्टमॉर्टम हाउस के गेट पर ताला लगा दिया। वहां हाईवोल्टेज ड्रामा शुरू कर दिया। बोला- पोस्टमॉर्टम नहीं करने दूंगा। पहले यहां पोस्टमॉर्टम करने वाले डॉक्टर को बुलाया जाए। पोस्टमॉर्टम हाउस के कर्मचारी अंदर ही बैठे रहे।करीब 2 घंटे तक उसने जमकर तांडव किया। सूचना पर रफ्त हॉस्पिटल के स्टॉफ और कोतवाली थाने की पुलिस भी मौके पर पहुंची। पुलिसकर्मियों से भी उसने गाली गलौज किया। एक पुलिसकर्मी को उसने जमकर लताड़ा। बोला- तुम कॉन्स्टेबल हो, भाग जाओ यहां से। तुम्हारी वर्दी का सम्मान कर रहा हूं। पुलिस कर्मी उसे ताला न बंद करने की बात करता है, लेकिन वह गाली गलौज करता रहा।

डॉक्टर की गाड़ी से 2 हजार रुपए चोरी करने का आरोप : पोस्टमॉर्टम हाउस के चीफ फार्मासिस्ट दीप नारायण सिंह और फार्मासिस्ट रणविजय सिंह की ओर से इसकी शिकायत सीएमओ, मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एसपी सिंह और पुलिस से की गई है। आरोप है कि 9 मई को डॉ. आशीष ने पोस्टमॉर्टम करने आए डॉ. शमी अहमद की कार से 2 हजार रुपए चुरा लिए। डॉ. शमी ने जब पूछा तो उसने रुपए वापस कर दिए, लेकिन विवाद कर लिया। डॉक्टर पर आरोप है कि वह आए दिन पोस्टमॉर्टम हाउस में लोगों के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं। इसकी शिकायत जब पुलिस से की गई तो वह और उग्र हो गए। रविवार को वह सीधे पोस्टमॉर्टम हाउस पहुंचे। वहां लोगों को गाली देते हुए ताला बंद करने लगे।मौके पर पहुंची पुलिस से भी बदमीजी की। कोतवाली पुलिस भी मौके पर पहुंची और उसे अपने साथ ले गई।

डॉक्टर बोला- जाओ दर्ज करा देना एफआईआर : डॉ. आशीष अकेले ही पोस्टमॉर्टम हाउस का मेन गेट बंद करने लगे। तीन पुलिसकर्मी उसे रोकते रहे। काफी जद्दोजहद के बाद ताला खुलवाया गया। उसने पुलिसकर्मियों को धमकी देते हुए कहा- जाओ जो करना है कर लेना। मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज करा देना। मैं एमडी हूं। एसआरएन हॉस्पिटल पुलिस चौकी प्रभारी संजय गुप्ता ने बताया है कि जूनियर डॉक्टर की शिकायत हुई है। जांच की जा रही है है। जूनियर डॉक्टर आशीष को लाया गया था पूछताछ के बाद अभी छोड़ दिया गया है।

शत प्रतिशत रहा सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल का रिजल्ट

अखंड भारत संदेश

नैनी। सेठ आनंदराम जयपुरिया स्कूल नैनी का केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 10वीं और 12वीं का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। परिणाम देखकर बच्चों के चेहरे खिल गए। शनिवार को स्कूल परिसर में उत्तर्णी छात्रा-छात्राओं को प्रबंधतंत्र ने मिठाई खिलाकर उनका सम्मान बढ़ाया। 10वीं में अंशिका श्रीवास्तव ने (96.2%) और 12वीं में आलोक तिवारी और आयुषी सिंह ने (93.6%) प्राप्तकर स्कूल में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया।प्रबंधक डा. अजय कुमार ने बच्चों को मिठाई खिलाते हुए कहा कि आप देश के निमार्ता हो। अपने लक्ष्य को निर्धारित करते हुए उसे पाने के लिए आगे बढ़ो। अतिरिक्त निदेशक सुशील तिवारी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए जीवन में ईमानदारी के साथ कड़ी मेहनत करने को कहा। प्रधानाचार्य जय प्रकाश ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। घोषित किया।

सेंट मैरी कॉन्वेंट इंटर कॉलेज की पारिजात अनंग ने पाए 94.8% अंक

प्रयागराज। आईसीएससी बोर्ड की हाईस्कूल का रिजल्ट घोषित कर दिया गया जिसमे प्रयागराज शहर के छात्र और छात्राओ ने उच्च स्थान प्राप्त किया जिसने सेंट मैरी कॉन्वेंट इंटर कॉलेज प्रयागराज की छात्रा पारिजात अनंग ने 94.8% अंक प्राप्त कर कालेज के साथ अपने माता पिता का नाम रौशन किया आपको बताते चले कि पारिजात के पिता अनंग कुमार जी है जो कि हाईकोर्ट के प्रोटोकॉल में सेक्शन आफिसर के पद पर तैनात हैं और माता श्रीमती रीना श्रीवास्तव जी हाउसवाइफ है बच्ची का रिजल्ट देख अनंग कुमार जी के साथ कालेज की प्रिसिपल, अध्यापक भी प्रसन्न होकर पारिजात को बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना का आशीर्वाद दिया।

आईसीएसई हाईस्कूल में सतपुरा की छात्रा पलक को मिले 91 फीसदी अंक

शंकरगढ़। रविवार को आईसीएसई द्वारा घोषित किए गए परीक्षा परिणम से मेधावियों के चेहरे खिले हुए हैं। यूपी-एमपी की सीमा पर स्थित सतपुरा, नारीबारी की छात्रा पलक पांडेय को हाईस्कूल की परीक्षा में 91.4 फीसदी अंक हासिल हुए हैं। सतपुरा, नारीबारी निवासी केके पांडेय की पुत्री पलक पांडेय के द्वारा आईसीएसई बोर्ड में 90 फीसद से अधिक अंक अर्जित करने पर शिक्षकों के साथ-साथ परिजनों ने भी बधाई दी है। पलक पांडेय ने अपनी इस सफलता का श्रेय ईमानदरी से की गई मेहनत के साथ-साथ अपने शिक्षकों को दिया। पलक का कहना है कि यदि कक्षा में पढ़ाए गए विषयों का बराबर रिवीजन किया जाए तो परीक्षा के समय ज्यादा दबाव नहीं रहता है और एग्जाम में आसानी से उत्तर लिखा जा सकता है। फिलहाल पलक की इस उपलब्धि पर घरवालों के साथ-साथ ग्रामीणों ने भी खुशी जाहिर की है।

सीबीएससी : आयुष और मुजम्मिल ने ब्राइटलैंड का मान बढ़ाया

नैनी। होनहार छात्र आयुष शुक्ला ने 91.8% प्रतिशत प्राप्त करके विद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया एवं मुजम्मिल रहमान ने 90.8 प्रतिशत प्राप्त करके द्वितीय स्थान प्राप्त किया, मरियम सिद्धकी ने तृतीय, इशिता केसरवानी ने चतुर्थ एवं समीर द्विवेदी ने पांचवा स्थान प्राप्त करके अपने विद्यालय परिवार एवं समाज का नाम रोशन कियो छात्र-छात्राओं की सफलता पर विद्यालय की लेडी पैट्रन सुषमा सिंह, पैट्रन छविनाथ सिंह, प्रबंधक आशुतोष सिंह प्रधानाचार्या प्रियंका सिंह ने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी साथ ही साथ अपने शिक्षकों से महफूज आलम सिद्दीकी, शुभा त्रिपाठी, अवधेश पांडे, चितरंजन सिंह राहुल पटेल, शुभम केसरवानी एवं समस्त शिक्षक शिक्षिकाओं को बधाई दी एवं उनके योगदान की सराहना की।

हृदय रोग व डायबिटीज को रोकने के लिए दिया योग का प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

मुक्त विश्व विद्यालय ने गोहरी की पाठशाला में लगाया योग शिविर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज के विज्ञान विद्या शाखा द्वारा सोमवार को गोद लिए गए गांव गोहरी में योग जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम गोहरी गांव स्थित बेचू का पूरा प्राइमरी पाठशाला के परिसर में आयोजित किया गया। योग जागरूकता कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के असिस्टेंट प्रोफेसर श्री अमित कुमार सिंह द्वारा उपस्थित ग्रामीणों तथा पाठशाला के बच्चों सहित विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योग का अभ्यास कराया गया। योगाभ्यास में ग्रामवासियों को हृदय रोग व डायबिटीज को रोकने के लिए योग का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर आशुतोष गुप्ता ने योगाभ्यास के महत्व एवं विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योग जागरूकता कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के निदेशक प्रोफेसर जी एस शुक्ल ने योग का स्वास्थ्य पर प्रभाव का विस्तृत वर्णन किया तथा नियमित योगाभ्यास करने की सलाह दिया। उन्होंने योग से आरोग्य का वर्णन किया। विश्वविद्यालय की महिला अध्ययन केंद्र की सह-समन्वयक डॉ मीरा पाल तथा डॉ दीप्ति श्रीवास्तव ने ग्रामीण महिलाओं को योग के प्रति जागरूक किया। उन्होंने कहा कि सुबह सुबह योग करने से महिलाएं ताजगी महसूस करेंगी। दिनचर्या को सही करने में योग की बहुत बड़ी भूमिका है। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन विज्ञान विद्या शाखा के प्रोफेसर जे पी यादव ने किया। कार्यक्रम के उपरांत पाठशाला के प्राचार्य श्री कुलदीप शुक्ला ने योग शिविर के आयोजन का प्रमाण पत्र भी विश्वविद्यालय को दिया। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि श्री शिवपूजन पटेल ने गांव वासियों को विश्व विद्यालय द्वारा संचालित योग के विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में जागरूक किया। कार्यक्रम में डॉ दिनेश गुप्ता, डॉ आरपी सिंह, डॉ धर्मवीर सिंह, डॉ दीपक चौबे, डॉ सुषमा चौहान, डॉ साधना सिंह, डॉ दीपमाला, डॉ गोपाल कृष्णन सिंह, डॉ चंद्रेश्वर यादव आदि रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत अब 21 मई को

प्रयागराज। प्रयागराज में 13 मई को प्रस्तावित राष्ट्रीय लोक अदालत अब 21 मई को होगी। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है राष्ट्रीय लोक अदालत अब 13 मई की जगह अपरिहार्य कारणों से 21 मई को होगी। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निदेर्शानुसार एवं जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अध्यक्षता में व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, प्रयागराज के तत्वाधान में 21 मई को अब प्रयागराज के जनपद न्यायालय परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। इसमें सिविल, राजस्व व जुमार्ना से दंडनीय मामलों का निस्तारण किया जाएगा।

सामाजिक उन्नयन के लिए सदैव संघर्षरत रहे स्वरङ्ग संतोष यादव : मल्लू यादव

अखंड भारत संदेश

नैनी। किसी भी समाज के उन्नयन के लिए अनुशासन, स्वाभिमान ,कर्तव्य, परायणता अति आवश्यक है ' वंचितों के विकास के प्रति हरदम चिंतन तथा संघर्ष कर्मठ समाजसेवी स्वरङ्ग संतोष कुमार यादव जी की पहचान बन गई थी हम सभी को उनके बताए रास्तों पर चलकर यादव समाज का उत्थान करना चाहिए उक्त कथन यादव उन्नयन मंच के बैनर तले चंद्रशेखर आजाद पार्क में श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात 2 मिनट का मौन रखने के बाद इंजीनियर संतोष यादव के कृतित्व व्यक्तित्व को याद करते हुए मल्लू, यादव कहा इस अवसर पर सुरेंद्र कुमार यादव ने कहां की उन्होंने यादव उन्नयन मंच के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों ,आडंबर वो को दूर करने की भरपूर कोशिश की मंच के प्रेरक व्यक्तित्व बृजेश जी स्वर्गीय संतोष जी के कृतित्व से इतने प्रभावित थे कि इस दौरान केवल अश्रुपूरित नेत्रों से भाव विह्वल ही रह सके श्रद्धांजलि सभा में राजेश कुमार यादव ने पुष्पांजलि अर्पण के बाद कहा कि परंपराओं का निर्वाह तो ठीक है, परंतु आडंबर का स्थान नहीं होना चाहिए। यादव समाज के उत्थान के लिए व्यावहारिक सोच शिक्षा, रोजगार तथा भाईचारा भी अति आवश्यक है कार्यक्रम के संचालन एस के यादव नेद्रवित भाव से स्वर्गीय संतोष कुमार यादव के साथ बिताए समय को याद करते हुए कहा कि उन्होंने यादव समाज की शैक्षिक, आर्थिक,और सामाजिक विकास के लिए अंत समय तक संघर्ष किया कार्यक्रम में मंच के मुखिया डॉ एस के यादव, मल्लू यादव, बृजेश यादव, एडवोकेट धीरेंद्र यादव सुरेंद्र, कुमार यादव, जंग बहादुर यादव, मुकेश कुमार, विमलेश कुमार, राजेश कुमार यादव पत्रकार ,मदनलाल, राजीव सिंह आदि तमाम प्रबुद्ध लोगों ने यादव उन्नयन मंच के माध्यम से सामूहिक विवाह, वंचितों की शिक्षा ,जरूरतमंदों को रोजगार तथा भाईचारा बढ़ाने पर अपने विचार व्यक्त किए।

अपने निर्वाचन क्षेत्र के 13 ब्लाकों में एक माह का प्रवास करेंगे सांसद

रात्रि विश्राम पंचायत भवन या विद्यालय में होगा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ के सांसद संगम लाल गुप्ता ने आज पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि प्रधानमंत्री मोदी की प्रेरणा से वह अपनी लोकसभा क्षेत्र प्रतापगढ़ के 13 विकास खण्डों में 24 मई से लेकर 24 जून 2023 तक एक माह का ग्राम प्रवास करेंगे। इस दौरान गांव की पंचायत भवन अथवा प्राथमिक विद्यालय या उच्च प्राथमिक विद्यालय में रात्रि विश्राम होगा।

अपने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि एक माह तक वह निरंतर ग्रामीणों के बीच में रहेंगे। इस दौरान ग्राम स्तर

पत्रकारवार्ता में बोलते सांसद संगम लाल गुप्ता।

पर भारत सरकार एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा एवं बडे. पैमाने पर समस्याओं का निस्तारण तात्कालिक रुप से कराने का प्रयास करेंगे। सांसद ने बताया कि प्रवास के दौरान निरंतर विषेषज्ञ चिकित्सकों की टीम भी पिछड़ों, दलितों, गरीब बस्तियों में पहुंचकर उन्हें सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि ग्राम प्रवास के दौरान प्रभात फेरी कर युवा जन जागरण, सार्वजनिक स्थलों पर श्रमदान तथा योग के माध्यम से शारीरिक स्वस्थता देने का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन कर शासकीय कर्मचारियों, आंगनबाड़ी, आषा, पंचायत सेकेटरी, साधन सहकारी सचिव, सफाई कर्मी, विद्युत लाइनमैनों के साथ बैठकें कर उनकी व्यवहारिक कठिनाईयों को जानने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लुप्त होती हमारी लोक संस्कृतियों का भी समावेष करने का प्रयास होगा। सांसद ने कहा कि प्रवास के दौरान शासन के लाभार्थीपरक योजनाओं प्रधानमंत्री आवास, मुख्यमंत्री आवास, उज्जवला गैस, शौचालय, पेंषन, युवा उद्यमियों, किसानों के साथ औपचारिक बैठक कर उनकी समस्या और उसके निस्तारण के प्रयास के साथ-साथ गांव में प्रेस, सम्मानित अधिकारी, अधिवक्ता, पूर्व सैनिक, पूर्व कर्मचारियों, स्वत्रंतता संग्राम सेनानी परिवार आदि के सुझाव को जनकल्याणकारी सहयोग के रुप में लिया जाएगा। स्थानीय खेल गतिविधियों और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी कराने को शामिल किया गया है। पत्रकारवार्ता में सांसद संगम लाल गुप्ता के निजी सचिव विवेक उपाध्याय भी मौजूद रहे। कर्नाटक पर पूछे गये सवालों पर सांसद संगम लाल गुप्ता टाल गये।

उत्पीड़न पर कामकाज का बहिष्कार कर गरजे लालगंज के वकील

लालगंज, प्रतापगढ़। साथी के साथ पुलिसिया उत्पीडन को लेकर सोमवार को यहां वकीलों का पारा चढ़ आया। नाराज वकीलों ने तहसील परिसर में पुलिस प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। आरोपी दरोगा के निलंबन की मांग को लेकर एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। जूनियर बार एसोशिएसन प्रतापगढ़ के महामंत्री संतोष नारायण मिश्र के साथ निकाय मतगणना के दिन अन्तू थानाध्यक्ष द्वारा पुलिसकर्मियों के साथ अभद्र आचरण किया गया था। घटना की जानकारी होने पर सोमवार को तहसील में साथियों में आक्रोश फैल गया। नाराज वकीलों ने दीवानी न्यायालय तथा तहसील में राजस्व अदालतों मे कामकाज का बहिष्कार किया। वकीलों ने संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश व महामंत्री धीरेन्द्र शुक्ल की अगुवाई मे पुलिस व प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की।

जूबाए महामंत्री के साथ अभद्रता पर भड़के वकील, किया प्रदर्शन

अंतू एसओ पर मुकदमा दर्ज कर निलम्बन की उठाई मांग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जूनियर बार एसोसिएषन (पुरातन) कार्यालय पर अधिवक्ताओं की बैठक हुई। अध्यक्षता इंदुभाल मिश्र व संचालन संतोष नारायण मिश्र ने किया। बैठक में जूबाए महामंत्री संतोष नारायण मिश्र के साथ अंतू एसओ द्वारा की गई अभद्रता एवं आरोपी एसओ के विरुद्ध मुकदमा पंजीकृत न होने से क्षुब्ध अधिवक्ता आक्रोषित हो गये। अधिवक्ताओं ने मांग किया कि आरोपी एसओ के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत हो तथा उसका निलंबन किया जाए। इस दौरान सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आज सोमवार को न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे। बैठक में पूर्व अध्यक्ष ओम प्रकाष मिश्र, अयोध्या प्रसाद मिश्र, संजय सिंह, ममता, मयंक, आसिफ सिद्दीकी आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

कचहरी में विरोध प्रदर्शन जताते जूबाए के पदाधिकारी।

उधर संकट मोचन धाम पर कलेक्ट्रेट परिसर में आल इंडिया रुरल बार एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष मुक्कू ओझा एडवोकेट के नेतृत्व में बैठक कर जूनियर बार एसोसिएशन के महामंत्री संतोष नारायण मिश्रा के साथ अंतू द्वारा दुर्व्यवहार किया जाने की भरस ना तथा निंदा किया गया उसके उपरांत अधिवक्ता द्वारा कचेहरी परिसर में पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए ज्ञापन दिया गया जिसमें यह मांग किया गया एस ओ अंतू को तत्काल प्रभाव से निलंबित करके उनके ऊपर मुकदमा दर्ज किया जाए बैठक में उपस्थित अधिवक्ता ऑल इंडिया रूरल बार के जिलाध्यक्ष अंजनी सिंह बाबा श्री नीरज त्रि पाठी एडवोकेट विनय सिंह एडवोकेट अनुपम श्रीवास्तव जितेंदर सिंह भोला दिवाकर सिंह एडवोकेट अतेंद्र सिंह प्रशांत सिंह बंटी आशीष श्रीवास्तव आलोक सिंह अनिल पांडे राहुल गुप्ता अनूप श्रीवास्तव मनोज कुमार आदि लोग उपस्थित थे।

कला एवं शिक्षा के क्षेत्र में द्वारिका प्रसाद का योगदान महनीयः एसडीएम

पुण्य तिथि पर राहगीरों को पिलाया गया शरबत, दी गई पुष्पांजलि

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के राम अंजोर मिश्र इण्टर कालेज में रिटायर्ड कला अध्यापक एवं वरिष्ठ पत्रकार स्व. द्वारिका प्रसाद तिवारी की पुण्यतिथि सोमवार को यहां समारोहपूर्वक मनायी गयी। शिक्षामनीषी की स्मृति में राहगीरों को शरबत भी पिलाया गया। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के तत्वाधान मे पुण्यतिथि पर हुए कार्यक्रम का शुभारंभ एसडीएम उदयभान सिंह ने स्वर्गीय द्वारिका प्रसाद के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। एसडीएम उदयभान ने कहा कि शिक्षा एवं कला तथा लेखन के क्षेत्र में स्व. द्वारिका प्रसाद का योगदान समाज को आगे बढ़ाने में दिशाबोधक है। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह पंकज ने किया।

विशिष्ट अतिथि पूर्व प्राचार्य भगवती प्रसाद तिवारी एवं चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी ने भी स्व. द्वारिका प्रसाद तिवारी को शिक्षामनीषी बताते हुए उनके योगदान को सराहा। हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता सुभाषचंद्र तिवारी ने अतिथियों का स्वागत व संचालन महासंघ के प्रदेश उपाध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। कनिष्ठ पुत्र एवं व्यापार मण्डल के पूर्व उपाध्यक्ष राकेश तिवारी गुडडू ने कार्यक्रम का सयोजन व समाजसेविका गोमती देवी ने आभार प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार विशालमूर्ति मिश्र, डा. शक्तिधर नाथ पाण्डेय, उमाशंकर मिश्र, केशवराम ओझा, अधिवक्ता शैलेन्द्र मिश्र, चंद्रशेखर तिवारी, डॉ. आशीष सिंह, डा. पुरूषो×म शुक्ल, इं. सुनील पाण्डेय, देवानंद मिश्र, संजय सिंह, राहुल त्रिपाठी, शास्त्री सौरभ त्रिपाठी, मकदूम मौर्य आदि रहे।

मनरेगा बीडीओ कालाकांकर के खिलाफ उप मुख्यमंत्री ने दिये जाँच के आदेश

परियावां, प्रतापगढ़। जनपद के ब्लाक मुख्यालय कालाकांकर मे तत्कालीन कालाकांकर बीडीओ द्वारा ब्लाक कालाकांकर के ग्राम प्रधानो से मनरेगा कार्ययोजना प्रस्ताव को पास करने के लिए अवैध वसूली किया था जिसमे इसी बीच बीडीओ को कुण्डा ब्लाक का चार्ज मिल गया और कालाकांकर ब्लाक मे मनरेगा कार्यक्रम अधिकारी बना दिये गये।

ग्राम प्रधानों का अभी तक कार्य योजना प्रस्ताव पास न होने से आक्रोशित हो उठे और बीते शुक्रवार को कालाकांकर ब्लाक आवास पर ग्राम प्रधानों व बीडीओ के बीच जमकर कहा सुनी होने लगी, जिसमे ग्राम प्रधानों ने बीडीओ पर पैसा लेने का आरोप लगाते हुए उसे वापस करने के लिए जमकर बहस बाजी हुई थी।

हमारी तुम्हारी कहानी बनेगी, यह सदियों चलेगी निशानी बनेगी

रानीगंज कैथौला में कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। रानीगंज कैथोला में साहित्य सृजन मंच के पांचवे कवि सम्मेलन व मुशायरे का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में आकाशवाणी प्रयागराज के निदेशक लोकेश कुमार शुक्ल एवं उद्घाटन अतिथि अनिल कुमार सिंह खादी ग्रामोद्योग विभाग लखनऊ व विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉक्टर बच्चा बाबू वर्मा ने दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

लखनऊ से आई कवयित्री पूनम मिश्रा ने सरस्वती वंदना के साथ कवि सम्मेलन का आगाज किया उसके बाद कवि सम्मेलन में उपस्थित दर्जनों कवियों ने सारी रात श्रोताओं को अपनी कविताओं से सराबोर किया।

कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करती कवयित्री।

वही मशहूर शायर काशिम हुनर ने अपने शेर और कलाम से लोगों के दिलों पर राज किया। सुनील प्रभाकर ने जब गीत पढ़ना शुरू किया तो जनमानस भाव विभोर हो उठा उनका गीत हमारी तुम्हारी कहानी बनेगी, यह सदियों चलेगी निशानी बनेगी बहुत सराहा गया। कवि सत्येंद्र सिंह सौम्य ने भी अपनी 25वी शादी की वर्षगांठ पर बेटियों पर आधारित गीत पढ़कर वाहवाही लूटी। गर्भ में मत मारो बेटी को है पुकार मन की, बेटी तो तुलसी होती है अपने आंगन की। कवि सम्मेलन का आयोजन कमलेश गिरी कमल ने एवं मार्गदर्शन मानस रत्न डॉक्टर अंबिकेश त्रिपाठी ने किया। संचालन वीर रस के कवि नीरज पांडे ने किया। इससे पूर्व कवियों के साथ ही क्षेत्र के समाजसेवियों को अंगवस्त्र व प्रशस्ति पत्र देकर सारस्वत सम्मान किया गया।

महेंद्र सिंह ने आए हुए लोगो के प्रति आभार जताया। आयोजन की अध्यक्षता कवि आचार्य अनीश देहाती ने किया। इस मौके पर पूर्व प्रमुख रमेश प्रताप सिंह, प्रवीण कुमार सिंह, मनोज सिंह,पूर्व प्रमुख सुरेंद्र प्रताप सिंह ददन, संतोष सिंह संतोष, कुंवर दीपेंद्र सिंह, कमल कुमार सिंह, प्रमोद सिंह, गौरीशंकर तिवारी, अनिल कुमार सिंह, चंद्रभान सिंह, रविंद्र प्रताप सिंह समेत सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

स्वच्छ भारत मिशन एवं मनरेगा के कार्यो में तेजी लाएं, अन्यथा होगी कार्रवाईः डीएम

डीएम की अध्यक्षता में जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में जिला स्वच्छता समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिला पंचायत राज अधिकारी ने पिछली बैठक की कार्यवाही के सम्बन्ध में जानकारी दी। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत विभिन्न मदों में व्यय हुई धनराशि, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेज-2 के अन्तर्गत व्यक्तिगत पात्र लाभार्थियों को शौचालय निर्माण हेतु प्रथम व द्वितीय किश्त की धनराशि दिये जाने व अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने समीक्षा की एवं निर्देशित किया कि शौचालय निर्माण हेतु प्रथम व द्वितीय किस्त के कार्य इस माह तक अवश्य पूर्ण कर लिये जाये।

समीक्षा के दौरान पाया गया कि एसएलडब्लूएम के कार्यो में लापरवाही एवं शिथिलता बरती जा रही है एवं जो भी विकास के कार्य जनपद में कराये जा रहे है उन सबकी कार्य की प्रगति बहुत धीमी है जिस पर जिलाधिकारी ने समस्त खण्ड विकास अधिकारी, एडीओ पंचायत व अन्य सम्बन्धित को निर्देशित किया कि कार्यो की प्रगति को बढ़ाया जाये, यदि किसी के प्रति लापरवाही पायी जाती है तो उनके खिलाफ कार्रवाई की जाये। यदि ग्राम प्रधानों द्वारा ग्रामसभा में कार्य नही किया जा रहा है तो उन्हें नोटिस दिया जाये। जिला पंचायत राज अधिकारी ने अधिकारियों से कहा कि जिन ग्रामों

स्वच्छता समिति की बैठक में बोलते जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल

में कार्य नही हुआ है उनकी लिस्ट भेज दी गयी, लिस्ट को देखकर चिन्हित गांव में विकास के कार्य कराये जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन एवं मनरेगा के अन्तर्गत जो भी कार्य किये जा रहे है उन सबकी प्रगति बहुत धीमी है जिस पर जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारियों को कार्यो में तेजी लाने के निर्देश दिये, यदि कार्यो में लापरवाही पायी जायेगी तो सम्बन्धित के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी।

जिन खण्ड विकास अधिकारियों की कार्ययोजना बनी है वे अपना कार्य कराना सुनिश्चित करें एवं जो कार्य चल रहे है उनमें प्रगति लायें। जनपद के नवचयनित 954 ग्रामों की हर ब्लाक स्तर पर कार्ययोजना बनाकर पोर्टल पर अपलोड करने के निर्देश मुख्य विकास अधिकारी ने दिया। स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) फेज-2 के योजनान्तर्गत चयनित स्थलों पर प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबन्धन यूनिट (पीडब्ल्यूएमयू) निर्माण की प्रगति के सम्बन्ध में एडीपीआरओ को मुख्य विकास अधिकारी ने निर्देशित किया कि एडीओ पंचायत के साथ बैठक कर प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबन्धन यूनिट के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करें। बैठक में जिलाधिकारी ने जिला विकास अधिकारी को निर्देशित किया कि तालाबों, रिबोर, पाइप पेयजल की हर सप्ताह बैठक कर निर्देशित करें कि जिन तालाबां में पानी नही है उनमें पानी भरवाया जाये, जिन हैण्डपम्पों की स्थिति ठीक नही है उन्हें दुरूस्त कराया जाये और पाइप पेयजल को सुचारू रूप से चलाया जाये, जहां पर कार्य हो जाये वहां पर सत्यापन अवश्य करें जिससे पता चल सके कि कार्य हुआ है कि नही। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, वरिष्ठ कोषाधिकारी दीपक बाबू, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी, समस्त खण्ड विकास अधिकारी, समस्त एडीओ पंचायत सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहे।

शैक्षणिक भ्रमण से होता है व्यक्तित्व का विकास

एमडीपीजी कालेज के छात्रों का सफलता शैक्षणिक भ्रमण पर हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कालेज के जंतु विज्ञान विभाग द्वारा बीएससी तृतीय वर्ष के छात्रों के लिए तीन दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। इस भ्रमण में छात्रों को दूधवा राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत पीलीभीत टाइगर रिजर्व ले जाया गया।

कालेज के प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने पाठ्यक्रम पर आधारित इस शैक्षणिक भ्रमण की सफलता पर जंतु विज्ञान विभाग एवं छात्रों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण कड़ी है। ये भ्रमण विद्यार्थियों को अपने और दूसरों के अनुभव से सीखने का एक अच्छा अवसर देते हैं। जंतु विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष डा अमिता मिश्रा ने बताया जब विद्यार्थी शैक्षणिक भ्रमण पर जाते हैं तो वे अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप में देखकर किसी भी विषयवस्तु का वर्णन करने में

शैक्षिक भ्रमण के दौरान मौजूद एमडीपीजी कालेज के छात्रगण।

सक्षम हो जाते हैं। भ्रमण के दौरान सभी छात्रों ने अनुशाशन एवं सुरक्षा का विशेष ध्यान दिया। भ्रमण के समन्वयक डा अभिषेक सिंह ने बताया कि शिक्षा का एक आयाम पर्यटन शिक्षा भी है। पर्यटन से प्रकृति के दृश्य रूप का अवलोकन होता है जिससे ज्ञान का विस्तार होता है। प्राचीन काल की शिक्षण पद्धति में विजुअल पर अधिक फोकस किया जाता था। आज की आधुनिकतम शिक्षण प्रणाली में विद्यार्थी वर्ग को प्रकृति से जितना जोड़ा जाएगा उतना ही उनके कौतुहल में अधिकाधिक वृद्धि होगी। इसी उद्देश्य से विद्यार्थियों को जंगल के बीच ले जाकर नदियों के उद्गम, पारिस्थितिक तंत्र, पर्यावरण का जीवन पर प्रभाव सहित कई विषयों के बारे में अवगत कराया गया। इसके अलावा कई प्रकार के जीव जंतु एवं वनस्पतियों के बारे में भी विद्यार्थियों को जानकारी दी गई। इसके साथ ही छात्रों को शारदा सागर बांध में जल विद्युत सयंत्र की जानकारी भी दी गयी। भ्रमण का सम्पूर्ण संचालन विभागीय छात्र समिति ने किया जिसमें शांभवी, शिवांगी, मारिया, इशिका, खुशी, आंशिका और शिवम टीम लीडर के रूप में उपस्थित रहे।

पट्टी में कांग्रेस को नोटा से भी कम मिला वोट

नोटा पर 16 तो कांग्रेस पर 14 लोगो ने लगाई मुहर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी की ऐतिहासिक धरती से अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत करने वाले देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू यहीं से राजनीतिक ककहरा सीखा था। पट्टी के रूर में सन 1920 में उन्होंने अवध किसान सभा को संबोधित भी किया था, जिसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया है। देश की आजादी के बाद कई वर्षों तक कांग्रेस ने पट्टी क्षेत्र में जीत हासिल करके क्षेत्र का नेतृत्व किया लेकिन 2023 के नगर पंचायत चुनाव में कांग्रेस के प्रत्याशी को नोटा के बराबर वोट नहीं मिला अपने वजूद के लिए पट्टी में संघर्ष कर रही कांग्रेस को पिछली बार कोई भी प्रत्याशी खड़ा करने के लिए नगर पंचायत के चुनाव में नहीं मिला था हालांकि इस बार 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के सिंबल पर ताल ठोकने वाली सुनीता पटेल के पति लाल बहादुर पर भरोसा जताते हुए पट्टी नगर अध्यक्ष का टिकट दिया लेकिन उन्हें नोटा से भी कम वोट मिला और वह महज 14 मत प्राप्त किए और अपनी जमानत भी नहीं बचा सके। बता दें कि पिछले चुनाव की अपेक्षा 2 गुना अधिक लोगों ने नोटा पर मुहर लगाई। नोटा अर्थात नन ऑफ द अबव पर 2017 के नगर पंचायत चुनाव में कुल 6 लोगों ने मोहर लगाई थी अर्थात उन्हें चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों में कोई पसंद नहीं आया था लेकिन इस बार उनकी संख्या बढ़कर 16 हो गई।

पिछली बार कोई भी प्रत्याशी खड़ा करने के लिए नगर पंचायत के चुनाव में नहीं मिला था हालांकि इस बार 2022 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के सिंबल पर ताल ठोकने वाली सुनीता पटेल के पति लाल बहादुर पर भरोसा जताते हुए पट्टी नगर अध्यक्ष का टिकट दिया लेकिन उन्हें नोटा से भी कम वोट मिला और वह महज 14 मत प्राप्त किए और अपनी जमानत भी नहीं बचा सके।

ट्रैक्टर की टक्कर से बुजुर्ग की मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। साइकिल से खेत जा रहे बुजुर्ग की अज्ञात टैज्क्टर की टक्कर से दर्दनाक मौत हो गयी। लालगंज कोतवाली के मकदूमपुर अगई निवासी रामदेव विश्वकर्मा 65 सोमवार को दोपहर वह अपने घर से साइकिल द्वारा खेत जा रहा था। रास्ते मे बिहारी का पुरवा के पास अचानक मिटटी लोड कर तीव्र गति से आ रहे टैज्क्टर ने उसकी साइकिल मे टक्कर मार दिया। दुर्घटना में घायल बुजुर्ग को इलाज के लिए स्थानीय ट्रामा सेण्टर ले आया गया। यहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। जानकारी मिलने पर पुलिस ट्रामा सेंटर पहुंची और शव का पंचनामा कराकर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। इधर बुजुर्ग की मौत की जानकारी घर पहुंची तो परिजनों मे कोहराम मच गया। वहीं घटना को लेकर मृतक के पुत्र रतीपाल विश्वकर्मा ने अज्ञात टैज्क्टर चालक के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी है।

कर्नाटक में मिली ऐतिहासिक जीत से कांग्रेसी गदगद

अखंड भारत संदेश

इदिरा भवन पर बैठक कर एक दूसरे का मुंह कराया मीठा

प्रतापगढ़। जिला कांग्रेस कमेटी प्रतापगढ़ इंदिरा भवन पर जिला अध्यक्ष डॉ लाल जी त्रिपाठी ने एक बैठक किया, जिसमें कर्नाटक विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस पार्टी को पूर्ण बहुमत मिलने से पूरे देश के और जिले के सभी कांग्रेसी गदगद है।

इस मौके पर कांग्रेसियों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई दिया और कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस संसदीय अध्यक्ष सोनिया गांधी, राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी, राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी, सीएलपी लीडर आराधना मिश्रा सहित कांग्रेस के सभी वरिष्ठ नेताओं, कार्यकताओं के साथ कर्नाटक की जनता के प्रति आभार जताया। जिला अध्यक्ष ने कहा इस परिणाम से पूरे देश में कांग्रेस

इंदिरा भवन पर आयोजित बैठक में बोलते जिलाध्यक्ष डा0 लालजी।

पार्टी के कार्यकताओं को एक नई ऊर्जा मिली है जिससे 2024 के लोकसभा के चुनाव में कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बनेगी उन्होंने कहा कि आज देश में महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आर्थिक असमानता, सरकारी संस्थाओं की बिक्री ऐसे बहुत से बड़े मुद्दे हैं जिनको हम जनता के बीच में लेकर जाएंगे और कर्नाटक में जो विजय मिली हुई है, इस विजय यात्रा से आगामी मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और तेलंगना में भी कांग्रेस की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी। इस मौके पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष इरफान अली, पूर्व जिला अध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्र, पीसीसी सदस्य डॉ नीरज त्रिपाठी, पीसीसी सदस्य कपिल द्विवेदी, पीसीसी सदस्य डॉ प्रशांत देव शुक्ला, कोषाध्यक्ष वेदांत तिवारी, सेवादल अध्यक्ष महेंद्र शुक्ल, प्रदेश सचिव सेवादल प्रेम शंकर द्विवेदी, जिला सचिव सुरेश मिश्रा, सुनीता पटेल, दिलीप गौतम, हरिश्चंद्र सरोज, मो0 इश्तियाक, राम तीरथ चैरसिया, राम रतन तिवारी, अभय तिवारी, फतेह बहादुर सिंह सहित अनेकों लोग मौजूद रहे।

सुधाकर को ब्लाक प्रभारी बनाये जाने पर जतायी गयी खुशी

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर स्थित क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के कैम्प कार्यालय पर सोमवार को पार्टी कार्यकताओं की हुई बैठक में अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य सुधाकर पाण्डेय को सांगीपुर ब्लाक में पार्टी का प्रभारी बनाये जाने को लेकर हर्ष जताया गया। जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डा. लालजी त्रिपाठी ने पूर्व प्रधानाचार्य सुधाकर को पार्टी के सांगीपुर ब्लाक का प्रभारी बनाए जाने का ऐलान किया है। कार्यकताओं ने राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी व कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना की संस्तुति पर सुधाकर के मनोनयन को पार्टी की मजबूती में प्रशंसनीय निर्णय ठहराया है।

खबर संक्षेप

आज कर्मचारी शिक्षक संयुक्त मोर्चा करेगा धरना प्रदर्शन

कौशाम्बी। कर्मचारी शिक्षक संयुक्त मोर्चा के तत्वाधान में विभिन्न मांगों को लेकर 16 मई को एक दिवसीय धरना प्रदर्शन का आयोजन किया गया है धरना प्रदर्शन की अनुमति के लिए जिला अधिकारी को संगठन ने पत्र सौंपा है कर्मचारियों ने बताया कि देश भर के कर्मचारी एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर राष्ट्रीय वेतन आयोग का गठन किए जाने की मांग सहित विभिन्न मांगों से संबंधित ज्ञापन सरकार को सौंपेंगे।

किशोर लापता, अनहोनी की आशंका

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के बालकमऊ निवासी अरुण कुमार शुक्ला ने बताया कि 10 मई को उसका बेटा रितिक घर से बिना बताए अचानक लापता हो गया। देर शाम किशोर को घर से गायब देख परिजनों में हड़कंप मच गया। खोजबीन के बाद भी किशोर का कहीं पता नहीं चल सका। पीड़ित पिता की तहरीर पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर किशोर की तलाश शुरू कर दी है। किशोर के परिजन अनहोनी की आशंका से भयभीत हैं।

प्रेमिका के साथ मिलकर बेटे ने मां को उतारा मौत के घाट

9 मई को महिला की बेरहमी से हत्या का खुलासा करते हुए पुलिस ने महिला के बेटे और उसकी प्रेमिका को भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र में 9 मई को महिला का बेरहमी से कत्ल किए जाने का पुलिस ने खुलासा करते हुए, महिला के बेटे और उसकी प्रेमिका को गिरफ्तार कर लिया है पुलिस की पूछताछ में महिला के बेटे और उसकी प्रेमिका ने हत्या की बात कबूल कर ली है पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर महिला के बेटे और उसकी प्रेमिका को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थाना पिपरी अंतर्गत 09 मई 2023 को वादी नीरज पुत्र स्व0 सुरेश ग्राम मुरादपुर थाना पिपरी द्वारा प्रार्थना पत्र दिया गया कि मेरी माँ सीता देवी पत्नी स्व0 सुरेश उम्र करीब 50 की हत्या हरिलाल पुत्र अज्ञात व उसकी लड़की उसमा तथा कुछ अज्ञात व्यक्तियों द्वारा बर्बरता से हत्या कर कर दी गयी है। तहरीर के आधार पर थाना हाजा पर मुकदमा पंजीकृत कर अभियुक्त हरिलाल व उसकी लड़की उसमा तथा अज्ञात आरोपीगणों की तलाश पुलिस ने शुरू की। विवेचना के क्रम में पुलिस को ज्ञात हुआ कि मृतिका सीता देवी के लड़के नीरज अपनी प्रेमिका उसमा से शादी करना चाहता था। उसकी माँ द्वारा विरोध करने पर काफी दिनों से माँ बेटे में कलह चल रही थी इसीलिए नीरज अपने घर पर न रहकर अपनी बहन के घर चरवा में रहता था और चोरी छिपे अपनी प्रेमिका उसमा से मिलने मंदर देह माफी जाया करता था। घटना के दिन रात्रि में नीरज और उसकी प्रेमिका उसमा दोनो लोग मौका देखकर समय करीब 11.00 बजे रात्रि के आस पास ईंट व चाकू से बड़ी बेरहमी से महिला की हत्या कर दिया। अपनी मां की हत्या करने के बाद युवक खुद तहरीर लेकर थाने पहुँचा और सूचना देकर अपनी मां की हत्या का मुकदमा लिखवाया लेकिन युवक और उसकी प्रेमिका का नाटक ज्यादा देर तक पुलिस के सामने नहीं टिक सका पुलिस की पूछताछ में प्रेमी युगल टूट गए और गुनाह कबूल कर लिया अभियुक्त नीरज व उसकी प्रेमिका उसमा उपरोक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

हत्या का खुलासा करती पुलिस

दो पक्षों में हुई मारपीट, चार लोग जख्मी

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के चक गांव में दो परिवार के लोग आमने-सामने हो गए। झड़प के बाद एक दूसरे पर लाठी-डंडा लेकर टूट पड़े। मारपीट में दोनों पक्ष से चार लोग लहूलुहान हो गए। पुलिस ने घायलों का प्राथमिक उपचार कराने के बाद दोनों पक्षों की तहरीर पर आठ लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। चक गांव की पूनम देवी पत्नी फूल सिंह का पड़ोसी संतलाल से पुराना विवाद चल रहा है। इसी अदावत में दोनों परिवार के लोग एक दूसरे पर लाठी-डंडा लेकर टूट पड़े। दोनों परिवार के बीच जमकर मारपीट हुई। मारपीट में एक पक्ष से पूनम देवी, नंदलाल व दूसरे पक्ष से संतलाल व रामकली घायल हो गए। गांव वालों ने बीच-बचाव करते हुए मामला शांत कराया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। देर शाम पुलिस ने जांच पड़ताल करते हुए पूनम देवी की तहरीर पर संतलाल, अभय, मंजीत, राम कली व दूसरे पक्ष से पूनम देवी, फूलसिंह व नंदलाल समेत चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

बिजली कटौती से मंझनपुर में मचा हाहाकार...

बूंद-बूंद पानी को तरस रही मुख्यालय की हजारों जनता

आम जनमानस की विकराल समस्या के बाद भी चैन की नींद सो रहे आला अधिकारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर कहने के लिए शहरी क्षेत्र घोषित है बिजली और पानी सप्लाई की व्यवस्था बहाल करने के लिए सरकार बराबर निर्देश दे रही है मीटिंग में झूठे वादे और झूठी सूचना शासन को भेजकर अधिकारी वाहवाही लूट रहे हैं लेकिन हकीकत में मंझनपुर नगर पालिका क्षेत्र में जन सुविधाएं बहाल नहीं हो सकी है आला अधिकारियों की घोर लापरवाही के चलते जनपद मुख्यालय मंझनपुर गांव देहात से बदतर हो चुका है बिजली की बेतहाशा कटौती से जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है विकराल गर्मी में पूरी रात सड़कों में टहल कर नगर के लोग रात व्यतीत कर रहे हैं बिजली विभाग के अधिकारियों से बात करने के बाद भी विभागीय अधिकारी बिजली व्यवस्था को बहाल करने के बजाए मदहोश होकर चैन की नींद सो रहे हैं जिससे आम जनता परेशान है अंधाधुंध बिजली कटौती और आए दिन उपकरण में खराबी के चलते नगर क्षेत्र में हाहाकार मच गया है लोगों के घरों में दैनिक उपयोग के लिए पानी नहीं है पीने के पानी के लिए भी नगर के लोग तरस रहे हैं योगी सरकार बिजली सप्लाई देने का बड़ा बड़ा वादा कर रही है लेकिन योगी सरकार के वादे पर अधिकारियों की व्यवस्था भारी पड़ रही है योगी सरकार के आदेश हवा हवाई साबित हो रहे हैं। मंझनपुर जनपद मुख्यालय के नेहरू नगर में शनिवार की रात से बिजली कटौती शुरू हुई है उपकरणों में खराबी का बहाना कर बिजली विभाग के अधिकारी और उनके कर्मी चैन की नींद सोते हैं 2 घंटे में ठीक हो जाने वाले उपकरण को 36 घंटे बाद भी विभागीय अधिकारी नहीं बना सके हैं मौके पर बिजली विभाग का एक भी अधिकारी कर्मचारी नहीं पहुंचा है प्राइवेट लाइनमैन के सहारे खराब व्यवस्था को सुधार करने का झूठा प्रयास विभाग के अधिकारी कर रहे हैं कामचोर अधिकारियों के चलते नगर की जनता को शनिवार रात से रविवार पूरे दिन और पूरी रात बिजली सप्लाई नहीं मिल सकी है नेहरू नगर के लोगों को बिजली सप्लाई ना मिल पाने से गर्मी में परिवार के लोग व्याकुल हैं लेकिन उसके बाद भी लंबी चौड़ी बाते करने वाले नेताओं ने नगर की समस्या दूर करने का प्रयास नहीं किया सोमवार को दोपहर बाद तक भी बिजली की सप्लाई नगर क्षेत्र में नहीं शुरू हो सकी है। बिजली सप्लाई न होने से नगरपालिका का पानी सप्लाई भी बाधित दिखाई पड़ रहा है कुछ समय के लिए एकदम धीमी गति से पानी सप्लाई छोड़ा जाता है जिससे घर के अंदर ऊपरी मंजिल में पानी नहीं पहुंच पाता है और लोग बूंद-बूंद पानी के लिए तड़प रहे हैं बिजली न होने की वजह से टुल्लू मोटर नहीं चल पाता जिससे लोगों के घरों में पानी की आपूर्ति नहीं हो पाती है नगर पालिका क्षेत्र में मच्छर भगाने के नाम पर करोड़ों का बजट खर्च किया जा चुका है लेकिन नगरपालिका का मच्छर भगाने की यह योजना बकवास साबित हुई है पूरे नगर क्षेत्र में मच्छरों का आतंक है मच्छरों के बढ़ते प्रकोप से रोज नई-नई बीमारियां नगर वासियों को घेर रही है बिजली सप्लाई मिल जाने पर पंखा कूलर के सहारे लोग मच्छर से निजात पा जाते हैं लेकिन 2 दिन से बिजली सप्लाई न मिलने के चलते नगर के लोग मच्छरों के आतंक से परेशान है पूरी रात नगर के लोग जागते रहे चैन की नींद सो नहीं सके लेकिन बिजली सप्लाई की समस्या के बाद भी आला अधिकारी चैन की नींद सोते हैं शायद उन्हें नगर क्षेत्र के लोगों की समस्या से कोई वास्ता नहीं था इतना ही नहीं सांसद विधायक और पूर्व मंत्रियों को भी नगर क्षेत्र की जनता की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं रह गया है बड़े नेताओं को नगर के लोगों ने फोन कर समस्या बताने का प्रयास किया लेकिन सत्ता के मद में चूर बड़े नेताओं ने नगर के लोगों का फोन उठाना उचित नहीं समझा जिससे नगर के सैकड़ों लोगों में आक्रोश व्याप्त है और समय आने पर इन नेताओं को नगर की जनता मुंहतोड़ जवाब देगी।

तीसरी कौशांबी ओपन रैपिड शतरंज प्रतियोगिता बालक / बालिका का किया गया आयोजन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला शतरंज स्पोर्ट्स एसोसिएशन कौशांबी के तत्वावधान में तीसरी कौशांबी ओपन रैपिड शतरंज प्रतियोगिता (बालक बालिका) का आयोजन वी बी यस आई टी आई काजीपुर चायल, जिला कौशांबी में 14 मई को आयोजित की गई मुख्य अतिथि विघालय की फाउंडर आशा सिंह और विनोद केसरवानी के द्वारा खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण कर प्रतियोगिता का समापन किया गया है। सचिव राघवेन्द्र शुक्ल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में कुल 60 खिलाड़ियों ने दस जिलों से प्रतिभाग किया (वाराणसी, कानपुर, लखनऊ, रेनूकूट , गोरखपुर, प्रयागराज आदि) यह प्रतियोगिता छह चक्र में की गई। पहला स्थान प्रयागराज के फैड्रिक जान दूसरे स्थान पर रेनूकूट के नंदन तीसरे स्थान पर प्रयागराज के गौरव निषाद रहे चौथा स्थान पर कानपुर के विकास निषाद पांचवें स्थान पर प्रयागराज के स्पर्श यादव ओर छठा स्थान पर वाराणसी के दिलीप त्रिपाठी सातवें स्थान पर प्रयागराज के स्माइल सिद्दीकी रहे आठवें स्थान पर प्रयागराज के राजेश पाठक नौवे स्थान पर प्रयागराज के रवि चोपड़ा और दशवे स्थान पर वाराणसी के नारायण यादव रहे। आयु वर्ग 7 में पहला स्थान पर प्रयागराज के शिवाय सिंह दूसरे स्थान पर प्रयागराज की अनुप्रिया रही तीसरे स्थान पर प्रयागराज के तविश सिंह रहे आयु वर्ग 09 में पहले स्थान पर प्रयागराज के आदित्य सिंह बघेल दूसरे स्थान पर वाराणसी के पर्थ टिक्मनी तीसरे स्थान पर सात्विक आन्नद रहे आयु वर्ग 11 में पहले स्थान पर प्रयागराज के ओजस आन्नद दूसरे स्थान पर प्रयागराज के हर्दयन शुक्ल रहे। आयु वर्ग 13 में पहले स्थान पर प्रयागराज के अर्नव अग्रवाल दूसरे स्थान पर वाराणसी के अविचल त्रिपाठी तीसरे स्थान पर प्रयागराज की अर्चिता रही आयु वर्ग में 15 में पहले स्थान पर प्रयागराज की आरोही वेस्ट खिलाड़ी विहान सिंह रहे कौशांबी में पहले स्थान पर इन्द्र श्याम सिंह दूसरे स्थान पर अधिकांश केसरवानी रहे सचिव राघवेन्द्र शुक्ल ने बताया कि ऐसी प्रतियोगिता हर महीने आयोजित की जायेगी अगली प्रतियोगिता 11 जून को रखी जाएगी समापन समारोह में सचिव राघवेन्द्र, ज्वाइंट सेक्रेटरी राकेश कुमार, चन्द्र प्रकाश, रवि चोपड़ा , अश्विनी मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

शतरंज खिलाड़ी

उद्योग बन्धु समिति की 18 मई को बैठक

कौशाम्बी। डीएम की अध्यक्षता में जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक दिनांक 18 मई 2023 को सायं 04 बजे उदयन सभागार में आहूत की गई है। यह जानकारी उपायुक्त उद्योग ने देते हुए बताया कि बैठक में जनपद के उद्यमियों की समस्याओं का समाधान किया जायेंगा।

किशनपुर पम्प कैनाल 16 मई से 31 मई तक रहेंगी बंद

कौशाम्बी। किशनपुर पम्प कैनाल 16 मई 2023 से 31 मई 2023 तक बंद रहेंगी। यह जानकारी अधिशासी अभियंता सिंचाई जगदीश लाल ने देते हुए बताया कि 01 जून 2023 से स्वीकृत रोस्टर एवं किसानों की मांग के अनुसार पुनः संचालित किया जायेंगा।

निरोधात्मक कार्यवाही 09 गिरफ्तार : जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना सराय अकिल से पांच थाना कोखराज से दो थाना मोहब्बतपुर पइन्सा से दो कुल 09 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

धर्म परिवर्तन कराने वाले 4 लोग गिरफ्तार

गैरकानूनी ढंग से ईसाई धर्म परिवर्तन कराने में संलिप्त चार अभियुक्त को गिरफ्तार कर पुलिस ने भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। थाना संदीपनघाट अंतर्गत ग्राम सैता के चौकीदार द्वारा रविवार को थाना में सूचना दी गयी की गांव उगहिया का पुरवा मजरा सैता में महराज सरोज पुत्र राम छाया निवासी उगहिया का पुरवा उमाकान्त मौर्य पुत्र राजाराम निवासी बरई सुलेम बहरा महेन्द्र कुमार पुत्र बिहारी निवासी जलालपुर बोरियो धाना संदीपनघाट व वेद प्रकाश पुत्र कामता प्रसाद निवासी पिन्नई थाना सराय अकिल व अन्य कई लोगो द्वारा अपने घर पर तथा गांव के मैदान में गांव के भोले-भाले अनुसूचित जाति के लोगों को गुमराह कर उनकी बीमारी और समस्याओं को ठीक करने का लालच व प्रलोभन देकर तथा चमात्कार की बात बताकर 14 मई 2023 को समय करीब 02 बजे दिन में एक सभा आयोजित कर लोगो को ईसाई धर्म में परिवर्तन किया जायेगा। इस सूचना पर थाना सदीपनघाट पुलिस बल द्वारा बताये गये स्थान उगहिया का पुरवा में दबिस दी गयी जहां से चार अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया गिरफ्तार अभियुक्तों से पूछताछ से ज्ञात हुआ कि अभियुक्तगण द्वारा गांव के भोले-भाले लोगो को बीमारी ठीक करने का लालच व प्रलोभन देकर गैरकानूनी ढंग से धर्मान्तरण कराने के उद्देश्य से उत्प्रेरित करने में सक्रिय होकर सभाए आयोजित करते हुये धनार्जन करने में संलिप्त होने का साक्ष्य पाये जाने पर अभियुक्तों को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है।

मुंडन कराने कड़ा जा रहे श्रद्धालुओं के वाहन में कंटेनर ने मारी टक्कर

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। मिजार्पुर से मां शीतला के कड़ा धाम मुंडन संस्कार में जा रहे श्रद्धालुओं के वाहन में अझुवा के पास कंटेनर दे टक्कर मार दिया है हालांकि मां शीतला की कृपा से इस हादसे में किसी को चोटें नहीं आई हैं सूचना पाकर मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को मिली तो मौके पर पुलिस भी पहुंच गई है हालांकि किसी श्रद्धालु को चोटें नहीं आई हैं मां शीतला की कृपा से सभी बाल-बाल बच गए हैं सैनी थाना क्षेत्र के नगर पंचायत अझुवा के समीप स्थित ससुर खदेरी नदी के पास कंटेनर ने कड़ा धाम जा रहे श्रद्धालुओं से भरे वाहन को पीछे से टक्कर मार दिया हादसे में दर्जनों श्रद्धालु बाल बाल बचे। जानकारी के मुताबिक प्रकाश कुमार पुत्र राम सूरत निवासी गांव बछुआ थाना मिजार्पुर विंध्याचल अपने परिवार के साथ सोमवार की सुबह कड़ा धाम मुंडन संस्कार में शामिल होने के लिए जा रहे थे ड्राइवर जगदीश पुत्र राकेश यादव को रास्ता ना याद होने के कारण यह फतेहपुर पहुंच गए जब वहां उन्होंने पूछा तो वहां के लोगों ने बताया कि आप लोग बहुत आगे आ गए हैं यह वहां से वापस होकर कड़े धाम के लिऐ जा रहे थे जैसे ही अझुवा ससुर खदेरी नदी के पास पहुंचे कि हाईवे पर रखें क्रश बैरियर सीमेंटेड के साइड से गाड़ी जा रही थी तभी कानपुर से इलाहाबाद की ओर जा रही कंटेनर ने श्रद्धालुओं के वाहन में टक्कर मार दिया जिसमें कि दर्जनों लोग बाल बाल बचे शिवम और ध्रुव पुत्र मुकेश का मुंडन संस्कार कड़े धाम में होना था।

कंटेनर का टायर फटने से 2 कंटेनर में हुई जोरदार भिड़ंत

दुर्घटना के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग हुआ बाधित तीन लोग गंभीर घायल

कोखराज कौशाम्बी। राजस्थान के अलवर से कंटेनर में सामान लेकर बिहार जा रहे कंटेनर का टायर कोखराज थाने के पास फट जाने के बाद अनियंत्रित होकर कंटेनर दूसरे कंटेनर से जा टकराया दोनों कंटेनर की भिड़ंत के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग का रास्ता अवरुद्ध हो गया मामले की सूचना पाते ही मौके पर पुलिस फोर्स के साथ कोखराज थानेदार पहुंचे दो वाहनों की टक्कर की आवाज सुनकर मौके पर ग्रामीण भी पहुंच गए और काफी मशक्कत के बाद वाहन में फंसे चालक खलासी वा अन्य लोगों को बाहर निकाल कर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है जिनमें कई लोगों की हालत गंभीर बताई जाती है पुलिस ने हादसे की जानकारी घायलों के परिजनों को फोन के जरिए दे दी दुर्घटना के बाद थाना पुलिस ने वाहन में लदी सरिया को क्रेन के माध्यम से सड़क से साइड करवाया है तब सड़क का अवरोध खत्म हो सका है जानकारी के मुताबिक कंटेनर चालक मिथुन यादव उम्र 27 वर्ष पुत्र श्याम बाबू यादव निवासी छपरा बिहार कंटेनर में सामान लेकर राजस्थान प्रांत के अलवर जनपद के थाना किशनगंज कोहा से जुबेर अहमद उम्र 28 वर्ष वा उसके भाई मुकीम अहमद पुत्रगण फजरु खान के साथ जा रहे थे जैसे ही कंटेनर कोखराज थाना के पास पहुंचा अचानक कंटेनर का टायर राष्ट्रीय राजमार्ग में फट गया जिससे काटेगा अनियंत्रित हो गया और दूसरे कंटेनर से टक्कर हो गई हादसे में कंटेनर में सवार सभी लोग कंटेनर के अंदर फस गए तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस को दी गई सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने क्रेन मशीन से कंटेनर में तोड़फोड़ कर कड़ी मशक्कत के बाद वाहन में फंसे घायलों को बाहर निकाला पुलिस ने घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया जहां घायलों की हालत गंभीर बताई जाती है हादसे के बाद काफी देर तक राष्ट्रीय राजमार्ग में आवागमन बाधित रहा अन्य घायलों का नाम पता नहीं मिल सका है।

युवक पर कातिलाना हमला, हालत गंभीर

कौशाम्बी। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र में बाजार से घर लौट रहे युवक पर हमलावरों ने कातिलाना हमला कर लहूलुहान कर दिया। पुलिस ने घायल को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने पीड़ित मां की तहरीर पर आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पश्चिमशरीरा थाना क्षेत्र के धवाडा गांव की शांति देवी पत्नी प्रहलाद सिंह ने बताया कि शुक्रवार को उसका बेटा शिवम सिंह बाजार गया था। देर शाम वह बाइक से घर लौट रहा था। हजियापुर गांव के समीप पीछे से आए हमलावरों ने ओवरटेक करते हुए धारदार हथियार से प्रहार कर दिया। कातिलाना हमले में युवक खून से लथपथ होकर गिर पड़ा। इसके बाद हमलावर धमकी देते हुए भाग निकले। स्थानीय लोगों ने घटना की जानकारी कौशाम्बी पुलिस के साथ परिजनों को दी। पुलिस ने जख्मी युवक को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। जांच पड़ताल करते हुए पुलिस ने पीड़ित युवक के मां की तहरीर पर आरोपित हमलावर अनिरूद्ध सिंह निवासी चांदेराई के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

न्यूज झरोखा

परीक्षा में टॉप छात्र छात्राओं को दिया गया पुरस्कार

कौशाम्बी। जिले के मंझनपुर तहसील अन्तर्गत करारी क्षेत्र के अशाढ़ा गांव में जामिया मदारिसा मंजूरुल उलूम मदरसा में सफल छात्र छात्राओं के बीच पुरस्कार वितरण किया गया जिसके अंतर्गत 2023 की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को रिजल्ट और मेडल ट्रॉफी एवं स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय समाजसेवी एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य उम्मीदवार शमीम अहमद द्वारा सम्मानित किया गया क्षेत्रीय समाजसेवी एवं मदरसा प्रबंधक मौलाना इरफान रजा ने सभी छात्र छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की और कहा कि सभी विद्यार्थी आगे पढ़ाई निरन्तर जारी रखते हुए कुछ शिक्षा ग्रहण करें एवं बेहतर परिणाम हासिल करते हुए परिवार माता-पिता शिक्षकों प्रदेश एवं देश का नाम रोशन करें इस अवसर पर शिक्षक मकसूद हाफिज रिजवान हैदर सद्दाम हुसैन साहबान फिरदौस अहमद हुसैन शिक्षिकाएं सैफी बानो सहित ग्रामवासी मौजूद रहे।

नाबालिग से रेप के आरोपी को 10 वर्ष की सजा

कौशाम्बी। थाना करारी अंतर्गत 06.09.2020 को नाबालिक बालिका को बहला फुसला कर भगा ले जाने व उसके साथ दुष्कर्म किए जाने के सम्बन्ध में मुकदमा वादी ने करारी थाना पुलिस को सूचना दी थी, जिसके सम्बन्ध में थाना करारी में पुलिस ने मुकदमा पॉक्सो एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त कमलेश पुत्र स्व0 प्रयाग निवासी भीटी मजरा महगांव थाना पुरामुफ्ती जनपद प्रयागराज को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेजा था न्यायालय एडीजे-09 द्वारा मुकदमे की सुनवाई की गयी शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पुलिस ने पैरवी की अभियुक्त को सजा दिलाने के क्रम में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से पुलिस ने अदालत में परिस्थिति जन्य साक्ष्य उपलब्ध कराएं मुकदमे की सुनवाई करते हुए न्यायालय एडीजे 9 ने अभियुक्त को दोषी पाया और अभियुक्त को 10 वर्ष कारावास की सजा सुनाते हुए अभियुक्त को 10 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया है।

चोरी की दो बाइक के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस फोर्स द्वारा मुखबिर की सूचना पर दो अदद चोरी की मोटरसाइकिल के साथ अभियुक्त मूलचन्द्र उर्फ मुलऊ पुत्र सुखलाल उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम गुहौली थाना सराय अकिल को चित्तापुर पुलिया के पास से पुलिस ने गिरफ्तार किया है तथा एक अन्य अभियुक्त मौके से भाग गया। पकड़े गये अभियुक्त के पास से 25 अप्रैल 2023 को करन चौराहे सराय अकिल से चोरी की गयी मोटर साइकिल हिरो स्प्लेंडर (वढ 73श 4858) रंग काला व 12 मई 2023 को तिल्हापुर बाजार थाना पिपरी से चोरी की गयी मोटर साइकिल हिरो स्प्लेंडर (वढ 70 इख 7417) रंग काला बरामद कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है

30 किग्रा गौ माँस के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा तीन अभियुक्तों नगमा पुत्री रईश अहमद किस्मातुन पत्नी रईश अहमद व मो0 कामिस पुत्र मो0 फाजिल निवासीगण दरगाह कड़कशाह थाना कड़ाधाम को रईस के घर के छप्पर के नीचे से 30 किलोग्राम गौमांस के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बंध में थाना हाजा पर गौहत्या निवारण अधिनियम उत्तर1 पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

बालू लदे वाहनों से अवैध वसूली करने वाला गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना करारी पुलिस बल द्वारा मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त अभिमन्यू उर्फ मन्नू पुत्र बजरंग सिंह यादव निवासी इन्द्रानगर कस्बा व थाना करारी को मौरंग (बालू लदे वाहनों से अवैध वसूली करते हुये मुकीपुर पेट्रोल पम्प के पास से गिरफ्तार कर अभियुक्त की जामातलासी से 1150 रुपए बरामद कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

शॉर्ट-सर्किट से घर में लगी आग, सामान जला

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के पिपरहाई गांव में रविवार रात घर में शॉर्ट सर्किट होने से छप्पर में आग लग गई। ग्रामीण जब तक मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाते, तब तक घर का सारा सामान जलकर राख हो गया था। नेवादा विकास खंड के पिपरहाई गांव निवासी शंकर लाल मजदूरी करता है। रविवार रात वह खाना खाकर परिजनों के साथ मकान में सो रहा था। इसी दौरान रात में शॉर्ट-सर्किट से मकान में आग लग गई। कुछ ही देर में आग फैल गई। आग की लपटों को देख परिजन शोर मचाते हुए घर से बाहर की तरफ भागे। शोर सुनकर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। जब तक ग्रामीण आग को बुझा पाते उसके घर का सारा सामान जलकर राख चुका था। शंकर लाल के अनुसार आग से पचास बोरी गेहूं, बीस बोरी चावल, नकदी समेत गृहस्थी का सामान जलकर राख हो गया।

रेलवे लाइन के किनारे मिला महिला का शव

कौशाम्बी। पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के मनौरी रेलवे स्टेशन के समीप सोमवार सुबह रेलवे पटरी पर क्षत-विक्षत विवाहिता का शव मिला। शव की शिनाख्त कर पुलिस ने घटना की सूचना परिजनों को दी। जानकारी मिलने के बाद परिजन रोते-बिलखते बदहवास हालत में घटनास्थल पर पहुंचे। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मनौरी गांव के सामने सोमवार सुबह शौच गए लोगों ने रेलवे पटरी पर क्षत-विक्षत विवाहिता का शव पड़ा देखा। शव पड़े होने की सूचना आसपास के ग्रामीणों को हुई तो उन्होंने सूचना पुलिस को दी। थोड़ी ही देर में घटनास्थल पर काफी भीड़ जमा हो गई। लोगों ने शव की शिनाख्त रन्नो देवी (22) पुत्री रामलाल निवासी कुसवां थाना पूरामुफ्ती के रूप में की। लोगों ने सूचना पुलिस को दी। जानकारी मिलने के बाद परिजन बदहवास हालत में घटनास्थल पर पहुंचे। परिजनों के अनुसार तीन वर्ष पूर्व विवाहिता की शादी हुई थी। विवाहिता की दिमागी हालत ठीक नहीं रहती थी। एसओ उपेंद्र प्रताप सिंह का कहना है कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। तहरीर मिलने के बाद मामले में कार्रवाई की जाएगी।

युवक को कमरे में बंदकर पीटा

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बहादुरपुर गांव गए युवक को कमरे में बंदकर पीट दिया। बहाने से आरोपितों ने युवक को घर बुलाया था। मारपीट करने के बाद जान से मारने की धमकी देते हुए छोड़ दिया। पीड़ित थाने पहुंचा और मामले की नामजद शिकायत की। करारी थाना क्षेत्र के सालेपुर निवासी मुन्ना ने बताया कि सप्ताह भर पहले वह बहादुरपुर गांव गया था। इसी दौरान गांव के दस्सन ने उसे बहाने से घर पर बुलाया। जब तक वह कुछ समझ पाता आरोपित ने परिजनों व मददगारों के साथ मिल उसे कमरे में बंद कर बंधक बना लिया। इसके बाद उसे पीट दिया। पिटाई करने के बाद हमलावारों ने कहीं भी शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी और घर से बाहर निकाल दिया। घर पहुंच पीड़ित ने आपबीती परिजनों को बताई। पीड़ित की शिकायत पर जांच पड़ताल करते हुए पुलिस ने आरोपित दस्सन, अकबर, मम्मन समेत चार लोगों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

संपादकीय

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत के मायने !

कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत के बाद यह बहस राजनीतिक गलियारों में शुरू हो गई है कि क्या अगले साल होने वाले आम लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राह मुश्किल हो गई है? क्या नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता कम हो रही है? क्या कांग्रेस अब बीजेपी को हराने में सक्षम है,बीजेपी पिछले नौ सालों से केंद्र की सत्ता में है।कर्नाटक विधानसभा चुनाव जीतने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोई कसर नहीं छोड़ी थी लेकिन उनकी यह कोशिश कर्नाटक में रंग नहीं ला पाई और भाजपा वहां चारो खाने चित्त हो गई।कर्नाटक में कांग्रेस की जीत के साथ ही कांग्रेस का विपक्ष के नेतृत्व दावा मजबूत हुआ है । अगले साल लोकसभा चुनाव में बीजेपी विरोधी खेमे का नेतृत्व कांग्रेस कर सकती है।अगले साल लोकसभा चुनाव से पहले कई और राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन राज्यों में छत्तीसगढ़ व राजस्थान में कांग्रेस की सरकार है और मध्य प्रदेश में बीजेपी की सरकार है।छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में इसी साल नवंबर महीने में चुनाव होने हैं और राजस्थान में विधानसभा चुनाव दिसंबर में हो सकते है। कहा जा रहा है कि जिस तरह से मध्य प्रदेश का चुनाव बीजेपी के लिए मुश्किल है, उसी तरह से कांग्रेस के लिए राजस्थान का चुनाव आपसी गुटबाजी के कारण मुश्किल भरा हो सकता है। मिजोरम में भी नवबंर में चुनाव होने है और तेलंगाना में भी दिसंबर में चुनाव होने की उम्मीद है। लोकसभा चुनाव से पहले या उसी समय में आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और ओडिशा में भी विधानसभा चुनाव होंगे। इन राज्यों में अगले साल अप्रैल में चुनाव हैं और लोकसभा चुनाव मई महीने में हैं,इसलिए ये चुनाव एक साथ भी हो सकते है।

लोकसभा चुनाव से पहले कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की बम्पर जीत बीजेपी के लिए किसी भी लिहाज से अच्छी खबर नहीं हो सकती ।ओडिशा में नवीन पटनायक, आंध्र प्रदेश में जगन मोहन रेड्डी और तेलंगाना में के चंद्रशेखर राव काफी लोकप्रिय नेता हैं, इन तीनों राज्यों में बीजेपी की मौजूदगी किसी भी दृष्टि से प्रभावी नहीं है ऐसे में कर्नाटक के बाद इन राज्यों में बीजेपी के लिए कोई उम्मीद नही की जा सकती लेकिन यह भी सच है कि भारत के लोग विधानसभा और लोकसभा चुनाव में जनादेश अलग-अलग तरह से देते हैं। राजस्थान में सन 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को जीत मिली थी, लेकिन लोकसभा चुनाव में राजस्थान की 25 में से 24 पर बीजेपी को जीत गई थी।इसी तरह से मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के नतीजे रहे थे। हालांकि आंध्र प्रदेश, ओडिशा और तेलंगाना के विधानसभा और लोकसभा के नतीजे एक जैसे माने जाते हैं।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कर्नाटक चुनाव प्रचार के आखिर में बजरंगबली के नाम पर वोट मांगना शुरू कर दिया था।उन्होंने कई रोड शो किए लेकिन उनकी अपील काम नहीं आई। बीजेपी ने येदियुरप्पा को हटाकर बासवराज बोम्मई को मुख्यमंत्री बनाया और उनका यह दांव भी उलटा पड़ा। कर्नाटक में बीजेपी मतलब येदियुरप्पा है।सन 2012 में बीजेपी येदियुरप्पा को हटाकर अपनी हैसियत का अंदाजा लगा चुकी है, यह गलती आडवाणी ने की थी और फिर से वही गलती नरेंद्र मोदी ने दोहराई।जिसका नतीजा सबके सामने है।

भले ही कर्नाटक चुनाव के नतीजे से अगले साल आम चुनाव का आकलन न हो सकता हो, लेकिन यह तो सच है कि कर्नाटक की जनता ने नरेंद्र मोदी की हर अपील ठुकरा दिया है।बीजेपी के लिए जनता का दिया यह सबक है कि वह प्रदेश के स्थानीय नेताओं को खारिज कर लंबे समय तक चुनाव नहीं जीत सकती । यानि बीजेपी सभी प्रदेशो को हरियाणा और उत्तराखंड की तरह नहीं हाँक सकती है,जहां उसने कमजोर नेता को हार जाने के बाद भी नेतृत्व सौंप दिया था।

उत्तराखंड में बीजेपी ने पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा चुनाव हारने के बाद भी उन्हें मुख्यमंत्री बना दिया था।वही कांग्रेस की यह जीत संदेश दे रही है कि बीजेपी को भी हराया जा सकता है। कर्नाटक के चुनावी नतीजो के बाद सन 2024 के आम चुनाव का मैदान खुल गया है। कांग्रेस की जीत यह भी बता रही है कि सांप्रदायिकता चुनाव जीतने की गारंटी नहीं है,बल्कि धर्मनिर्पेक्षता से ही हम स्थायी रूप से आगे बढ़ सकते है। इसीलिए हम कह सकते है कि कर्नाटक ने बीजेपी को अपमानजनक हार दी है और यह कर्नाटक की स्थानीय बीजेपी से ज्यादा निजी तौर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की हार कही जा सकती है। क्योंकि कर्नाटक में बीजेपी ने नरेंद्र मोदी को चेहरा बनाया था और स्थानीय नेतृत्व को किनारे रखा था। दूसरी ओर कांग्रेस की ओर से गांधी परिवार नेपथ्य में था और डीके शिवकुमार के साथ सिद्धरमैया बिल्कुल फ्रंट पर थे।

विश्व में भारतीय परिवार जितनी पवित्रता, स्थाईपन अन्य किसी समाज में नहीं

एडवोकेट किशन भावनानी

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर दुनियां के देश अच्छे से जानते हैं कि भारत में परिवार और रिश्तो को बहुत सम्मान और महत्व दिया जाता है,जिसका अस्तित्व सैकड़ों देशों में रह रहे मूल भारतीयों की रग रग में भी समाया है, जो सात समंदर पार रहकर भी परिवार और रिश्तो के महत्व को निभाते हैं। यही कारण है कि 15 मई 2023 को अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस भारत में शिद्दत और सम्मान के साथ मनाया गया और दुनिया के कोने कोने से वर्तमान डिजिटल युग में अपने परिवार वालों से वीडियो कॉलिंग से बात कर परिवार को एकजुटता की बधाई दी और भारत में रहने वालों ने भी रविवार होने से परिवार दिवस का लुत्फ बड़ी शिद्दत के साथ उठाया और परिवार के साथ घूमकर,वातार्लाप कर, घर में पारिवारिक फंक्शन कर एक दूसरे की खुशियों में शरीक हुए तथा अन्य शहरों में जॉब करने वाले पारिवारिक सदस्य भी इस दिन अपने घर परिवार से मिलने फ्लाइट, ट्रेन या निजी साधनों से अपने शहर गांव आकर परिवार से मिलकर अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस को मना कर बहुत इंजॉय किए। इसलिए आज हम इस खुशियों के यादगार बीते दिन पर इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, परिवार के अभाव में मानव समाज के संचालन की कल्पना असंभव है।

साथियों बात अगर हम परिवार की करें तो, परिवार मानव समाज की एक बुनियादी तथा सार्वभौमिक इकाई हैपरिवार के अंतर्गत माता पिता, पति पत्नी और उनके बच्चों का समूह माना जाता है। परिवार सामाजिक जीवन की निरंतरता, एकता एवं विकास के लिए आवश्यक कार्य करता है। प्रत्येक समाज में परिवार ही शिशु के जन्म और भरण पोषण का दायित्व निभाता हैं। परिवार का प्रमुखउत्तरदायित्व है शिशु को संस्कार देना और समाज के आचार व्यवहार और नियमों में दीक्षित करना।परिवार से ही परिवार के सदस्यों की सामाजिक मयार्दा और सीमा निर्धारित होती है। परिवार चाहे पितृ सत्तात्मक हो या मातृ सत्तात्मक, एक परिवार में पति- पत्नी को अतिरिक्त सदस्यता प्रदान की जाती है। युगल या एकाकी

परिवार में पति, पत्नी मिलकर अपनी अलग घर-गृहस्थी बसाते हैं। परंतु अधिकांशत: का समाज में परिवार वृहत्तर कौटुंबिक समूह का अंग ही माना जाता है। अमेरिका जैसे उद्योग प्रधान देश में युगल या एकल परिवार की बहुलता है। वहां संयुक्त एवं बड़े परिवार ना के बराबर है। संयुक्त परिवारों में पति, पत्नी के अतिरिक्त उनके विवाहित बच्चे और उनकी संतान, विवाहित भाई-बहन और उनके बच्चे एक साथ रह सकते हैं।

साथियों बात अगर हम भारतीय परिवार की करें तो भारतीय परिवार में परिवार की मयार्दा और आदर्श परंपरागत है। एक गृहस्थ जीवन की जितनीपवित्रता, स्थाईपन और पति-पत्नी पिता-पुत्र और भाई- बहन के जितने अधिक व स्थाई संबंधों का उदाहरण भारतीय परिवार में है, विश्व के अन्य किसी समाज में नहीं है। भारतीय परिवार में विभिन्न क्षेत्रों, धर्म, जातियों में संपत्ति के अधिकार, विवाह और विवाह-विच्छेद की प्रथा की दृष्टि से कई अंतर पाए जाते हैं लेकिन फिर भी संयुक्त परिवार का आदर्श भारत मेंसर्वमान्य है। साथियों बात अगर हमअंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 2023 की थीम की करें तो,यूएन की थीम परिवार और जनसांख्यिकी परिवर्तन, जिसका मकसद जनसंख्या में होने वाले महत्वपूर्ण बदलाव और परिवारों पर उनके प्रभाव को लेकर ध्यान केंद्रित करना है।अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस का मकसद परिवार के महत्व पर जोर देना है। आज की दुनिया में अधिकतर लोग अपने घर और परिवार से दूर रहते हैं। ऐसे में अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस का महत्व और भी बढ़ जाता है। परिवारों के महत्व को याद दिलाने के लिए हर साल 15 मई को अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस मनाता है। ये परिवार ही हैं, जो समाज की नींव होते हैं।आज की दुनिया मेंअधिकतर लोग अपने घर और परिवार से दूर रहते हैं। ऐसे लोगों से जब उनके जिंदगी के सबसे खूबसूरत दिनों के बारे में पूछा जाता है, तो वे अपने जीवन के शुरूआती सालों के सबसे अच्छा बताते हैं, जब वे अपने परिवारों के साथ रहा करते थे। ये हमारा परिवार ही है, जो हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होना चाहिए और इसलिए उनके महत्व को निरंतर याद रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस मनाना चाहिए।

साथियों बात अगर हम परिवार दिवस को रोज, साप्ताहिक, मासिक मनाने की करें तो, माता-पिता के रूप में, हम अपने बच्चों को जीवन में सबकुछ सर्वश्रेष्ठ देना चाहते हैं और निरंतर इसी कोशिश में जुटे रहते हैं। वहीं कई अध्ययनों से पता चलता है कि पारिवारिक माहौल का बच्चे की सफलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एक पारिवार में जितना सकारात्मक और स्थिर वातावरण होता है,बच्चों केमानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ होने की संभावना उतनी ही अधिक होती है। अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस को मनाने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम उन सामाजिक, आर्थिक और जनस-ांख्यिकीय मुद्दों के बारे में जानें, जो दुनिया भर के परिवारों को प्रभावित करते हैं और हम खुद को किस तरह से इन परिस्थितियों में मजबूत बना सकते हैं। इस दिवस पर, हमको और हमारे परिवार को अपनी सभी परंपराओं का जश्न मनाना चाहिए, जिन्हें सालों से हम अपने पूर्वजों को करते हुए देखते आए हैं। ऐसी कई कहानियां, यादें और अनुभव साझा करें, जिन्हें आप अपने परिवारों के साथ बिताते आए हैं जो इस वर्ष कई लोगों ने किए। कुछ लोग जिंदगी के सबसे महत्वपूर्ण पहलू यानी परिवार को ही सबसे ज्यादा हल्के में लेते हैं। इसलिए इस दिन का उपयोग अपने माता-पिता, भाई-बहनों और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ उनकी प्रशंसा करके मनाएं। क्योंकि ये हमारा परिवार ही है, जिन्होंने समय-समय पर हमको ढेर सारा स्नेह और समर्थन दिया है। 2023 का अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस परिवारोंपरजनसांख्यिकीय रुझानों के प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया गया।परिवारों पर जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों का प्रभाव पर पृष्ठभूमि पत्र का विमोचन हुआ। वर्ल्ड सोशल रिपोर्ट 2023 की प्रस्तुति लीविंग नो वन बिहाइंड इन ए एजिंग वर्ल्ड,इंटरजेनरेशनल इक्विटी और एकजुटता पर प्रस्तुति हुई, जनस-ांख्यिकी प्रवृत्तियों के जवाब में नीतियों की सिफारिशों का अवलोकन आईटवाईएफ+30 के लिए नागरिक समाज की पहल की प्रस्तुति हुई।दर्शकों की भागीदारी के साथ इंटरएक्टिव चर्चा हुई।

साथियों बात अगर हम परिवार के महत्व की करें तो, एक व्यक्ति के जीवन में परिवार का अपना अलग महत्व होता है। भारत समेत दुनिया में ऐसे कई देश मौजूद हैं, जहां आज भी फैमिली कल्चर फॉलो किया जाता है। दुख-सुख हो या जीवन का कोई कठिन पड़ाव परिवार का साथ एक व्यक्ति को आगे बढ़ने की हिम्मत देता है। जीवन में परिवार की इसी अहमियत के प्रति लोगों को जागरूक करने से मकसद से हर साल मई में परिवार दिवस मनाया जाता है।यह दिन समाज के लिए परिवार के महत्व पर जोर देता है। अगर हमारा परिवार मजबूत होगा तो हमारी संस्थाएं और समुदाय भी मजबूत होंगे। एक खुशहाल परिवार एक वास्तविक दुनिया का उदाहरण भी प्रदान करता है कि कैसे मानव परिवार दुनिया को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम कर सकता है। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। मानव समाज के संचालन की कल्पना परिवार के अभाव में असंभव है। एक समाज में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी परिवार का सदस्य होता है। परिवार से अलग एक व्यक्ति का कोई अस्तित्व नहीं होता।

कृषि के नये अध्यायों में आत्मनिर्भर भारत की बुनियाद

ललित गर्ग

भारत में उन्नत कृषि की नई इबारत लिखी जा रही है। आत्म-निर्भर भारत की बुनियाद बनाने में कृषि आधार होगी। कृषि के माध्यम से ही भारत दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनने को तत्पर है। वैश्विक स्तर पर भारत की कृषि एक अनुकरणीय उपक्रम बन रही है, भारत कृषि नेतृत्वकर्ता एवं मार्गदर्शक की भूमिका में आ रही है। नौ वर्ष के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शासन में भारत के उत्कर्ष, नव उदय और उत्थान के अनेक स्वर्णिम अध्याय लिखे गये हैं, इन 9 वर्षों में देश के समग्र विकास और समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक के कल्याण के लिए जो कदम उठाए गए हैं, वे स्तुत्य हैं। कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। हमारी 70 फीसदी ग्रामीण आबादी कृषि या उससे जुड़े अन्य कार्यों से अपनी आजीविका चलाती है। ऐसे में उन्नत खेती एवं किसानों के कल्याण के लिये सरकार ने व्यापक प्रयत्न किये हैं और इन प्रयत्नों की पारदर्शिता एवं निरन्तरता जरूरी है। कृषि और किसान कल्याण मंत्री के रूप में नरेन्द्र सिंह तोमर के नेतृत्व में भारतीय कृषि ने अनूठे नये अध्याय रचे हैं। वर्तमान सरकार ने कृषि को सर्वाधिक महत्व दिया है। अवसर और संसाधन तो पूर्ववर्ती सरकारों को भी पर्याप्त मिले थे, लेकिन परिणाम निराशाजनक ही रहे। कृषि कभी भी उनकी प्राथमिकता का क्षेत्र नहीं रहा। कृषि का प्राथमिकता के क्षेत्रों में आना सुदृढ़ एवं शक्तिशाली भारत का द्योतक है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) दुनिया का सबसे बड़ा व व्यापक अनुसंधान संस्थान है। संस्थान की अब तक की प्रगति प्रशंसनीय है। चाहे उत्पादन के लक्ष्य को प्राप्त करना हो,

उत्पादकता बढ़ानी हो या जलवायु अनुकूल फसलें उत्पन्न करने की चुनौती हो, हर क्षेत्र में हमारे कृषि वैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्राचीन काल में परंपरागत खेती के बाद कृषि के क्षेत्र की प्रगति में किसानों के परिश्रम के साथ ही वैज्ञानिकों का अनुसंधान मील का पत्थर साबित हुआ है। अब तक यह यात्रा संतोषजनक रही है, लेकिन देश को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाने के लिए वर्ष 2047 तक अमृत काल में कृषि की चुनौतियों का समाधान, उन पर विजय प्राप्त करने का सरकार का लक्ष्य निश्चित ही सराहनीय है।

विगत 9 वर्षों में कृषि क्षेत्र में किए गए भगीरथी प्रयासों के परिणाम अब स्वतः ही दृष्टिगोचर होने लगे हैं। जहां वर्ष 2013-14 में कृषि के लिए बजट में मात्र 21933 करोड़ रुपए था, वहीं इस वर्ष 2023-24 के बजट में 1 लाख 25 हजार करोड़ रुपए की धनराशि का प्रावधान कृषि के लिए किया जाना सरकार की दूरगामी सोच को दशार्ता है। 2019 में शुरू की गई प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का उद्देश्य हर किसान को प्रति वर्ष 6 हजार रुपए के रूप में ऐसा आर्थिक संबल दिया जा रहा है, जिससे न केवल किसान प्रतिकूल समय में कर्ज के जाल में फंसने से बच सके, बल्कि इस धनराशि से समय पर खाद-बीज की व्यवस्था भी कर सके।

अन्याय क्षेत्रों के साथ कृषि क्षेत्र में भारत का वर्चस्व दुनियाभर में बढ़ रहा है, इसके साथ ही दुनिया भर की अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं। 2047 तक नए भारत को गढ़ने का लक्ष्य है। नए भारत के लिए नया विज्ञान, अनुसंधान, नया कौशल तथा नया इनोवेशन चाहिए क्योंकि आने वाला कल नए भारत का है। इसके लिए श्री नरेंद्र मोदी की सरकार नित-नए मंत्रों के आधार पर काम कर रही है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास मोदी का मूलमंत्र है, किसी को न छोड़ते हुए लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते जाना। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री लाल बहादुर शास्त्री ने नारा दिया था- जय जवान, जय किसान। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसमें विज्ञान को जोड़ा और मोदी ने इसमें अनुसंधान भी जोड़ दिया है। भारत की कृषि के लिए यह मंत्र बन गया है- जय जवान जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान। कृषि उत्पादों की दृष्टि से उल्लेखनीय तरक्की हुई है, भारत ने 4 लाख करोड़ रु. से अधिक का निर्यात किया है, जो अब तक का सबसे अधिक है। प्राकृतिक खेती व जैविक खेती पर बल देने के कारण इस तरह के उत्पाद दुनिया में और भी ज्यादा लोकप्रिय होने वाले हैं। जिससे भविष्य में निर्यात और बढ़ेगा, इसके लिये जरूरी है कि कृषि उत्पादन की गुणवत्ता वैश्विक मानकों पर खरी उतरने वाली हो, इस पर विशेष ध्यान देना होगा। प्राकृतिक खेती पर सरकार का बल है। प्रधानमंत्री श्री मोदी का आग्रह है कि हम प्राकृतिक खेती यानी गाय आधारित खेती करें। वेस्ट टू वैल्थ का काम हो। हमारे उत्पादों की गुणवत्ता और सुरक्षा भी अधिक रहे। निश्चित ही प्राकृतिक खेती अब भारत की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति के अंतर्गत 8 राज्यों आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, केरल, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, मध्यप्रदेश व तमिलनाडु में 4.09 लाख हेक्टेयर क्षेत्र कवर किया गया है। सरकार प्राकृतिक खेती को जन आंदोलन बनाने की राह पर हैं और राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के अंतर्गत देश के 1 करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं। मोदी का यह मिशन मृदा, किसान, कृषि और आमजन सभी के लिए हितकारी साबित होगा, इससे किसानों की समृद्धि बढ़ेगी एवं कृषि का क्षेत्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण होगा।

संपूर्ण दुनिया की खान-पान से जुड़ी विसंगतियों और उनसे उपजती स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निदान की दिशा में भारत सरकार की पहल पर संयुक्त राष्ट्र का वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित किया गया है। श्रीअन्न यानी मिलेट के उत्पादन, संवर्धन एवं विकास में भारत की अगुवाई बेहद महत्त्वपूर्ण कदम है। श्रीअन्न यानी मोटे अनाज को जनआंदोलन बनाने से जहां हमारी खाद्य विसंगतियों में सुधार आएगा, वहीं पोषण में भी सुधार होगा। साथ ही छोटे और मझोले किसानों के लिए भी श्री अन्न की खेती वरदान साबित होगी। कम पानी में होनी वाली ये फसलें बहुत उपयोगी साबित होंगी। मोदी ने ही मोटे अनाज की उपयोगिता को उजागर किया है, जिससे दुनियाभर में मोटे अनाज के लिये लोगों का आकर्षण बढ़ रहा है, भारत के योग एवं अहिंसा की ही भांति मोटे अनाज से दुनिया में भारत एक नयी पहचान बनाने के लिये अग्रसर है।

देश के समग्र और संतुलित विकास को आगे बढ़ाया जा रहा है। जब समग्र विकास की बात करें तो कृषि का क्षेत्र देश के बैकबोन की तरह होना ही चाहिए। जलवायु परिवर्तन जैसी विभिन्न समस्याएं, किसानों की खड़ी फसलों में प्राकृतिक प्रकोप से नुकसान होने की चुनौती जैसे जटिल हालातों में नए भारत में कृषि की नई टेक्नालॉजी, नए अनुसंधान से कृषि एवं किसानों को जोड़ना हमारी प्राथमिकता होनी ही चाहिए। किसानों की आमदनी भी बढ़नी चाहिए, उनके घर में समृद्धि दिखे तथा गांवों को और कृषि क्षेत्र को समृद्ध किया जाये, तभी भारत वास्तविक रूप में नया भारत बन सकेगा।

प्रेषकः

प्रवासी पेशेवर भारतीय भरते भारत का खजाना

आर.के. सिन्हा

अब लगभग हर रोज मीडिया में भारत से बाहर बसे या काम करने भारतीयों की उल्लेखनीय उपलब्धियों पर खबरें होती हैं। विश्व बैंक का अध्यक्ष बनने से लेकर किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री, सांसद वगैरह बन रहे हैं भारतीय। पर बात यहां तक ही सीमित नहीं है। संसार के कोने-कोने में रहने वाले भारतीयों ने अपने देश के खजाने को अपने पैसे से लबालब भर दिया है। रिजर्व बैंक के फरवरी, 2023 तक के आंकड़े बता रहे हैं कि रिजर्व बैंक का एनआरआई डिपाजिट 136 अरब रुपये हो चुका है। एनआरआई का मतलब है नॉन रेजीडेंट इंडियन या अप्रवासी भारती?। यानी वे लोग जो कामकाज के लिए देश से बाहर चल गए हैं। तो साफ है कि भारत से बाहर गए हुए लगभग तीन करोड़ भारत वंशी तथा एनआरआई अपने वतन को खुशहाल करने का ठोस काम कर रहे हैं। इसलिए यह समझना गलत होगा कि वे भारत से बाहर जाकर भारत को भूल जाते हैं। नहीं, यह बात नहीं है। वे कहीं भी चले जाएं, पर वे रहते भारतीय ही हैं। उनकी पहचान भारतीय के रूप में ही होती है। वे भी गर्व करते हैं कि उन्हें भारत से बाहर बसने के सालों, दशकों तो छोड़िए, कई पीढ़ियों के बाद भी भारतीय ही माना जाता है। एक बार केन्या के हॉकी के महान खिलाड़ी अवतार सिंह सोहल बता रहे थे कि अफ्रीका में 125 से भी ज्यादा सालों से भारतीय बसे हुए हैं। अब वहां उनकी चौथी-पांचवीं पीढ़ी आबाद है। अफ्रीका से अनेक भारतीय परिवार यूरोप, कनाडा, अमेरिका वगैरह भी जाकर बस गए। पर वे जहां भी जाते हैं वे अपने को भारतीय ही बताते हैं। सोहल ने केन्या का चार ओलंपिक खेलों में प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने चंडीगढ़ में एक फ्लैट भी खरीदा हुआ है। कुछ अफ्रीकी देशों में बसे हुए भारतीय संकेतों में कहते हैं कि अगर कभी संकट पैदा हुआ तो वे भारत का रुख कर सकते हैं। इसलिए वे भारत में भी अपने संपत्ति रख लेते हैं।

यह कहना होगा कि भारत की मजबूत आर्थिक सेहत के लिए हमारे उन अनाम भारतीयों का भी कम बड़ा योगदान नहीं है जो हर साल भारत में पैसा भेजते हैं। आमतौर पर तो अखबारों में उन्हीं की चर्चा होती है जो बहुत बड़े इनवेस्टर होते हैं। आप देखेंगे कि कोई भी राज्य सरकार जब अपने यहां निवेश आमंत्रित करती है तो उसकी निगाहे बड़ी कंपनियों पर ही रहती है। मानता हूँ कि उनका निवेश भी जरूरी होता है। पर अगर अपने देश के नागरिक ही अपने देश में निवेश करें तो आनंददायक रहता है।

असली बात यह है कि देश में पैसा आना चाहिए। पैसा चाहे अमेरिका की सिलिकॉन वैली में काम करने वाले भारतीय आई टी इंजीनियर भेज रहे हों या फिर दुबई या खाड़ी के किसी भाग में काम करने वाले कुशल-अकुशल मजदूर। भारत में धन की आवक अमेरिका से लेकर खाड़ी देशों में बसे हुए भारतीयों की मार्फत खूब हो रही है। यह तो सबको पता ही है कि भारत के बाहर से पैसा आने से देश में इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर करना संभव हो पाता है।

ये भी ध्यान रखा जाए कि भारतवंशियों या एनआईआई के लिए भारत एक भौगोलिक वास्तविकता मात्र नहीं है। सिखों के लिए भारत उनका गुरुधर है। यही स्थिति बौद्धों और जैन धर्मावलम्बियों के साथ भी हैक सनातनी हिंदुओं तो भारत के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता है। इसलिए इनकी भारत के प्रति निष्ठा बनी रहती ही है। भारत सिखों के लिए एक पवित्र भूमि है।

शेष भारतवंशियों के संबंध में भी कमोबेश यही कहा जा सकता है। माफ करें हाल के कुछ समय में कुछ सिरफिरे खालिस्तानी तत्वों की हरकतों को बहुसंख्यक सिखों का नाम मात्र का भी समर्थन प्राप्त नहीं है। इसी तरह से मुसलमानों की निष्ठा भी भारत को लेकर असंदिग्ध है। भारत का आम मुसलमान पाकिस्तान के नाम पर तौबा करता है। हां, कुछ मुसलमान अब भी वक्त के साथ अपन को बदलने को तैयार नहीं हैं। आप कभी ईद से पहले दिल्ली, मुंबई या केरल के किसी एयरपोर्ट का नजारा जाकर देखिए। वहां पर आपको खाड़ी के देशों से वापस आते हजारों मुसलमान मिलते हैं। ये सब अपने घर वालों और इष्ट मित्रों के साथ ईद मनाने आ रहे होते हैं। देखिए भारतीय अफ्रीका, कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन वगैरह में बसने के बाद भी अपने को भारत से दूर नहीं कर पाते। भारतीय अपने खानपान तथा वेशभूषा के स्तर पर भी सदा भारतीय ही बने रहते हैं। दिवाली और होली, शादी समारोह आदि अवसरों भारतीय महिलाएं आमतौर पर साड़ी ही पहनती हैं। इनके घरों में ज्यादातर भारतीय व्यंजन ही पकते हैं। लेकिन, ये जिधर जाकर बसे वहां की भाषा, खानपान और वेशभूषा को भी आसानी से अपना लेते हैं।

चिपकाऊ लेखक

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

एक सीधे-सादे लेखक को एक नारियल पकड़ाते हुए फोटो खिंचवाना और फिर उसे सोशल मीडिया पर डाल देना बताता है कि बंदे के अंदर अब सहिष्णुता की क्षमता उफान पर है, उसे यह समझ नहीं आता कि वह उसका क्या करे। नारियल सिर पर फोड़े या घर वालों को फोड़ने को दे समझ नहीं आता। घर वाले इस उम्मीद से झोला देखने की कोशिश करते हैं कि उसमें से उनके काम की कोई चीज निकल आए।

पता चला कि साहब बदले में और दो-चार पुस्तकें उठा लाएँ। एक बार के लिए आदमी कोरोना वायरस से ठीक हो सकता है किंतु पुस्तकों की लेन-देन से कभी नहीं। अब इस बीमारी को पालने के लिए एक अदद पुरस्कार तो बनता ही है। यह पुरस्कार सिर्फ इसलिए नहीं कि उसने यह बीमारी पाल ली है, और इसलिए भी नहीं कि बड़े साहस के साथ उस बीमारी को झोला में साथ ले आया है, बल्कि पुस्तक लेन-देन बीमारी में खुद को झोंक दिया बल्कि इसलिए भी कि उसने एक अदद पुस्तक से पता नहीं कितने लोगों का दिमाग खराब किया है। यह करिश्माई हुनर सिर्फ चिपकाऊ लेखकों के पास है। इसीलिए साल के 365 दिन कहीं न कहीं पुरस्कार बाँटने का पर्व चलता रहता है। इसीलिए कुकुरमुत्तों की तरह लेखक पनप रहे हैं।

पुरस्कार एक तरह से सम्मान है। चिपकाऊ लेखकों के जीवन में सम्मान का विशिष्ट महत्त्व होता है। इस नश्वर संसार में एक सम्मान ही तो है जिसके कारण मरने के बाद भी अपने नाम के जीवित रहने के सुख से आनन्दित रहा जा सकता है। एक सम्मान की खातिर ही हम खेतों की मेड़ को लेकर या तुच्छ नाली के बहाव को लेकर भिड़ जाते हैं। इसीलिए चिपकाऊ लेखकों का सम्पूर्ण जीवन पुरस्कार रूपी सम्मान के इर्द-गिर्द ही घूमता है। पुरस्कारों के औचित्य के मूल में यही सम्मान है। वैसे तो हर क्षेत्र में पुरस्कारों की खास माँग रहती है, पर साहित्य सृजन और जनसेवा की फील्ड में इसका जबरदस्त स्कोप है। ओढ़ाने वाली शाल, माला और राशि इसके आवश्यक तत्त्व हैं। इनके बिना पुरस्कार की क्रियाविधि सम्पूर्ण नहीं मानी जाती है, इसलिए कई बार जब पुरस्कार प्रदाता के पास देने के नाम पर सिर्फ अपने कर-कमल ही होते हैं, पुरस्कार प्राप्तकर्ता को यह व्यवस्था स्वयं के प्रयासों से जुटानी पड़ती है।

एंटी रोमियों टीमों ने महिलाओं को किया जागरुक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर महिलाओं एवं बालिकाओं में सुरक्षा एवं विश्वास का माहौल कायम करने को जारी अभियान मिशन शक्ति के तहत जिले के विभिन्न थानों की एंटी रोमियो टीमों ने विभिन्न मन्दिरों, बाजार, स्कूलों, बस स्टैण्ड, गांवों आदि स्थानों में जाकर पडताल की।

सोमवार को एंटी रोमियो टीमों ने भ्रमण कर जांच पडताल की। छात्राओं/महिलाओं को उनकी सुरक्षा व सहायता को शासन से चलायी जा रही विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों की जानकारी दी। महिलाओं व छात्राओं को बताया कि 1090 वीमेन पॉवर लाइन, 181 महिला हेल्पलाइन, 108 एम्बुलेंस सेवा, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112 पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098 चाइल्ड लाइन, 102 स्वास्थ्य सेवा तथा थानो पर स्थापित महिला हेल्पडेस्क के बारे में विस्तार से बताया। एंटी रोमियो टीमों ने महिलाओं/बालिकाओं को जागरूक कर पम्पलेट बांटे। पम्पलेट को सार्वजनिक स्थानों पर चस्पा भी किया।

दो के कब्जे से 25 क्वार्टर देशी-40 लीटर महुआ शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो लोगों के कब्जे से 25 क्वार्टर देशी व 40 लीटर महुआ शराब व शराब बनाने के उपकरण तथा 40 किलो लहन बरामद किया है।

सोमवार को सरधुआ थाने के दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने राजकरन पुत्र धनराज निवासी खेरीपुरवा मजरा अरछा बरेठी के कब्जे से 40 लीटर महुआ शराब व शराब बनाने के उपकरण एवं 40 किलो लहन समेत गिरफ्तार किया है। बरामद लहन को मौके पर नष्ट किया गया। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, सिपाही दिनेश सिंह, महिला सिपाही रचना प्रजापति शामिल रहे।

इसी क्रम में सीतापुर चैकी के दरोगा शौकत खां की टीम ने धर्मेन्द्र प्रसाद गुप्ता पुत्र विजय प्रसाद निवासी राघवपुरी के कब्जे से 25 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ कोतवाली कर्वी में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा शौकत खां, सिपाही सुभम शर्मा, सिपाही सोमदेव शामिल रहे।

ससुराल में अधेड ने खाया जहर, मृत्यु, पुत्रियों की शादी में हो गया था कर्जदार

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। इलाज दौरान जिला अस्पताल में जहरीला पदार्थ खाने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई। कसहाई गांव के अनुसुइयापुरवा निवासी मुन्ना (50) पुत्र रामलाल की ससुराल में हालत खराब होने पर परिजन उसे आनन-फानन में जिला अस्पताल ले गये। जहां उसकी मृत्यु हो गई।

सोमवार को जहरीला पदार्थ खाने से अधेड की मृत्यु की बाबत चचरे भाई बाबूलाल ने बताया कि मृतक मुन्ना लाल की पत्नी भोला देवी ससुराल में थी। उससे मिलने को वह ससुराल गया था। ससुराल में जहरीला पदार्थ खाने से हालत खराब होने पर ससुरालीजनों ने इलाज को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। वहां उसकी मृत्यु हो गई। मृतक के दो पुत्र व दो पुत्रियां हैं। पुत्रियों की शादी करने से वह कर्जदार हो गया था। इससे वह मानसिक रूप से परेशान रहता था।

कोतवाली प्रभारी गुलाबचंद्र त्रिपाठी ने बताया कि परिजनों ने बीमारी से उसकी मृत्यु होने की बात कही है। पीएम रिपोर्ट आने पर ही मृत्यु की बाबत सही जानकारी होगी।

पिछडा वर्ग के लोगों को मिलेगा प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। उप आयुक्त उद्योग एसके केशरवानी ने बताया कि जिले के अन्य पिछड़ा वर्ग के बेरोजगार व्यक्तियों को उद्योग विभाग से व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाना है। प्रशिक्षण का ट्रेड कम्प्यूटर टैली एकाउण्टेन्सी है। सोमवार को उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण के लिये 18 से 45 वर्ष के मध्य आयु होनी चाहिए। न्यूनतम शैक्षिक योग्यता जूनियर हाईस्कूल निर्धारित है। जिले के अन्य पिछड़ा वर्ग के ऐसे अभ्यर्थी पात्र होंगें जो क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनो व बाजार के मद्देनजर नये उद्यमी के बतौर कार्य करने के इच्छुक हैं।

इच्छुक अभ्यर्थी इस प्रशिक्षण को पांच जून तक आवेदन आनलाइन कर सकते हैं। अधिक जानकारी को सहायक प्रबन्धक विकास कुमार के मो 7838587680 पर सम्पर्क कर सकते है।

यूपी में समाजवादी पार्टी का पतन रोकने में विफल अखिलेश

लखनऊ। एक ऐसी पार्टी के लिए जो बार-बार उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ भाजपा के लिए एक विकल्प प्रदान करने का दावा करती है, विधानसभा, लोकसभा और उपचुनावों में लगातार हार, राज्य में मुख्य विपक्षी दल समाजवादी पार्टी के भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी (सपा) शनिवार को मेयर पद की 17 में से एक भी सीट नहीं जीत सकी और स्वार विधानसभा सीट को भी बरकरार रखने में नाकाम रही। अपना दल (एस) से छानबे सीट जीतने में भी सपा नाकाम रही।

सपा 2017 से हार रही है, जब अखिलेश ने अपने पिता स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव से तख्तापलट में सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ले ली थी। पार्टी 2017 के विधानसभा चुनावों में बुरी तरह हार गई और मुश्किल से 47 सीटों के साथ रह गई थी। सपा ने कांग्रेस के साथ गठबंधन में विधानसभा चुनाव लड़ा था और दोनों दलों को हार का सामना करना पड़ा था।

भाकपा की राष्ट्रव्यापी पदयात्रा पर सौंपा ज्ञापन

जिला सचिव ने भाजपा पर लगाये आरोप

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाकपा के राष्ट्रीय आवाहन पर जिला कौंसिल के दर्जनों साथियों ने पार्टी कैंप कार्यालय से जिला सचिव का अमित यादव एड की अगुवाई में मंहगाई कम करो, बेरोजगारों को रोजगार दो, बुल्डोजरगीरी बन्द करो, दलितों, महिलाओं का उत्पीडन बंद करो, निजीकरण बन्द करो, इंकलाब जिंदाबाद, सीपीआई जिंदाबाद के नारे लगाते हुए तहसील मुख्यालय पहुंचे। यहां प्रदर्शन जुलूस सभा में बदल गया। सभा की अध्यक्षता का राजेन्द्र कुमार ने की।

सोमवार को भाकपा के जिला सचिव का अमित यादव ने कहा कि भारत का संविधान जाति, धर्म, लिंग, भाषा के आधार पर किसी भी वर्ग में भेद नहीं करता है, लेकिन आज कल जाति, धर्म, लिंग और भाषा के आधार पर ही बीजेपी/आरएसएस की सत्ताधारी सरकार आदमी-आदमी और महिला-महिला के बीच खाई बढ़ाने की पुरजोर कोशिश में जुटी है। प्रदेश के नगर निकाय चुनाव में प्रदेश सरकार की रिजर्वेशन विरोधी नीति स्पष्ट हो गई थी। सुप्रीम कोर्ट के दखल पर भाजपा के नेतागण और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ रिजर्वेशन को ही समाप्त करवा देना चाहते हैं। संविधान और देश के कानून ने जो हजारों साल वंचित रहे लोगों को स्थान दिया था, उसे छीन लेना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी के आंकड़े से ही आजीविका का संकट साफ हो जाता है। हकीकत में श्रम भागीदारी दर और लोगों की आय से समझी जा सकती है। नीति आयोग ने बहुआयामी गरीबी सूचकांक में गरीबी रेखा के नीचे प्रदेश में 37.79 फीसद लोग संकटमय स्थिति में है। का राजेन्द्र कुमार ने कहा कि मंहगाई निरन्तर बढ़ रही है। एक तरफ देश के धनपति दुनिया के सबसे अमीर लोग हो गए हैं तो दूसरी तरफ 45 फीसदी से अधिक जनता गरीबी की रेखा के नीचे पहुंच गई है।

सभा प्रदर्शन के बाद राष्ट्रपति सम्बोधित 27 सूत्री ज्ञापन उप जिला मजिस्ट्रेट कर्वी को सौंपा। प्रदर्शन व ज्ञापन देने में का अनिल प्रजापति, बसंत लाल, श्यामलाल, बच्ची देवी, दिनेश, शिवबरन, हनुमान, बृजभूषण, अभिलाष, राहुल, अरुण राजपाल, रेवती रमण, सोनू, मनीराम, दिनेश, बृजेश, राकेश, शिवम, मनवा, सूखी लाल, देवी प्रसाद, धर्मेंद्र, शिव गुलाम समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

शंकर विवाह का कराया दिव्य अवलोकन

नौ दिन की कथा सुना रहे अनुज शास्त्री

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कामतानाथ की तलहटी के बिहारा गांव में पेरातीर हनुमान मंदिर प्रांगण में श्री रामेश्वर भोलेनाथ मंदिर में श्रीराम कथा जनकल्याण के लिए भोलेराम शुक्ला करा रहे हैं। श्रीराम कथा के दूसरे दिन कथावाचक अनुज शास्त्री ने रामचरितमानस सुनने और बताए मार्ग के अनुसरण का महत्व बताया।

सोमवार को कथावाचक ने कहा कि जीवन के हर संशय का समाधान श्रीराम कथा करती है। रामचरितमानस में नौ दिन में नौ प्रश्न हैं। निर्गुण ब्रह्म सगुण कैसे हो गया, राम जन्म का कारण क्या है। प्रभु के बाल्यकाल की लीला, विवाह लीला, वनगमन लीला और राक्षसों के मारने का प्रयोजन। अयोध्या में रामराज्य अभिषेक और संतों का चरित्र। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर नौ दिन में दिए जाते हैं। शास्त्री ने कहा कि भक्त के हृदय में भगवान आए तो आंसू आए बिना रह नहीं सकते। भगवान का सुमिरन करते रहिए। हृदय में विकारों का जो खारा जल भरा है, बाहर निकलना चाहिए। कथावाचक अनुज शास्त्री ने कहा कि माता सती ने अभिमान वश कूंभज ऋषि से श्रीराम की कथा को नहीं सुना और श्रीराम पर संदेह किया। इसके बाद माता सती बिना बुलाए अपने पिता के यज्ञ में गई। भगवान शंकर का और अपना अपमान सहन नहीं कर सकी। योग अग्नि से अपने शरीर को जलाकर भस्म कर दिया, लेकिन माता सती ने दोबारा जन्म लिया। इसके बाद हर-गौरी का विवाह आनंद पूर्वक संपन्न हुआ। ब्रह्मा ने वेदोक्त रीति से विवाह करवाया। विवाह उत्सव का आनंद लेते हुए सभी ने नाच कूद कर अपनी हाजिरी लगाई।

कथा के अंत में भगवान शंकर के विवाह और दिव्य देवताओं और भूत प्रेतों समेत बारात की बहुत सुंदर झांकी का अवलोकन कराया। इस मौके पर श्यामलाल द्विवेदी, रमाकांत मिश्रा, रमेश प्रसाद शुक्ला, संतोष मिश्रा, विकास शुक्ला, शिवचंद तिवारी, चंद्रशेखर तिवारी, राम स्वयंवर मिश्रा, द्वारिका प्रसाद द्विवेदी, रजनीश तिवारी आदि मौजूद रहे।

जल जीवन मिशन योजनाः टोटियों में नहीं आ रहा पानी, जेब भरो अभियान की भेंट चढ़ी योजना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के कई गांवों में जल जीवन मिशन योजना के शुरूवाती दौर में ही भ्रष्टाचार नजर आने लगा है। मानिकपुर ब्लाक के कई गांवों में कार्य पूर्ण होने के बाद भी जल नल तक नहीं पहुंच रहा हैं। कई जगह पर टोटियों की बजाय सीधे टंकी से ही पानी बह रहा है।

सोमवार को मानिकपुर ब्लाक के कई गांवों में जल नल योजना में भ्रष्टाचार दिखाई दिया। कई गांवों में गुणवत्ताहीन निर्माण का खामियाजा ग्रामीण भुगतेंगे। पारदर्शिता के नाम पर टीएल बैठक में केवल बेहतर निर्माण के निर्देश की औपचारिकता अधिकारीगण निभा रहे हैं। निदेर्शों का कोई असर नहीं हो रहा है। जल जीवन मिशन के तहत घरों तक पानी पहुंचने का सपना अधूरा नजर आ रहा है। शुद्ध पेयजल सुलभ कराने को केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी जल जीवन मिशन योजना जिले में सम्बन्धित विभाग (पीएचई) के अफसरों की लापरवाही एवं ठेकेदारों की मनमानी की भेंट चढ़ गई है। इससे यहां के ग्रामीणों को जलापूर्ति नहीं हो पा रही है।

गांवों में जल जीवन मिशन योजना के तहत जिस पानी टंकी का निर्माण हुआ था, वह गुणवत्ता के अनुरूप नहीं है। इसका खामियाजा ब्लाक के गांवों में एक बूंद भी पानी जल जीवन मिशन योजना के नल से नही आ रहा हैं। ग्रामीणों ने बताया कि भ्रष्टाचार के चलते गांव का विकास नहीं हो पा रहा है। सरकार की कोई योजना धरातल में नहीं उतर रही, क्योंकि सभी गांवों में भ्रष्टाचार हो रहा हैं। इसके चलते गांव का विकास नहीं हो पा रहा है।

कानपुर के पार्षदों के चेहरे पर जीत की खुशी के बजाय जेल जाने की चिंता

कानपुर। यहां की पुलिस कमिश्नरेट ने रोक के बाद भी विजय जुलूस निकालने वाले पार्षदों पर कानून का डंडा चलाकर उनकी खुशी और जोश को हवा में उड़ा दिया, जिससे अन्य जीते पार्षद जुलूस निकालना और आतिश बाजी करना भूल गये हैं।

पुलिस ने यहां भाजपा पार्षद राजकिशोर यादव, ओवैसी की पार्टी के एकलौता पार्षद हिस्ट्रीशीटर नौशाद कालिया, बर्रा विश्वबैंक निवासी पार्षद पति अर्पित यादव और काकादेव वार्ड-91 से निर्दलीय पार्षद के खिलाफ के खिलाफ एफआईआर दर्जकर की है जिसके बाद अब उनके चेहरे पर जीत की खुशी नहीं बल्कि जेल भेजे जाने की चिंता है। इन चारो ने जीत के बाद मतगणना स्थल गल्लामंडी से सीधे अपने क्षेत्र में धूमधाम से विजय जुलूस निकाला।मतलब आचार संहिता, धारा-144 की सैकड़ों समर्थकों के साथ ढोल-नगाड़े के साथ धज्जियां उड़ाईं। मामले की जानकारी होने पर बर्रा, नवाबगंज, कर्नलगंज और काकादेव थाने की पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

इनमें से वार्ड-110 से ओवैसी की पार्टी ए आई एम आई एम के इकलौते पार्षद नौशाद कालिया कर्नलगंज थाने का हिस्ट्रीशीटर हैं। रोक के बाद भी अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ अपने वार्ड में विजय जुलूस निकाला था। इसके चलते कर्नलगंज थाने में नौशाद और उनके साथ सैकड़ों समर्थकों के खिलाफ आचार संहिता और धारा-144 का उल्लंघन, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम समेत अन्य गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई है। यह कार्रवाही विजय जुलूस का वीडियो वायरल होने के बाद की गई है। विजय जुलूस में शामिल लोगों की भी वीडियो से पहचान की कोशिश की जा रही है। इससे कि उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जा सके। इसी तरह से नवाबगंज थाने की पुलिस ने नवाबगंज क्षेत्र के वार्ड-43 से भाजपा पार्षद राजकिशोर यादव के खिलाफ भी विजय जुलूस निकालने पर पार्षद राजकिशोर और उनके 40-50 अज्ञात समर्थकों के खिलाफ आचार संहिता और धारा-144 का उल्लंघन के साथ ही लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम का उल्लंघन करने की धारा में रिपोर्ट दर्ज की है।

उच्च शिक्षा से वंचित नहीं रहेंगी पाठा की बेटी , पाठा की होनहार छात्राओं की मदद करेगा अग्रवाल फाउंडेशन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रदेश भौतिक विकास के क्षेत्र में लंबी छलांग लगा रहा है। शिक्षा क्षेत्र भी अछूता नहीं है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की रोशनी अभी वनवासी क्षेत्र में दिवास्वप्न सी है। जनजाति श्रेणी से वंचित कोल परिवार आज भी उच्च शिक्षा से बहुत दूर हैं। इंटर, स्नातक या इससे आगे पहुंचने वाले छात्र-छात्राओं की भागीदारी चिंताजनक है। एक नई पहल के तहत हाईस्कूल, इंटर, स्नातक तक पहुंच बनाने वाली गरीब छात्राओं को खोजा गया है। इस खोज में 24 छात्राओं का चयन हुआ है।

सोमवार को चयनित छात्राओं का रानीपुरभट्ट में तीन दिवसीय प्रशिक्षण हुआ। प्रशिक्षण में आवेदनों के आधार पर संगीत, खेलकूद, चित्रकला, पाककला आदि के क्षेत्र में गरीब बालिकाओं को अच्छी निपुणता प्रकृति से प्राप्त है। गरीबी के कारण इनके पास आगे बढ़ने के अवसरों का सर्वथा अभाव है। 14 को स्नातक, सात को 12वीं, शेष तीन हाईस्कूल की शिक्षा को प्रकाश आश्रय के तहत अग्रवाल फाउंडेशन की सहायता से छात्रवृत्ति देने का निश्चय अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने किया है। सभी 24 छात्राएं आगे की शिक्षा में धनाभाव का संकट नहीं झेलेंगी।

अभियान की सफलता को संस्थान निदेशक राष्ट्रदीप ने गजेंद्रपाल सिंह यादव को दायित्व सौंपा। सूरजदीन तथा वनवासी कल्याण केंद्र के मिश्र-जी का भी आशीष मिल रहा है। अब उच्च शिक्षा को पाठा की बेटी वंचित नहीं रहेगी। अनुपा (नौबस्ता), निर्मला (मनगवां), रचना (सुखरामपुर), रंजना (कोइलिहाई), साधना (जमुनिहाई), पूजा (बंधवा) आदि सहायता प्राप्त करने वाली छात्राओं में प्रमुख हैं। संस्थान संस्थापक गोपाल भाई का मार्गदर्शन इस नई पहल को प्राप्त है।

चौबीस घंटे के बाद संदिग्ध हालात में बम्बा के पानी में तैरता मिला अवधकिशोर रिंकू का शव

जालौन। गोहन थाना की चौकी ईंटों क्षेत्र के ग्राम पिचौरा के पास बम्बी में एक ब्यक्ति का संदिग्ध हालात में शव पानी तैरते हुए मिला है।शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई।मौत का कारण अभी साफ नही हो सका। मृतक की पहचान अवध किशोर उर्फ रिंकू तिवारी निवासी ग्राम पिचौरा के रूप मे हुई। सूचना पाकर तत्काल प्रभाव से चौकी प्रभारी दिलीप कुमार वर्मा व थानाध्यक्ष रबिन्द्र नाथ यादव पुलिस फोर्स के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और घटना के बारे में बारीकी से जांच की।

प्राप्त जानकारी के अनुसार चौकी क्षेत्र के ग्राम पिचौरा निवासी अवधकिशोर उर्फ रिंकू तिवारी उम्र 45 वर्ष पुत्र सुरेन्द्र कुमार उर्फ मुनुआ तिवारी 10 मई को अकबरपुर जिला कानपुर देहात गए हुए थे। और 12 मई को शाम वह वापस ग्राम ईंटों आये। ग्राम ईंटों से वह अपनी ससुराल ग्राम कुरेपुरा कनार चले गए थे। और वहां से वह अपनी लाल कलर की पिलेटना बाईक से समय करीब लगभग 8.30 बजे शाम के समय अपने निज निवास ग्राम पिचौरा के लिए निकले थे। लेकिन वह अपने घर पिचौरा नही पहुंचें।तो मृतक के पिता भाई बच्चों और परिवारीजनों ने खोजबीन शुरू की।

13 मई को सुबह प्रातः समय 10 बजे बम्बी के किनारे बाईक खड़ी मिली। बाईक को मृतक का बेटा घर ले गया।भाई और परिवारीजनों ने मिलकर बम्बे में घुसकर ढूंढना शुरू किया।करीब 2 घण्टे तक पानी में ढूंढ़ा पर कुछ नहीं मिला। फिर उसी बम्बे में शाम के समय करीब लगभग 7 बजे के आसपास बम्बे की पुलिया के नीचे पानी में शव तैरता दिखाई दिया। मृतक का शव मिलने से घर में कोहराम मच गया। मृतक की पत्नी बच्चे पिता भाईयो का रो रो कर बुरा हाल हो गया।मृतक के पिता सुरेन्द्र कुमार ने अपने बेटे की मौत पर हत्या होने का शक जताया है। मृतक के भाई जीतू तिवारी ने भी अपने भाई की मौत पर हत्या होने की बात कही है। और बताया है कि हमने बम्बे में घुसकर खोजबीन की थी।तब कही कुछ भी नहीं मिला था।

अचानक बम्बा में शव कहाँ से आ गया है। मृतक की नाक से खून निकल रहा था।शव फूला भी नहीं था। मुंह बन्द था। कपड़े पहने हुए थे।बाईक बम्बे की पुलिया से करीब 8 से 10 कदम की दूरी पर गांव की ओर खड़ी थी। मृतक का शव चौबीस घंटे के बाद मिला है। मौत का कारण अभी साफ नही हो पाया है। मामला संदिग्ध है। मौके पर पहुंची पुलिस ने पंचनामा भरकर शव को बिच्छेदन गृह भेज दिया। थानाध्यक्ष रबिन्द्रनाथ यादव और चौकी प्रभारी दिलीप कुमार का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण पता चल पायेगा। रिपोर्ट आने के बाद विधिक कार्यवाही की जायेगी।

नगर निकाय चुनाव में निराशाजनक प्रदर्शन से बसपा के पुनरुत्थान की उम्मीदें धराशायी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में नगरपालिका चुनाव के नतीजों ने बहुजन समाज पार्टी के पुनरुत्थान की उम्मीदों को धराशायी कर दिया है। बसपा को शहरी स्थानीय निकाय चुनाव में करारा झटका लगा। वह मेयर की एक भी सीट जीतने में विफल रही। नगर पालिका परिषद (एनपीपी) और नगर पंचायत (एनपी) अध्यक्ष पदों पर भी पार्टी का प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

2017 के निकाय चुनावों में, बसपा ने मेरठ और अलीगढ़ मेयर की सीटों पर जीत हासिल की थी, लेकिन 2023 के चुनाव में दोनों सीटों पर वह तीसरे स्थान पर रही।

कानपुर : आशनाई के विरोध में अधेड़ चाचा की हत्या कर प्रेमिका के साथ फरार हुआ युवक

अधेड़ की हत्या में पुलिस को भतीजे और उसकी प्रेमिका की तलाश

कानपुर। यहां एक और बुजुर्ग फैक्ट्री कर्मी की धारदार हथियार से गोदकर हत्या कर दी गई। आज रविवार सुबह उसकी लाश बरामद होने के बाद पुलिस भतीजे और उसकी कथित प्रेमिका की तलाश में जुटी है। आशंका है कि यही दोनों उसकी हत्या करके फरार हो गए हैं। वह घटना की बीती रात एक लड़की को लेकर फैक्ट्री कर्मी के आवास पर पहुंचा था।

पुलिस का अनुमान है कि यहां पर उसका अपने चाचा से विवाद हुआ ,जिसके बाद दोनों उसकी हत्या करके फरार हो गए । वैसे कानपुर में यह किसी बुजुर्ग की हत्या की घटना पहली नहीं है कानपुर में बीते 5 सालों के अंदर तकरीबन एक दर्जन बुजुर्गों की हत्या की जा चुकी है। यह घटना विधनू थाना क्षेत्र की है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, मूलरूप से हरदोई निवासी सुनील वर्मा (55) पिछले करीब 18 वर्षों से दीनदयालपुरम केडीए कॉलोनी में रहता था। वह दादा नगर स्थित प्लॉस्टिक फैक्टरी में काम करता था। पुलिस ने बताया कि कोरोना से दो वर्ष पहले पत्नी विमला की मौत हो गई थी। इसके बाद से वह अकेले ही रहते थे। इसी दौरान शनिवार शाम बर्रा निवासी भतीजा कृष्णा एक लड़की को लेकर कॉलोनी में गया हुआ था। रात करीब नौ बजे सुनील फैक्टरी से वापस लौटे थे, जिसके बाद कृष्णा लड़की के साथ कॉलोनी के अंदर गया।

पुलिस के अनुसार घटना की जानकारी तब हुई जब आज रविवार सुबह करीब छह बजे बिजली कर्मी मीटर रीडिंग लेने पहुंचा। बिल देने के लिए उसने दरवाजा खोला, तो देखा सामने के कमरे में जमीन पर सुनील का शव खून से लथपथ पड़ा था। वहीं पुलिस महिला की चप्पलें पड़ी होने से आशनाई के विरोध पर हत्या की आशंका जता रही है। फिलहाल घटना के खुलासे के लिए पुलिस की दो टीमें भतीजे कृष्णा की तलाश में दबिशें दे रही है। लेकिन समाचार लिखे जाने तक उनका कोई सुराग नहीं मिल पाया है।

नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने चीन की यात्राएं बढ़ाईं

काठमांडू। नेपाल के कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने चीन की यात्राएं बढ़ा दी हैं। सीपीएन (यूएमएल) और सीपीएन (माओवादी सेंटर) के नेताओं को चीन ने यात्रा के लिए आमंत्रित किया है।

सीपीएन माओवादी केंद्र के नेता 19 मई से चीन के दौरे पर जा रहे हैं। माओवादी नेता और पूर्व स्पीकर अग्नि सपकोटा 20 लोगों की टीम के साथ चीन जा रहे हैं। यूएमएल नेताओं के चीन की यात्रा से लौटने के बाद माओवादी नेता जा रहे हैं। इससे पहले अप्रैल में यूएमएल प्रचार विभाग के उप प्रमुख विष्णु रिजाल सहित एक टीम चीन की यात्रा से लौटी थी। वे कम्युनिस्ट पार्टियों की वर्कशॉप में हिस्सा लेकर लौटे। 2022 में भी यूएमएल और माओवादी नेताओं की एक संयुक्त टीम चीन पहुंची। यूएमएल के उपाध्यक्ष विष्णु पौडेल और माओवादी महासचिव देव गुरुंग की टीम भी चीन का दौरा कर चुकी है।

नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री रायमाझी को कोर्ट में पेश किया गया

काठमांडू। मानव तस्करी के आरोप में गिरफ्तार नेपाल के पूर्व उप प्रधानमंत्री टोप बहादुर रायमाझी को अदालत में पेश किया गया।

रायमाझी को काठमांडू से गिरफ्तार किया गया था।

सीपीएन (यूएमएल) सचिव रायमाझी पर फर्जी भूटानी शरणार्थियों के मामले में ठगी का आरोप है। उनके बेटे संदीप रायमाझी को पुलिस ने दो हफ्ते पहले गिरफ्तार किया था। इस घटना में शामिल पूर्व गृह मंत्री बालकृष्ण खांड को बयान के लिए लोक अभियोजक कार्यालय ले जाया गया है। नेपाली नागरिकों को फर्जी भूटानी शरणार्थी बताकर अमेरिका भेजने वाले गिरोह के नेटवर्क को तोड़ते हुए पुलिस ने हाई प्रोफाइल लोगों को गिरफ्तार किया है। अब तक 13 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

तुर्किए में राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव के लिए मतदान संपन्न

अंकारा। तुर्किए में आए विनाशकारी भूकंप, आर्थिक संकट और लोकतांत्रिक व्यवस्था के विघटन के बीच संसदीय एवं राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए मतदान संपन्न हुआ। तुर्किए के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोगान के लिए पिछले दो दशक के कार्यकाल में सबसे बड़ी चुनौती माना जा रहा है। चुनाव परिणाम तय करेंगे कि एर्दोगान अगले पांच साल के लिए पद पर बने रहेंगे या नहीं। ऐसा पिछले 20 वर्षों में पहली बार होगा जब एर्दोगान जनमत सर्वेक्षणों में प्रतिद्वंद्वियों से पिछड़ रहे हैं।

जनमत सर्वेक्षणों में मध्यमार्गी-वामपंथी, धर्मनिरपेक्ष समर्थक रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी के नेता और संयुक्त विपक्षी गठबंधन के संयुक्त उम्मीदवार 74 वर्षीय कमाल किलिकडारोग्लू को बढ़त मिल सकती है। अगर किसी उम्मीदवार को 50 प्रतिशत से अधिक वोट नहीं मिलते हैं तो पहले दौर के शीर्ष दो उम्मीदवारों के बीच 28 मई को निर्णायक मुकाबला होगा। इस चुनाव में विदेशों में बसे 34 लाख लोगों समेत 6.4 करोड़ से अधिक मतदाता मतदान के योग्य हैं।

किलिकडारोग्लू के छह दलीय राष्ट्रीय गठबंधन ने कार्यकारी राष्ट्रपति प्रणाली को समाप्त करने और देश को एक संसदीय लोकतंत्र में वापस लाने का संकल्प लिया है। उन्होंने न्यायपालिका और केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता स्थापित करने, संतुलन कायम करने और एर्दोआन के शासन के तहत मुक्त भाषण और असहमति की आवाज पर लगे प्रतिबंधों को उलटने का भी वादा किया है।

इमरान का आरोप, देशद्रोह में फंसा कर 10 साल जेल में रखना चाहती पाकिस्तानी सेना

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने आरोप लगाया है कि पाकिस्तानी सेना उन्हें देशद्रोह के आरोप में फंसाकर अगले दस साल तक जेल में रखना चाहती है। इमरान ने ट्वीट कर इसे लंदन योजना यानी पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की योजना करार दिया।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के प्रमुख इमरान खान ने अपने लाहौर स्थित आवास पर पार्टी नेताओं के साथ बैठक कर आगे की रणनीति बनाई। बैठक के बाद ट्वीट कर उन्होंने पाकिस्तानी सेना पर गंभीर आरोप लगाए। इमरान ने कहा कि यह सब उस लंदन योजना के तहत हो रहा है, जो पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने लंदन में बैठकर बनाई है। इमरान ने आरोप लगाया कि उनकी बेगम बुशरा को जेल भेजने की योजना है, जिससे उन्हें अपमानित किया जा सके। साथ ही अगले 10 वर्षों के लिए उन्हें जेल में रखने के लिए राजद्रोह

कानून का सहारा लिया जा रहा है। इमरान खान ने कहा कि सार्वजनिक प्रतिक्रिया से बचने के लिए सेना ने दो काम किये। पहला काम पीटीआई कार्यकर्ताओं के साथ आम लोगों में आतंक फैलाया और दूसरा काम मीडिया पर पूरी तरह नियंत्रण स्थापित कर लिया गया। उन्होंने सेना पर लोगों के घरों को तोड़ने और महिलाओं के साथ मारपीट करने के भी आरोप लगाए। आरोप लगाया कि लोगों में जानबूझकर डर पैदा करने की कोशिश की जा रही है, जिससे जब सेना के लोग उन्हें गिरफ्तार करने आएं, तो लोग बाहर नहीं निकलें। आशंका जताई कि सेना के लोग फिर से इंटरनेट सेवाओं को निलंबित कर देंगे और सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा देंगे।

थाईलैंड के आम चुनाव में सैन्य शासन विरोधी दो राजनीतिक दल बड़ी ताकत के रूप में उभरे

बैंकाक। थाईलैंड के आम चुनाव में सैन्य शासन विरोधी विपक्षी दल बड़ी ताकत के रूप में उभर रहे हैं। इससे यह उम्मीद जगी है कि एक दशक से सत्ता पर काबिज सेना समर्थित सरकार की विदाई हो सकती है।

थाइलैंड में हुए आम चुनाव के बाद 99 प्रतिशत से अधिक वोटों की गिनती हो चुकी है। अब तक की मतगणना में विपक्षी पार्टियों, मूव फॉरवर्ड पार्टी और फेयु थाई पार्टी को सर्वाधिक सीटें मिली हैं। चुनाव से पहले विपक्षी पार्टियों ने मतदाताओं से सैन्य शासन से मुक्ति दिलाने का वादा किया था। इस चुनाव में राजशाही अपमान कानून में सुधार और साफ-सफाई जैसे मुद्दे भी अहम रहे। संपूर्ण चुनाव परिणाम जारी होने में कुछ समय लग सकता है। मतगणना के शुरुआती रुझानों से लग रहा है कि मूव फॉरवर्ड पार्टी को 400 में से 113 और फेयु थाई पार्टी को करीब 112 सीटों पर जीत मिल सकती है। 100 सीटों को पार्टियों को मिले वोट प्रतिशत के आधार पर वितरित

किया जाएगा। फेयु थाई पार्टी देश की सबसे पुरानी पार्टियों में से एक है। इसके संस्थापक अरबपति उद्योगपति थाकसिन शिनेवात्रा हैं। थाकसिन शिनेवात्रा एक बार प्रधानमंत्री रह चुके हैं। उनकी रिश्तेदार यिंगलुक शिनेवात्रा भी देश की बागडोर संभाल चुकी हैं। दोनों ही बार सेना ने दोनों को सत्ता से बेदखल किया है। अब थाकसिन की बेटी पेतोंगार्न शिनेवात्रा प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में शामिल हैं। मूव फॉरवर्ड पार्टी के नेता लिमजारोनरात भी प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में हैं। दोनों पार्टियों ने गठबंधन से इनकार नहीं किया है।

बुरकिना फासो में चरपंथियों ने की 41 लोगों की हत्या

औगाडोगू। बुर्किना फासो के एक गांव में संदिग्ध इस्लामी चरमपंथियों के हमले में 41 लोगों की मौत हो गई। प्रांतीय गवर्नर कार्यालय ने यह जानकारी दी। एक रिपोर्ट के अनुसार में मौहौन प्रांत के यूलौ गांव में हुए हमले में 41 लोग मारे गए।

प्रांतीय गवर्नर बाबो पियरे बासिंगा ने हमले को कायरतापूर्ण व बर्बर करार दिया। उन्होंने कहा कि हमला शाम करीब पांच बजे हुआ, जब लोग मौहौन नदी के किनारे अपने खेतों में काम कर रहे थे। उन्होंने बताया कि चरमपंथियों का मुकाबला करने के लिए सुरक्षा कार्रवाई की जा रही है। इसके लिए उन्होंने लोगों से सतर्कता बरतने और सुरक्षा बलों के साथ सहयोग करने का आग्रह किया।

स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, ये

हमलावर मोटरसाइकिल पर आए थे और उनके पास खतरनाक हथियार भी थे। हमलावारों ने अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी थी। बुर्किना फासो में इससे पहले 28 अप्रैल को भी एक सैन्य टुकड़ी पर हमला हुआ था। इसमें 33 सैनिकों ने जान गवां दी थी, जबकि 12 घायल हुए थे। बता दें, बुर्किना फासो उन पश्चिम अफ्रीकी देशों में से एक है जहां हिंसक इस्लामी विद्रोह चल रहा है। पिछले आठ सालों में आतंकवाद की घटनाएं बढ़ी हैं और हजारों लोग मारे गए हैं। हिंसा की इस स्थिति में करीब दो मिलियन से अधिक नागरिक विस्थापित हुए हैं।दरअसल, देश में पिछले साल सेना ने दो बार तख्तापलट किया था।

अब सेना की तरफ से धमकी दी जा रही है कि देश का नियंत्रण अपने पास ले लिया जाएगा। 2012 से इस क्षेत्र में लगभग हिंसा की घटनाएं देखी जा रही हैं। हिंसा बाद में पड़ोसी बुर्किना फासो और नाइजर में फैल गई और पूरे इलाके को अस्थिर कर दिया।

फिर से भारत विरोधी कार्ड खेलने की तैयारी में नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री ओली

काठमांडू। ऐसा लगता है कि कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल) के पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने भारत विरोधी कार्ड फिर से खेलने का फैसला किया है। ओली ने अपनी पार्टी की सेंट्रल कमेटी के लिए एक दस्तावेज तैयार किया है। उसमें उन्होंने कहा है- 'नेपाल की आंतरिक राजनीति में विदेशी ताकतों के हस्तक्षेप संबंधी चिंताएं काफी बढ़ गई हैं। गठबंधन बनाने, देश के संवैधानिक संस्थाओं के लिए चुनाव और यहां तक कि कानून का प्रारूप तैयार करने के दौरान भी गैर-जरूरी और अनुचित विदेशी हस्तक्षेप महसूस किया जा रहा है।'

विश्लेषकों ने ध्यान दिलाया है कि ओली ने 2017 के आम चुनाव में भारत विरोधी कार्ड खेला था। 2015 में नेपाल का नया संविधान लागू होने के बाद देश में यह पहला आम चुनाव था। तब ओली की पार्टी प्रतिनिधि सभा (नेपाली संसद के निचले सदन) में सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। पिछले साल हुए आम चुनाव में उनकी पार्टी दूसरे नंबर पर रही और फिलहाल विपक्ष में है। अब तैयार दस्तावेज में ओली ने आरोप लगाया है कि वर्तमान सत्ताधारी गठबंधन संतुलित विदेश नीति से भटक गया है। उन्होंने सत्ताधारी गठबंधन पर देश को एक विदेशी शक्ति के गोद में बैठा दिया है। हालांकि उन्होंने विदेशी शक्ति का नाम नहीं लिया है, लेकिन विश्लेषकों में आम राय है कि उनका इशारा भारत की तरफ है। एक दूसरे संदर्भ में उन्होंने भारत का नाम जरूर लिया है। उन्होंने कहा है- 'भारत के साथ सीमा विवाद हल करने की वर्तमान सरकार ने कोई कोशिश नहीं की है, जबकि बहुत सी उन परियोजनाओं पर काम ठहरा हुआ है, जिनके लिए नेपाल और चीन के बीच करार हुआ था।'

जर्मनी में बोले जेलेंस्की, जवाबी हमले में रूसी क्षेत्र पर हमला नहीं करेगा यूक्रेन

बर्लिन। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि उनका देश रूस के कब्जे वाले यूक्रेनी क्षेत्रों को आजाद करवाने के लिए जवाबी हमले की तैयारी कर रहा है, लेकिन इसका लक्ष्य रूसी क्षेत्रों को निशाना बनाना नहीं है।

यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की बर्लिन में जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन का लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त अपनी सीमाओं के भीतर के क्षेत्रों को मुक्त कराना है। वहीं, शोल्ज ने जेलेंस्की से कहा कि जर्मनी जब तक आवश्यक हो यूक्रेन का समर्थन करेगा।

इससे पहले दिन में जर्मनी के चांसलर ने जेलेंस्की का बर्लिन पहुंचने पर स्वागत किया। जेलेंस्की यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद पहली बार जर्मनी

की यात्रा पर आए हैं। इस यात्रा के दौरान जेलेंस्की रूसी आक्रमण से अपने देश की रक्षा में मदद करने और हथियार भेजने तथा एक साल से अधिक वक्त से चल रहे विनाशकारी युद्ध से तबाह हुए ढांचों को फिर से बनाने को लेकर जर्मनी के नेताओं से बातचीत करेंगे।

जेलेंस्की लुफ्तवाफे विमान से इटली की राजधानी रोम से जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंचे। रोम में जेलेंस्की ने पोप फ्रांसिस और इटली के प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी से मुलाकात की थी।

जेलेंस्की के बर्लिन पहुंचने की पूर्व संध्या पर जर्मनी की सरकार ने यूक्रेन के लिए तीन अरब डॉलर से अधिक की सैन्य सहायता देने की घोषणा की, जिसमें टैंक, विमान-रोधी प्रणालियां और गोला-बारुद शामिल हैं।जेलेंस्की ने अपनी यात्रा की प्राथमिकताओं का जिक्र करते हुए ट्वीट किया, बर्लिन में हूं। हथियार, शक्तिशाली पैकेज, हवाई रक्षा, पुनर्निर्माण, यूरोपीय संघ, नाटो और सुरक्षा इनमें प्रमुख हैं।

जर्मनी ने शुरुआत में यूक्रेन को घातक हथियार उपलब्ध कराने में आनाकानी की थी, लेकिन अब वह यूक्रेन को हथियारों की सबसे ज्यादा आपूर्ति करने वाले देशों में से एक है। चांसलर ओलाफ शोल्ज और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात के बाद जेलेंस्की के जर्मनी के पश्चिमी शहर आचेन जाने की संभावना है, जहां उन्हें अंतरराष्ट्रीय शारलेमेन पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

रूस-यूक्रेन के बीच शांति कराने की जिम्मेदारी इस अधिकारी पर

मास्को। रूस और यूक्रेन के बीच शांति समझौते के लिए चीन ने कोशिशें तेज कर दी हैं। चीन ने इसकी जिम्मेदारी एक शीर्ष अधिकारी को दी है। ये अधिकारी हैं ली हुई। ली हुई यूक्रेन में शांति के लिए यूरोप का दौरा करेंगे। ली हुई के दौरे की वजह है कि रूस यूक्रेन के बीच शांति की जिम्मेदारी चीन ने ली

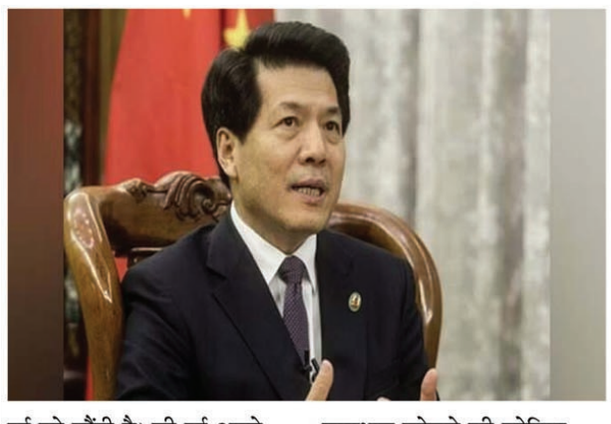

हुई को सौंपी है। ली हुई अपने दौरे के तहत पौलैंड, फ्रांस, जर्मनी का दौरा करेंगे और विभिन्न पक्षों को यूक्रेन संकट का समाधान खोजने की कोशिश करेंगे।

चीन ने की थी रूस-यूक्रेन के बीच शांति की कोशिश

बता दें कि चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने बीते महीने ही यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से मुलाकात की थी। इस मुलाकात में भी रूस यूक्रेन के बीच शांति को लेकर चर्चा हुई थी। रूस यूक्रेन युद्ध को शुरू हुए एक साल से ज्यादा का समय बीत चुका है। बीते दिनों चीन ने दोनों देशों के बीच शांति कराने की पहल की थी। जिस पर अब चीन ने अमल शुरू कर दिया है। हालांकि चीन ने अभी तक यूक्रेन में रूस के अतिक्रमण की आलोचना नहीं की है।

ऑस्ट्रेलिया में हो रही चीनी छात्रों की वर्चुअल किडनैपिंग, 17-23 साल के बच्चों को बनाया जा रहा निशाना

मास्को। ऑस्ट्रेलिया में रह रहे चीनी छात्रों के दोस्तों और रिश्तेदारों से पैसे ऐंठने के लिए वर्चुअल अपहरण किए जा रहे हैं। पिछले एक महीने में इस तरह के चार मामले सामने आए हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार ठगों ने खुद को चीनी अधिकारी बताकर इन छात्रों को डराया, उन्हें जबरन अपने ही अपहरण का नाटक करने पर मजबूर किया और फिर फिरौती में लाखों ऑस्ट्रेलियाई डॉलर ले उड़े। इन छात्रों की उम्र 17 से 23 के बीच बताई जा रही है।

रिपोर्ट के अनुसार, अपराधी अभी तक छात्रों से सात लाख डॉलर यानी 6 करोड़ से अधिक रुपये वसूल चुके हैं। बताया जा रहा है कि छात्रों को तब तक धमकी दी जाती है, जबतक वे डेढ़ लाख से लेकर ढाई लाख डॉलर तक इन अपराधियों को न दे दें।

चीनी दूतावास होने का

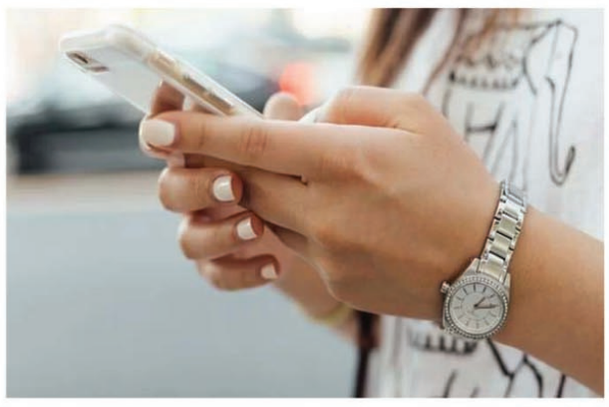

देते हैं हवाला

बता दें, अपराधी अक्सर फोन कर चीनी दूतावास या पुलिस से होने का दावा करते हैं। वे मैंडरिन में बात करते हैं और अपने शिकार को शुरू में बताते हैं कि उस पर चीन में किसी जुर्म का आरोप है या उन्हें यह बताते कि उनकी पहचान चोरी कर ली गई है। उसके बाद धमकी देते कि अगर उन्होंने कुछ पैसे नहीं दिए तो उन्हें वापस चीन भेज दिया जाएगा। बदमाश इसके बाद भी अपने शिकार को तब तक धमकाते रहते जब तक वह ऑफशोर बैंक खातों में एक मोटी रकम नहीं डाल देते।

आंखों पर पट्टी बांधकर बनवाते हैं वीडियो

कुछ मामलों में शिकार हुए छात्रों को कहा जाता कि वह अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से कोई संपर्क ना रखें फिर उन्हें कहा जाता कि वह खुद को बंधक दिखाते हुए अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर अपना वीडियो बनाएं। इसके बाद इस तरह के वीडियो का इस्तेमाल फिरौती की रकम मांगने में करते।

ऐसे करते हैं फिरौती

हाल ही में, एक व्यक्ति ने एक 17 वर्षीय लड़के को फोन करके अपने आपको डाक सेवा कर्मचारी बताते हुए कहा कि उसके नाम से एक पैकेज मिला है, जिसमें वर्जित सामान था। इसे जांच के लिए चीन की पुलिस को भेजा गया था। उसे अपनी बेगुनाही साबित करने के लिए 20,000 डॉलर का भुगतान करना होगा। बदमाश ने बच्चे से कहा था कि अगर अपने परिवार से रुपये लेने हैं, तो वह अपना अपहरण कर ले।

पीड़ितों को सलाह- ऐसे फोन न उठाएं

डिटेक्टिव सुपरिटेंडेंट जो दुएही ने कहा कि यह शर्मनाक है कि अपराधी अध्ययन करने के लिए ऑस्ट्रेलिया आए छात्रों को निशाना बना रहे है। जासूस ने पीड़ितों से आगे आने का भी आग्रह किया। उन्होंने सलाह दी कि जिस किसी को भी इस तरह का फोन आए वह फोन काट दें और अधिकारियों को घोटाले की सूचना दें।

शेयर बाजार से अडाणी ग्रुप को करारा झटका, 10 में 9 शेयर टूटे

नई दिल्ली। अडाणी ग्रुप की कंपनियों के लिए कारोबारी सप्ताह का पहला दिन काफी बुरा रहा। आज के कारोबार में एसीसी को छोड़ कर ग्रुप की शेष सभी 9 कंपनियों के शेयर लाल निशान में कारोबार करते रहे। इनमें से अडाणी ट्रांसमिशन और अडाणी टोटल गैस के शेयर 5 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज लोअर सर्किट के स्तर पर पहुंच गए। ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडाणी इंटरप्राइजेज का शेयर आज 2.48 प्रतिशत की गिरावट के साथ निफ्टी का टॉप लूजर शेयर बना।

अडाणी ग्रुप की दो कंपनियों अडाणी इंटरप्राइजेज और अडाणी ट्रांसमिशन के बोर्ड ने शनिवार को ही क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट (क्यूआईपी) के जरिए कुल 21 हजार करोड़ रुपये जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। इसके तहत अडाणी इंटरप्राइजेज के लिए 12,500 करोड़ रुपये और अडाणी ट्रांसमिशन के लिए 8,500 करोड़ रुपये जुटाने की मंजूरी दी गई थी। 24 मई को अडाणी ग्रीन एनर्जी का बोर्ड भी क्यूआईपी के जरिए फंड जुटाने के प्रस्ताव पर फैसला लेने वाला है। बोर्ड की मंजूरी के बाद कंपनियों को इस प्रस्ताव पर शेयर होल्डर्स से भी मंजूरी लेनी होगी, लेकिन शेयर होल्डर से मंजूरी लेने के पहले ही आज जिस तरह अडाणी ग्रुप की 9 कंपनियों के शेयरों में गिरावट का रुख बना है, उसके आधार पर इसे निवेशकों का निगेटिव रिस्पॉन्स माना जा रहा है।

आज के कारोबार में अडाणी ग्रुप की फ्लैगशिप कंपनी अडाणी इंटरप्राइजेज के शेयर 2.48 प्रतिशत की गिरावट के साथ 1915.75 रुपये के स्तर पर बंद हुए। इसी तरह अडाणी ग्रीन एनर्जी के शेयर 3.05 प्रतिशत की गिरावट के साथ 868.60 रुपये के स्तर पर, अडाणी पावर के शेयर 2.20 प्रतिशत फिसल कर 235.80 रुपये के स्तर पर, अडाणी विल्मर के शेयर 1.44 प्रतिशत टूट कर 386.75 रुपये के स्तर पर और अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनामिक जोन के शेयर 0.83 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 694.10 रुपये के स्तर पर बंद हुए।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।